विषयानुक्रमणिका

दो शब्द

श्री पन्नवणा सूत्र के थोकड़ों का प्रथम भाग प्रकाशित हुए एक वर्ष से अधिक समय हो चुका है। प्रथम भाग में पहले पद से दसवें पद तक के थोकड़े दिये गये हैं। आगे ग्यारवें पद से बीसवें पद तक दूसरे भाग में और इक्कीसवें पद से छत्तीसवें पद तक तीसरे भाग में देना ऐसा निश्चय करके दूसरा और तीसरा भाग दोनों भाग एक साथ दो प्रेसों में छपने को दे दिये गये किन्तु प्रेस की असुविधा के कारण आशातीत विलम्ब होगया जिसमें भी दूसरा भाग तो अभी प्रेस में अधूरा ही पड़ा हुआ है। इसके बीच कई सज्जनों ने दूसरा भाग और तीसरा भाग मंगाने के लिए हमारे पास पत्र भेजे किन्तु पुस्तक छप कर तैयार न होने से हम उन्हें यथा समय पुस्तकें न भेज सके एतदर्थ हम उनसे क्षमा चाहते हैं।

यह तीसरा भाग पाठकों के करकमलों में पहुँच रहा है, आशा है जैन समाज इन थोकड़ों से लाभ उठाएगी।

श्री पन्नवणा सूत्र का प्रथम भाग छप जाने पर कई समाचारपत्रों ने इसकी समालोचना की थी तथा कई महानुभावों ने हमारे पास सम्मतियाँ भेजी थी। उनमें कई महानुभावों ने यह लिखा था कि ये थोकड़े मारवाड़ी भाषा में न होकर सरल हिन्दी भाषा में होते तो सब प्रान्तों में इनका समान रूप से लाभ उठाया जा सकता था।

हमने इन सब बन्धुओं की सम्मतियों का सम्मान पूर्वक आदर किया किन्तु चूं कि श्री पन्नवणा सूत्र के थोकड़ों की प्रेस कापियाँ तैयार कर प्रेस में छपने को दी जा चुकी थी इसलिए हम इनकी भाषा बदल नहीं सके। अब आगे श्री भगवती सूत्र के थोकड़े तैयार किये जा रहे हैं वे सरल हिन्दी भाषा में तैयार किये जा रहे हैं और उसी भाषा में छपेंगे।

इन थोकड़ों के संकलन और संशोधन में हमारे यहाँ विराजित शास्त्र मर्मज्ञ पण्डित रत्न मुनिश्री १००८ श्री पन्नालालजी म० सा० का हमें अमूल्य सहयोग एवं सहायता मिली है। अतएव वे धन्यवाद पात्र

कि पण्डितरत्न मुनि श्री की कृपा का ही यह फल है कि हम इन थोकड़ों को इस रूप में रखने में समर्थ हो सके हैं। पण्डित मुनिश्री ने इन थोकड़ों को संशोधित करवाने में जो परिश्रम उठाया है उसके लिए हम मुनिश्री के अत्यन्त आभारी हैं। इसी प्रकार श्रावकवर्य श्रीमान् हीराचन्दजी सा० मुनीम ने भी इन थोकड़ों के संकलन और संशोधन में हमें काफी सहयोग दिया है इसके लिये हम उनका भी आभार मानते हैं।

चिरंजीव जैठमल सेठिया ने बड़ी लगन, रुचि और परिश्रम के साथ इन थोकड़ों का संग्रह किया है। आशा है धार्मिक ज्ञान के प्रति, उनकी जो लगन और रुचि है वह उत्तरोत्तर वृद्धिगत होती रहे जिससे समाज को ज्ञान का अधिकाधिक लाभ मिलता रहे।

प्रूफ संशोधन आदि की पूरी सावधानी रखते हुए भी दृष्टिदोष से कुछ अशुद्धियाँ रह गई हैं जिसके लिए इसमें शुद्धिपत्र दे दिया गया है। कई जगह रेफ, और मात्राएं तथा क. ख. म च ट. ख च ग आदि अक्षर नहीं उठे हैं अथवा छपते हुए जो अक्षर टूट गये हैं वे शुद्धिपत्र में नहीं लिखे गये हैं, पाठक स्वयं शुद्ध कर लेने की कृपा करें। इनके अतिरिक्त और कोई अशुद्धि नजर आवे तो पाठक हमें सूचित करने की कृपा करें ताकि आगामी आवृत्ति में उचित संशोधन कर दिया जाय।

निवेदक—
भैरोदान सेठिया

सम्मति

हमारे अहोभाग्य से शास्त्र मर्मज्ञ पण्डित मुनि श्री पन्नालालजी म० सा० का विराजना हमारे यहाँ बीकानेर में हुआ। आपका शास्त्रीय ज्ञान गहरा है। साथ ही साथ आपको पुरानी धारणाओं का और थोकड़ों का भी गहरा ज्ञान है। साधुवर्ग और श्रावक वर्ग के प्रति आपकी सदा यह हार्दिक इच्छा और अन्तःप्रेरणा रही है कि वह इन थोकड़ों को सीखे। महाराजश्री की इस इच्छा को तथा धर्मनिष्ठ सेठ श्री भैरोदानजी सा० सेठिया की धर्ममयी भावना को मूर्तरूप देने के लिए श्रीमान् जेठमलजी सा० सेठिया ने प्रयोग करना प्रारम्भ किया। लगभग चार वर्ष तक भारी लगन के साथ अथाह परिश्रम करके आपने श्री पन्नवणा सूत्र के ३६ ही पदों के थोकड़े लिख कर लिपिबद्ध कर लिए। उन लिखी हुई कापियों को श्रीमान् जेठमलजी सा० ने मुझे सुनाया। जहाँ जहाँ शंका पैदा हुई वहाँ वहाँ अनेक प्राचीन प्रतियों का अवलोकन कर तथा टीका आदि को देख कर उन शंकाओं का समाधान किया। कई एक जगह फुटनोट और टिप्पणियाँ देकर इनका खुलासा करने का पूर्ण प्रयत्न किया। इस प्रकार श्रीमान् जेठमलजी सा० के योग से मुझे कितनी ही नवीन बातों की जानकारी हुई और नवीन लाभ भी प्राप्त हुआ। इसके लिए मैं उनका आभारी हूँ।

श्री जेठमलजी सा० का यह प्रयास अत्यन्त प्रशंसनीय है। मैं आशा करता हूँ कि वे भविष्य में भी इसी प्रकार का प्रयोग करते हुए थोकड़ों की प्रणाली को आगे की पीढ़ी के लिए चालू रखेंगे। यही शुभ कामना करता हूँ।

हीरालाल मुकीम

बीकानेर

जयपुर वालों की ओर से भेंट ॥

श्री पन्नवणाजी सूत्र के थोकड़ों

का

तीसरा भाग

सूत्र श्री पन्नवणाजी र पद २१ वें मे शरीर रो थोकड़ो चाल सो कहे छे—

विहि संठाण पमाणे, पोग्गल चिणणा सरीर संजोगो ।
दव्वपएसप्प बहु, सरीरोगाहणप्पबहु ॥ १ ॥

१ नाम द्वार, २ अर्थ द्वार, ३ स्वामी द्वार, ४ संठाण द्वार, ५ अवगाहना द्वार ६ शरीर संजोग द्वार ७ द्रव्यार्थी री अल्पाबोध द्वार, ८ प्रदेशार्थी री अल्पाबोध द्वार, ९ द्रव्यार्थ प्रदेशार्थी री भेली अल्पाबोध द्वार, १० सुक्ष्मबादर द्वार, ११ अवगाहना री अल्पाबोध द्वार, १२ प्रयोजन द्वार, १३ विषय द्वार, १४ स्थिति द्वार, १५ आंतरा द्वार।

१—नाम द्वार—अहो भगवान ! शरीर कितना ? हे गौतम ! शरीर पांच हैं—औदारिक, वैक्रिय, आहारक तैजस, कार्मण ।

२—अर्थ द्वार—औदारिक रा अर्थ—उदार नाम प्रधान, आठ कर्म खपा कर मोक्ष जाय, यो शरीर तीर्थङ्कर गणधर आदि र होय, आचार्य, गणधर महाराज रा शरीर में ऊंचा ज्ञान रा पुद्गल लागरे है इण शरीर ने औदारिक कह्या । वैक्रिय रो अर्थ—नाना प्रकार रा रूप करे । आहारक रा अर्थ संशय निवारण करे । तैजस रो अर्थ

आहार पचावे। कामरा रा अप ठामोठाम (यथास्थान) पहुचाव।

३—स्वामी द्वार—औदारिक रा स्वामी मनुष्य अार तिर्यञ्च। वैक्रिय रा स्वामी नारकी, देवता। आहारक रा स्वामी चाउद पूर्व धारी मुनिराज। तैजस कामरा रा स्वामी चारों ही गति रा जीव।

४—संठाण द्वार—औदारिक, तैजस, कामरा में संठाण पावे ६ ही, वैक्रिय में संठाण पावे २ समचारस अार हुण्डक। आहारक में संठाण पावे १ समचौरस।

५—अवगाहना द्वार—औदारिक री अवगाहना जघन्य अंगुल रे असंख्यातवें भाग, उत्कृष्ट १,००० एक हजार योजन भाभेरा। कामरा री अपेक्षा। वैक्रिय री अवगाहना जघन्य अंगुल रे असंख्यातवें भाग, उत्कृष्ट एक लाख योजन भाभेरी। आहारक रा अवगाहना जघन्य मुंड हाथ री, उत्कृष्ट एक हाथ री। तैजस कामरा री अवगाहना जघन्य अंगुल रे असंख्यातवें भाग उत्कृष्ट लोकान्त तक (१४ राजु परिमाण)।

६—शरीर संयोग द्वार—औदारिक में वैक्रिय री भजना आहारक री भजना, तैजस कामरा री नियमा। वैक्रिय में औदारिक री भजना, आहारक नत्थि तैजस कामरा री नियमा। आहारक में औदारिक तैजस कामरा री नियमा, वैक्रिय नत्थि। तैजस में कामरा री नियमा, औदारिक, वैक्रिय, आहारक री भजना। कार्मण में तैजस री नियमा, औदारिक, वैक्रिय आहारक री भजना।

७—द्रव्यार्थ द्वार—सब सूं थोड़ा आहारक रा द्रव्यार्था, सें

थकी वैक्रिय रा दव्वठ्या असंख्यात गुणा, ते थकी औदारिक रा दव्वठ्या असंख्यातगुणा, ते थकी तैजस कार्मण रा दव्वठ्या अनन्त गुणा माहोमाहीं (आपस में) तुल्ला ।

८—पएसठ्या द्वार—सब सु थोड़ा आहारक रा पएसठ्या, ते थकी वैक्रिय रा पएसठ्या असंख्यात गुणा, ते थकी औदारिक रा पएसठ्या असंख्यात गुणा, ते थकी तैजस रा पएसठ्या अनन्त गुणा, ते थकी कार्मण रा पएसठ्या अनन्त गुणा ।

९—दव्वठ्या पएसठ्यां री भेली अल्पाबोध द्वार—सब सुं थोड़ा आहारक रा दव्वठ्या, ते थकी वैक्रिय रा दव्वठ्या असंख्यात गुणा, ते थकी औदारिक रा दव्वठ्या असंख्यात गुणा, ते थकी आहारक रा पएसठ्या अनन्त गुणा, ते थकी वैक्रिय रा पएसठ्या असंख्यात गुणा, ते थकी औदारिक रा पएसठ्या असंख्यात गुणा, ते थकी तैजस कार्मण रा दव्वठ्या अनन्त गुणा आपस में तुल्ला, ते थकी तैजस रा पएसठ्या अनन्त गुणा ते थकी कार्मण रा पएसठ्या अनन्त गुणा ।

१०—सूक्ष्म बादर द्वार—सब सुं सूक्ष्म पुद्गल कार्मण रा, ते थकी तैजस रा बादर ते थकी आहारक रा बादर, ते थकी वैक्रिय रा बादर, ते थकी औदारिक रा बादर । सब सुं बादर पुद्गल औदारिक रा, ते थकी वैक्रिय रा सूक्ष्म, ते थकी आहारक रा सूक्ष्म, ते थकी तैजस रा सूक्ष्म, ते थकी कार्मण रा सूक्ष्म ।

११—अवगाहना री अल्पाबोध द्वार—सब सुं थोड़ी औदारिक शरीर री जघन्य अवगाहना, ते थकी तैजस कार्मण री जघन्य अवगा

हना विसेसाहिया, ते थकी वैक्रिय री जघन्य अवगाहना असंख्यात गुणी, ते थकी आहारक री जघन्य अवगाहना असंख्यात गुणी, ते थकी आहारक री उत्कृष्ट अवगाहना विसेसाहिया, ते थकी औदारिक री उत्कृष्ट अवगाहना संख्यात गुणी, ते थकी वैक्रिय री उत्कृष्ट अवगाहना संख्यातगुणी, ते थकी तैजस कार्मण री उत्कृष्ट अवगाहना असंख्यात गुणी आपस में तुल्य।

१२—प्रयोजन द्वार—औदारिक रा प्रयोजन— उदार नाम प्रधान, आठ कर्म खपा कर मोक्ष जावे तीर्थंकर गणधर महाराज रा शरीर में ऊंची सत्ता रा पुद्गल लागवा सुं इणने औदारिक शरीर कयो। वैक्रिय रो प्रयोजन — मनगमता मन अणगमता नाना प्रकार रा रूप करे। आहारक रा प्रयोजन — कोई मुनिराज ने १४ पूर्व विचारण कोई संशय पैदा हुवे या कोई बारीक अर्थ का मुनिराज ने प्रश्न पूछे उण रा जवाब १४ पूर्वों में नहीं होवे अथवा मुनिराज रा उपयोग नहीं लागे तद यह मुनिराज एक हाथ रो पुतलो निकाल कर केवली भगवान रे पास शंका निवारण करवाने या प्रश्न रो जवाब पूछवा ने भेजे, उठ सुं केवली भगवान् विहार कर गया होवे तो उण एक हाथ रा पुतला में सुं मुण्ड हाथ रा पुतला निकल कर जठे केवली भगवान विराजमान होवे उठे भेजे, केवली भगवान सुं प्रश्न रो उत्तर लाय, उत्तर लाय कर मुण्ड हाथ रा पुतलो एक हाथ रा पुतला में प्रवेश करे फिर एक हाथ रो पुतलो मुनिराज रा शरीर में प्रवेश करे, फिर मुनिराज प्रश्न रा उत्तर देवे। तैजस रो प्रयोजन — आहार पचावे। कार्मण

रो प्रयोजन – आठ कर्मों रो भण्डारी चार गति में ले जावे तथा आहार ने ठामोठाम (यथास्थान) पहुंचावे ।

१३–विषय द्वार–औदारिक रो विषय–रुचक द्वीप तक, वैक्रिय रो विषय असंख्यात द्वीप समुद्र तक, आहारक रो विषय अढ़ाई द्वीप तक, तैजस कार्मणरो विषय १४ राजु प्रमाण केवली समुद्घात आसरी

१४ – स्थिति द्वार– औदारिक री स्थिति जघन्य अन्तर्मुहूर्त री, उत्कृष्ट ३ पल्योपम री । वैक्रिय री स्थिति जघन्य अन्तर्मुहूर्त री, उत्कृष्ट ३३ सागरोपम री, आहारक री स्थिति जघन्य उत्कृष्ट अन्तर्मुहूर्त री । तैजस कार्मण में भांगा पावे २ अणाइया अपज्ज वसिया (अनादि अनन्त),अणाइया सपज्जवसिया (अनादि सान्त) ।

१५– आन्तरा द्वार– औदारिक रो आन्तरो जघन्य अन्तर्मुहूर्त रो, उत्कृष्ट ३३ सागर रो । वैक्रिय रो आन्तरो जघन्य अन्तर्मुहूर्त रो, उत्कृष्ट अनन्तो काल रो । आहारक रो आन्तरो जघन्य अन्त मुहूर्त रो, उत्कृष्ट देश ऊणो अर्द्ध पुद्गल परावर्तन रो । तैजस कार्मण रो आन्तरो नथि ।

सेवं भंते ! सेवं भंते !!

सूत्र श्री पन्नवणाजी रे पद ३१ वें में मरणान्तिक समुद्घात रो थोकड़ो चाले सो कहे है –

१–नारकी रो नेरीयो मरणान्तिक समुद्घात करे तो जघन्य १००० योजन भाजेरी, ऊंची करे तो पंडग री बावड़ी तक, तिरछी

कर तो स्वयंभूरमण समुद्र तक, नीची कर तो सातवीं नरक तक*।

२– भवनपति, वाणव्यन्तर, ज्योतिषी, पहले दूजे देवलोक रा देवता मरणान्तिक समुद्घात कर तो जघन्य अंगुल रे असंख्यातवें भाग, उत्कृष्ट○ नीची कर तो तीजी नारकी तक, ऊंची कर तो सिद्धशिला तक, तिरछी कर तो स्वयंभूरमण समुद्र रे बाहर री पथवर वेदिका रे चरमान्त तक।

३– तीजा सुं लगा कर आठवें देवलोक तक रा देवता मरणान्तिक समुद्घात कर तो जघन्य अंगुल रे असंख्यातवें भाग, उत्कृष्ट□ ऊंची करे तो बारहवें देवलोक तक, नीची कर तो पाताल कलशों रे दूसर त्रिभाग ( ) तक। तिरछी कर तो स्वयंभूरमण समुद्र तक।

४– नवमें, दसवें, ग्यारहवें, बारहवें देवलोक रा देवता मरणान्तिक समुद्घात कर तो जघन्य अंगुल रे असंख्यातवें भाग, उत्कृष्ट नीची कर तो अधोलोक ग्राम विजय (सलिलावती विजय) तक, तिरछी कर तो मनुष्य क्षेत्र (अढाई द्वीप) तक, ऊंची कर तो बारहवें

---

* १– नेरिया नीची समुद्घात नहीं करे किन्तु सातवीं में रहा हुआ नेरिया जठा सुं समुद्घात करे। इण वास्ते नीची समुद्घात नहीं है।

○२– भवनपति सुं दूसरा देवलोक तक रा देवता कोई कारण सुं तीसरी नारकी रे चरमान्त तक जावे और उठे घात कर जाय। इण वास्ते नीची समुद्घात नहीं है।

□३– तीजा देवलोक सुं आगे रा देवता भी समुद्घात नहीं करे। किन्तु कोई मोटो देव इणने ऊपर रा देवलोकों में ले जावे और उठे घात कर जाय इण वास्ते ऊ भी समुद्घात नहीं है।

देवलोक तक,नवर्ं बारहवें देवलोक रा देवता अपन विमान तक *।

५—नवग्रैवेयक और पांच अनुत्तर विमान रा देवता मरणान्तिक समुद्घात करे तो जघन्य विद्याधरों री श्रेणी तक,उत्कृष्ट○ नीची करे तो अधोलोक ग्राम विजय(सलिलावती विजय) तक,तिरछी कर तो मनुष्य क्षेत्र तक,ऊंची करे तो अपन अपन विमान तक।

६—पाँच स्थावर मरणान्तिक समुद्घात करे तो जघन्य अंगुल र असंख्यातवें भाग,उत्कृष्ट लोकान्त सु लोकान्त तक,तिरछी करे तो १ राजु, ऊंची करे तो १४ राजु, नीची करे तो १४ राजु।

७—तीन विकलेन्द्रिय ,तिर्यञ्च पञ्चेन्द्रिय मरणान्तिक समुद्घात कर तो जघन्य अंगुल रे असंख्यातवें भाग, उत्कृष्ट कर तो तिरछा लोक र अन्त तक, तिरछी करे तो १ राजु, ऊंची करे तो ७ राजु, नीची करे तो ७ राजु।

८—मनुष्य मरणान्तिक समुद्घात करे तो जघन्य अंगुल रे असंख्यातवें भाग उत्कृष्ट मनुष्य क्षेत्र से लोकान्त तक, तिरछी कर तो आधो राजु, ऊंची कर तो ७ राजु माठेरी (कुछ कम), नीची कर तो ७ राजु झाझेरी (कुछ अधिक)।

सेव भंते ! सेव भंते !!

---

* ४— नवमें सु ग्यारहवें देवलोक तक रा देवता बारहवें देवलोक तक कोई कारण से जाय और वठे काल कर जाय। इण वास्ते ऊंची समुद्घात कही।

○५— नवग्रैवेयक और पांच अनुत्तर विमान रा देवता अपणा विमान में उठ रया है वठे काल कर। इण वास्ते अपणा अपणा विमान तक समुद्घात कही।

सूत्र श्री पन्नवणाजी रे पद २२ में क्रियापद रा थोकड़ो चाले सो कहे है—

१—नाम द्वार—५ क्रिया रा नाम—काइया, अहिगरणिया, पाउसिया परितावणिया, पाणाइवाइया।

२—भेद द्वार—(१) काइया (कायिकी) क्रिया रा २ भेद—अणुवरयकाइया, दुप्पउत्त काइया। अणुवरयकाइया—अव्रत सुं लागे (चौथे गुणठाणे तक)। दुप्पउत्त काइया—योगों री दुष्ट प्रवृत्ति सुं लागे (छठ गुणठाणे तक)। (२) अहिगरणिया (अधिकरणिया) क्रिया रा २ भेद—संजोयणा और निव्वत्तणा। संजोयणा—शस्त्रादिक रा जोग मिलावे। निव्वत्तणा—शस्त्रादिक नया घड़ावे। (३) पाउसिया क्रिया (प्राद्वेषिकी क्रिया) द्वेष करणे सुं लागे, पाउसिया क्रिया रा ३ भेद—अपनी आत्मा पर द्वेष करे, पराई आत्मा पर द्वेष करे अपना और पराई दोनों री आत्मा पर द्वेष करे। (४) परितावणिया (परितापनिकी) क्रिया—परिताप (तकलीफ) उपजावे सुं लागे, परितावणिया क्रिया रा ३ भेद—अपनी आत्मा ने परितापना (तकलीफ) उपजावे पराया री आत्मा ने परितापना उपजावे, अपनी और पराया री दोनों री आत्मा ने परितापना उपजावे। (५) पाणाइवाइया (प्राणातिपातिकी)—प्राणी री घात करणे सु लागे, पाणाइवाइया क्रिया रा ३ भेद—अपनी आत्मा री घात करे, पराया री आत्मा री घात करे, अपनी और पराया री दोनों री आत्मा री घात करे।

३– सक्रिय अक्रिय द्वार – अहो भगवान् ! जीव सक्रिय है अथवा अक्रिय है ? हे गौतम ! जीव रा २ भेद– सिद्ध और संसारी। सिद्ध तो अक्रिय है। ससारी रा २ भेद –शैलेशी और अशैलेशी। शैलेशी (चौदहवें गुणस्थान वाला) तो अक्रिय है। अशैलेशी (पहले सुं तेरहवें गुणस्थान वाला) सक्रिय है।

४– क्रिया किया सुं लागे द्वार– जीव ने प्राणातिपात री क्रिया किण सु लागे ? छ जीवनिकाय सु । इसी तरह २४ दण्डक कह देणा। मृषावाद री क्रिया किण सु लागे ? सर्व द्रव्यों सु । इसी तरह २४ दण्डक कह देणा। अदत्तादान री क्रिया किण सु लागे ? द्रव्यों र ग्रहण धारण सु । इसी तरह २४ दण्डक कह देणा। मैथुन री क्रिया किण सु लागे ? रूप सु तथा रूप सहित द्रव्य सु। इसी तरह २४ दण्डक कह देणा। परिग्रह री क्रिया किण सु लागे ? सब द्रव्यों सुं, इसी तरह २४ दण्डक कह देणा। परिग्रह री तरह आग मिथ्या दर्शनशल्य तक कह देणा। अठारह पाप में ३ तो दण्डक री (१, ३, ४) और १५ सब द्रवी १८×२५=४५० एक जीव आसरी, ४५० घणा जीव आसरी=४५०+४५०=९०० अलावा हुआ।

५– क्रिया कर्म द्वार (क्रिया करतां कितना कर्म बांधे द्वार)– एक जीव प्राणातिपात री क्रिया करतो थको कितना कर्म बांधे ? एक भाय सिय ७ बांधे सिय ८ बांधे, इसी तरह २४ दण्डक कह देणा। घणा जीव आसरी १९ दण्डक (पांच स्थावर वर्जी न)

में भांगा पावे ३ – सम्व चि वाय हुज्जा सात रा सात रा पहा आठ रो एक, सात रा ही पहा आठ रा ही पण=१६×३=४७। इसी तरह १८ पाप सुं फद हुआ ४७×१८=१०२६ भांगा हुआ। पांच स्थावर रा जीव (पहा जीव आसरी) ७ ही बांधे ८ ही बांधे, भांगो अभंग (भांगों हवे नहीं)।

६–कर्म क्रिया द्वार (कर्म बांधतां किती क्रिया लाग द्वार)– एक जीव ने ज्ञानावरणीय कर्म बांधतां थकां किती क्रिया लागे? सिय ३ क्रिया लागे, सिय ४ क्रिया लाग, सिय ५ क्रिया लागे, इस तरह समुच्चय जीव, २४ दण्डक फद हुआ। पहा जीव आसरी तिकिरिया नि चउकिरिया नि, पंच किरिया वि। इसी तरह २४ दण्डक फद हुआ। २५ भांगा एक जीव आसरी और २५ भांगा पहा जीव आसरी=५ । जिस तरह ज्ञानावरणीय कर्म कयो उसी तरह ७ कर्म और फद हुआ=५०×८=४०० भांगा हुआ।

७–जीव ने क्रिया लागे द्वार–समुच्चय एक जीव ने समुच्चय एक जीव आसरी किती क्रिया लाग? समुच्चय एक जीव ने समुच्चय एक जीव आसरी सिय ३ क्रिया लागे, सिय ४ क्रिया लाग, सिय ५ क्रिया लाग, सिय अक्रिया। समुच्चय एक जीव ने १० दण्डक औदारिक आसरी किती क्रिया लागे? सिय ३ क्रिया लागे, सिय ४ क्रिया लागे सिय ५ क्रिया लाग, सिय अक्रिया। समुच्चय एक जीव ने नारकी देवता १४ दण्डक आसरी किती क्रिया लागे? सिय ३ क्रिया लागे सिय ४ क्रिया लागे, सिय अक्रिय । १४

दण्डक नारकी देवता रा १४ दण्डक नारकी देवता आसरी किती क्रिया लागे ? सिय ३ क्रिया लाग, सिय ४ क्रिया लागे। १४ दण्डक नारकी देवता रा समुच्चय जीव और १० दण्डक औदारिक आसरी किती क्रिया लाग ? सिय ३ क्रिया लाग सिय ४ क्रिया लाग, सिय ५ क्रिया लाग। ६ दण्डक औदारिक रा (मनुष्यवर्जी ने) १४दण्डक नारकी देवता आसरी किती क्रिया लागे ? सिय ३ क्रिया लागे, सिय ४ क्रिया लाग। ६ दण्डक औदारिक रा समुच्चय जीव और १० दण्डक औदारिक आसरी किती क्रिया लागे ? सिय ३ क्रिया लाग, सिय ४ क्रिया लाग, सिय ५ क्रिया लागे। मनुष्य समुच्चय माफक कहणो। इमी तरह एक जीव न घणा जीव आसरी कह दणा, घणा जीवों न एक जीव आसरा कह दणो, घणा जीवों ने घणा जीव आसरी कह दणो नवरं पीछे अलावे में सिय शब्द नहीं बोलणो किन्तु ३ क्रिया वि लागे, ४ क्रिया वि लाग ५ क्रिया वि लाग समुच्चय जीव और मनुष्य आसरा अक्रिया वि इस तरह बोलणो। समुच्चय जीव और २४ दण्डक -२५×४ अलावा=१००× २५ समुच्चय जीव और २४ दण्डक आसरी=२५०० अलावा हुआ।

८-जीव र पांच क्रिया द्वार – जीव र ५ क्रिया। पांच क्रियाओं रा नाम-काइया, अहिगरणीया, पाउसिया परितावणीया पाणाइवा-इया। समुच्चय जीव २४दण्डक में क्रिया पावे५-५। २५×५=१२५ अलावा हुआ। नियमा भजना द्वार – (१) काइया क्रिया में अहि

गरणीया री नियमा, अहिगरणीया में काइया री नियमा। (२) काइया में पाउसिया री नियमा पाउसिया में काइया री नियमा। (३) काइया में परितावणीया री भजना परितावणीया में काइया री नियमा। (४) काइया में पाणाइवाइया री भजना, पाणाइवाइया में काइया री नियमा। (५) अहिगरणीया में पाउसिया री नियमा पाउसिया में अहिगरणीया री नियमा। (६) अहिगरणीया में परितावणीया री भजना, परितावणीया में अहिगरणीया री नियमा। (७) अहिगरणीया में पाणाइवाइया री भजना पाणाइवाइया में अहिगरणीया री नियमा। (८) पाउसिया में परितावणीया री भजना, परितावणीया में पाउसिया री नियमा। (९) पाउसिया में पाणाइवाइया री भजना, पाणाइवाइया में पाउसिया री नियमा। (१०) परितावणीया में पाणाइवाइया री भजना, पाणाइवाइया में परितावणीया री नियमा।

इसी तरह जिस समय, जिस देश और जिस प्रदेश सु कह सको। जैसे जिस समय काइया क्रिया करे उस समय अहिगरणीया री नियमा। जिस समय अहिगरणीया क्रिया करे उस समय काइया क्रिया री नियमा इत्यादि, जिस देश में काइया क्रिया करे उस देश में अहिगरणीया की नियमा जिस देश में अहिगरणीया क्रिया करे उस देश में काइया क्रिया री नियमा इत्यादि। जिस प्रदेश में काइया क्रिया करे उस प्रदेश में अहिगरणीया री नियमा जिस प्रदेश में अहिगरणीया क्रिया करे उस

प्रदेश में काइया क्रिया री नियमा इत्यादि। १० भांगा समुच्चय रा, १० समय रा, १० देश रा, १० प्रदेश रा=४०। समुच्चय जीव और २४ दंडक इण २५ सु गुणा करने सुं १००० अलावा हुवा।

९– अजोग्रिया क्रिया केने कहिये? तीव कषाय करीने आत्मा ने संसार रे माये जोड़े तिणने अजोग्रिया क्रिया कहिये। अहो भगवान्! अजोग्रिया क्रिया किता प्रकार री? हे गौतम! ५ प्रकार री काइया यावत पाणाइवाइया। अजोग्रिया क्रिया रा अलावा ऊपर आठवें द्वार में कया उण माफक १००० अलावा कह देखा।

पुट्ठिया द्वार– अहो भगवान्! जिण समय में काइया अहिगरणिया पाउसिया क्रिया फरसी उण समय में परितावणिया और पाणाइवाइया क्रिया फरसी? हे गौतम! इण रा ४ भांगा– (१) कोई जीव जिण समय में काइया अहिगरणिया पाउसिया क्रिया फरसी तिण समय में परितावणिया पाणाइवाइया क्रिया फरसी। (२) कोई जीव जिण समय में काइया अहिगरणिया पाउसिया क्रिया फरसी तिण समय में परितावणिया फरसी, पाणाइवाइया नहीं फरसी। (३) कोई जीव जिण समय में काइया अहिगरणिया पाउसिया क्रिया फरसी तिण समय में परितावणिया पाणाइवाइया दोनु ही क्रिया नहीं फरसी। (४) कोई जीव जिण समय में काइया अहिगरणिया पाउसिया क्रिया नहीं फरसी तिण समय में परितावणिया पाणाइ वाइया क्रिया भी नहीं फरसी।

१०– अहो भगवान्! क्रिया किता प्रकार री? हे गौतम क्रिया ५

प्रकार री– आरंभिया परिग्गहिया मायावत्तिया अपच्चक्खाणीया मिच्छादर्शनप्रत्यया। अपद्वार– आरंभिया क्रिया प्रमादी संयती ने (छठे गुणठाणा वाला रे) लागे अनेराने भी लाग (पहले सुं पांचवें गुणठाणे तक)। परिग्गहिया संजतासंजती ने (पांचवें गुणठाणा वाला ने) लाग, अनेराने भी लागे (पहले सु चौथ तक)। मायावत्तिया अप्रमादी ने (सातवें सुं दसवें गुणठाणे तक) लागे। अनेराने भी (पहले सुं छठे तक) लागे। अपच्चक्खाणीया क्रिया अपच्चक्खाणी न (चौथ गुणठाणे वाला ने) लागे अनेराने भी (पहले सुं तीज गुणठाणे वाला ने) लागे। मिच्छादर्शनप्रत्यया क्रिया मिच्छात्वी रे लाग अनेरान भी (मिश्र गुणठाणा वाला ने भी) लागे। पावद्वार–२४ दण्डक में क्रिया पावे ४-५। नियमा भजनाद्वार आरंभिया क्रिया में परिग्गहीया री भजना, परिग्गहीया क्रिया में आरंभिया री नियमा। (२) आरंभिया में मायावत्तिया री नियमा, मायावत्तिया में आरंभिया री भजना। (३) आरंभिया में अपच्चक्खाणीया री भजना, अपच्चक्खाणीया में आरंभिया री नियमा। (४) आरंभिया में मिच्छादर्शनप्रत्यया री भजना, मिच्छादर्शन प्रत्यया में आरंभिया री नियमा। (५) परिग्गहिया में मायावत्तिया री नियमा मायावत्तिया में परिग्गहिया री भजना। (६) परिग्गहिया में अपच्चक्खाणीया री भजना, अपच्चक्खाणीया में परिग्गहिया री नियमा। (७) परिग्गहीया में मिच्छादर्शन प्रत्यया री भजना, मिच्छादर्शनप्रत्यया में परिग्गहीया री नियमा। (८) मायावत्तिया में अपच्चक्खाणीया री भजना, अपच्चक्खाणीया

में मायावत्तिया री नियमा। (६) मायावत्तिया में मिथ्यादर्शनप्रत्यया री भजना, मिथ्यादर्शनप्रत्यया में मायावत्तिया री नियमा। (१०) अपचक्खाणीया में मिथ्यादर्शन प्रत्यया री भजना, मिथ्यादर्शन प्रत्यया में अपच्चक्खाणीया री नियमा।

नारकी देवता १४ दण्डक में ४ क्रिया री नियमा, मिथ्यात्व होवे तो ५ री नियमा। पांच स्थावर तीन विकलेन्द्रिय में ५ क्रिया री नियमा। तिर्यञ्च पञ्चेन्द्रिय में ३ क्रिया री नियमा। अपच चक्खाणीया होवे तो ४ री नियमा, मिथ्यात्व री भजना, मिथ्यात्व होवे तो ५ री नियमा। मनुष्य समुच्चय री माफक कह देणा। इसी तरह जिस समय में, जिस देश में, जिस प्रदेश में कह देणो।

आरम्भिया आदि ५ क्रिया रा द्वार –

क्रिया रा नाम	आरंभिया	परिग्गहिया	मायावत्तिया	अपच्च	मिथ्या०
आरंभिया	नियमा	भजना	नियमा	भजना	भजना
परिग्गहिया	नियमा	नियमा	नियमा	भजना	भजना
मायावत्तिया	भजना	भजना	नियमा	भजना	भजना
अपच्चक्खाणिया	नियमा	नियमा	नियमा	नियमा	भजना
मिथ्यादर्शन प्रत्यया	नियमा	नियमा	नियमा	नियमा	नियमा

११ – प्राणातिपातादिक सुं निवर्तवो द्वार– अहो भगवान्! जीव १८ पाप सुं निवर्ते? हंता गोयमा! निवर्त। ५ स्थावर ३ विकले

न्द्रिय, ये ८ दण्डक रा जीव १८ पाप सुं नहीं निवत । १ दण्डक नारकी रो, १३ दण्डक देवता रा, १ दण्डक तिर्यन्च पचन्द्रिय रो, ये १५ दण्डक रा जीव १७ पाप सुं नहीं निवर्तें, १ मिथ्यात्व सु निवर्ते । मनुष्य १८ ही पाप सुं निवर्ते ।

१२ – अहो भगवान् ! समुच्चय एक जीव १८ ही पाप रो वैरमण करतो थको (निवर्ततो थको) किता कर्म बांधे ? हे गौतम ! समुच्चय एक जीव १८ ही पाप रो वेरमण करतो थको सिय ७ कर्म बांधे सिय ८ कर्म बांधे सिय ६ कर्म बांधे सिय १ कर्म बांधे सिय अबंध । नारकी देवता तिर्यञ्च पंचेन्द्रिय ये १५ दण्डक एक जीव आसरी मिथ्यात्व रो वेरमण करता थका किता कर्म बांधे ? सिय ७ बांधे सिय ८ बांधे । मनुष्य एक जीव आसरी समुच्चय जीव रे माफक कह देणो ।

अहो भगवान् ! घणा समुच्चय जीव १८ ही पाप रो वेरमण करता थका किता कर्म बांधे ? हे गौतम ! घणा समुच्चय जीव १८ ही पाप रो वेरमण करता थका ७ बांधे ८ बांधे ६ बांधे १ बांधे अबंध। सात एकरा शाश्वता, आठ छव अबंध रा अशाश्वता जिणरा भांगा २७-असंयोगी भांगो १ – सब्बे वि ताव हुज्जा सात एकरा। दो संयोगी भांगा ६ – (१) सात एक रा घणा आठ रो एक, (२) सात एक रा घणा, आठ रा घणा, (३) सात एक रा घणा, छह रो एक, (४) सात एक रा घणा, छह रा घणा (५) सात एक रा घणा, अबंध रो एक, (६) सात एक रा घणा, अबंध

ते एक, (७) मात एक रा घणा, आठ घणा रा घणा। इसी तरह तीन मझोगा १८ मांगा और चार मझागी = मागा कह देणा=२७।
समुच्चय जीव पन्नो इम तरह ही मनुष्य कह देणा=२७।

२७ मागा समुच्चय जीव मु और २७ मांगा मनुष्य मु=
१४×१८ पापमु बोलण मुं ८७२ मागा हुआ।

नारकी देवता तिर्यञ्च पञ्चेन्द्रिय य १५ दण्डक में परगा जीव आसर्गी मिथ्यात्व ते परमाण करता थका ७ कर्म बांध, ८ कर्म बांध–इण रा मांगा ३–(१) सत्य वि सात रूजा मात रा (२) सात रा घणा, आठ ते एक, (३) सात रा घणा, आठ रा मी घणा,=
१५×३=४५। ८७२+४५=९१७ मांगा हुआ।

१३– क्रिया लागण रा द्वार– समुच्चय जीव में प्राणातिपात सु निवरता थको ~ क्रिया (आरंभिया, मायावत्तिया) री भजना,
३ क्रिया (परिग्गहिया, मिच्छादंसणवत्तिया, अपच्चक्खाणिया)
लाग नहीं। इसी तरह मिथ्यादर्शन शल्य तक १८ हा पाप कह देणा,
नवर मिथ्यात्व सु निरव निवरत मिथ्यात्व री क्रिया लाग नहीं, ४ क्रिया री भजना। समुच्चय जीव री तरह मनुष्य कह दुणा। २३
दण्डक में १८ पाप रा त्याग नहीं, नवरं इतनी नियरता नारका आर
१३ दण्डक देवता य १४ दण्डक रा मिथ्यात्व सु निवरता(छोड़ता)
थकां ४ क्रिया लाग, मिथ्यात्व री क्रिया नहीं लाग। तिर्यञ्च
पञ्चेन्द्रिय में मिथ्यात्व सुं निवरता थका ३ क्रिया लागे अपच्च
क्खाणिया क्रिया री भजना, मिथ्यात्व री क्रिया लाग नहीं। समुच्चय

जीव और २४ दण्डक=२५×१८ पाप सुं गुणा करया सुं ४५० भांगा होवे।

१४– अल्पाबोध द्वार– १ सब सुं थोड़ा मिथ्यात्व री क्रिया वाला जीव २ वे थकी अपच्चक्खाणिया क्रिया वाला जीव विशेषाहिया, ३ ते थकी परिग्गहिया क्रिया वाला जीव विसेसाहिया ४ ते थकी आरंभिया क्रिया वाला जीव विसेसाहिया, ५ ते थकी मायावत्तिया क्रिया वाला जीव विसेसाहिया।

१५– * शरीर उत्पत्ति द्वार–श्री भगवती शतक १७ में उद्देशा १ में कह्यो १३ बोल (५ शरीर ५ इन्द्रियाँ ३ जोग) निपजावता थका एक जीव रे सिय ३ क्रिया, सिय ४ क्रिया, सिय ५ क्रिया लागे। घणा जीव आसरी ३ क्रिया भी ४ क्रिया भी ५ क्रिया भी लागे।

१६–(क) जैसे कोई वस्तु चोर ले गयो उसने जोवतां (ढूं ढतां) थकां कितनी क्रिया लागे? आरंभिया आदि ४ क्रिया री नियमा मिथ्यात्व री भजना। जोवतां थकां क्रिया भारी वस्तु लाधां पीछे हल्की।

१६– (ख) किरायो होवे जेसे द्वार– श्री भगवतीजी शतक ५ उद्देशा ६ में कह्यो। कोई व्यापारी किरायो बन्ध्यो और माल

* समुच्चय जीव और मनुष्य मे बोल पावे १३, नारकी देवता म बोल पावे ११ (२ शरीर नहीं पावे), ४ स्थावर में बोल पावे ५ (३ शरीर १ स्पर्शेन्द्रिय १ काया रा जोग) वायुकाय म बोल पावे ६ (वैक्रिय शरीर बध्यो) बेइन्द्रिय म बोल पावे (३ शरीर २ इन्द्रिय जोग) तेइन्द्रिय मे बोल पावे ८ (१ इन्द्रिय बधी) चौरिन्द्रिय में बोल पावे ९ (१ इन्द्रिय बधी) तिर्यंच पंचेन्द्रिय म बोल पावे १ (आहारक शरीर टल्यो)।

तोल्यो नहीं, रुपिया लिया नहीं जितने माल बचण वाला ने माल रा क्रिया मारी और रुपियों री क्रिया हल्की (अल्प), तथा माल खरीदण वाला र रुपियों री क्रिया मारी और माल री क्रिया हल्की (अल्प)। माल तोल दियो रुपिया लिया नहीं तो बेचण वाला रे दोनों क्रिया हल्की और माल खरीदण वाला रे दोनों क्रिया मारी। रुपिया ले लिया, माल तोल्यो नहीं तो बचण वाला र दोनों क्रिया मारी और खरीदण वाला रे दोनों क्रिया हल्की। माल तोल दियो, रुपिया ले लिया जब बचण वाला र माल री क्रिया हल्की और रुपियों री क्रिया मारी, खरीदण वाला रे माल री क्रिया मारी और रुपियों री क्रिया हल्का।

१७—क्रिया लागे द्वार— सूत्र भगवतीजी शतक पांचवें उद्देशा ६ में कयो—कोई पुरुष वन में गयो। धनुष बाण हाथ में लेकर कान तक खींचि खींच कर ऊंचे आकाश में बाण फेंके उस सु प्राण भूत जीव सत्त्व हणावे तो अहो भगवान्! कियाने किती क्रिया लागे? हे गौतम! दस बोलांरा जावों ने ५-५ क्रिया लाग —(१) जीव मारण वाला ने, (२) धनुष ने, (३) र्जी वा ने (धनुष रा अग्रभाग में पूत री डोरी बंधी हुई होवे तिके ने), (४) पुगा न (भस रो सींग जो धनुष र अधोभाग में होवे तिकेन), (५) पहारु ने (चमड़ा रा नंधण न) (६) बाण ने, (७) शर ने, (८) पत्र (पांख) ने (९) फल ने (मालोगी ने) (१०) पहारु ने। बाण नीचे आकर पड्यो जिस सु दूसरा जीवों री हिंसा हुई तो धनुष रा ५ बोलां न (पुगा धनुष, पुगी पहारु,

४ क्रिया लागे और मृग ने मार दे तो ५ क्रिया लागे।

अहो भगवान्! कोई पुरुष कच्छादिक में जाकर तथा (घास फूस) इकट्ठा कर उस में अग्नि डाले तो उस ने कित्ती क्रिया लागे? हे गौतम! जब तक वह पुरुष तथा इकट्ठा करे तब तक उसने ३ क्रिया लागे। जब तर्णा में आग डाल देवे तो ४ क्रिया लागे और जब तर्णा ने जला देवे तो ५ क्रिया लागे।

अहो भगवान्! कोई पुरुष कच्छादिक में जाकर मृग मारण वास्ते बाण फेंके तो उणने कित्ती क्रिया लागे? हे गौतम! जब तक वह पुरुष बाण फेंके तब तक उसने ३ क्रिया लागे, मृग ने बाण सु बिंध दे तो ४ क्रिया लागे और मृग मर जावे तो ५ क्रिया लागे।

अहो भगवान्! कोई पुरुष मृग मारण वास्ते बाण खींच कर खड़ो है। इतने में दूसरो पुरुष आयकर तलवार सु उण पहले पुरुष रो माथो काट दियो, उण पहला पुरुष रा हाथ सु वह बाण छूट्यो जिस सु मृग मर गयो तो उण पुरुष ने मृगमारण री क्रिया लाग या पुरुष मारण री क्रिया लागे? हे गौतम! मृग मारण वाला ने मृग री क्रिया लागे और पुरुष मारण वाला ने पुरुष री क्रिया लागे। वह मरणे वालो जीव यदि छह महीनों में मर जाय तो मारण वाला ने ५ क्रिया लागे और छह महीनों रे बाद मरे तो मारण वाला न ४ क्रिया लागे।

अहो भगवान! कोई पुरुष तलवार या बर्छी सु किसी पुरुष रो माथो काट दे तो उण पुरुष ने कित्ती क्रिया लागे? हे गौतम!

उस पुरुष न ध किया लाग और वह पुरुष-वैर सु स्पृष्ट होय।

२०–सूत्र भगवती शतक ६ उद्देशा ३४ में कह्यो–अहो भगवन्! कोई जीव पुरुष न हणतो थको पुरुष न हणे कि नोपुरुष (ज हमि आदि) ने हणे ? हे गौतम ! पुरुष ने हणतो थको एक पुरुष न भी हण और नोपुरुष ने भी हणे। इण तरह सु अश्व (घोड़ो) हाथी, बाघ, सिंह, चील तक १८ बोल कह देखा।

अहो भगवान ! कोई जीव अनरा त्रस प्राणी ने हणतो थको अनरा त्रस प्राणी न हण कि नोअनेरा त्रस प्राणी ने हणे ? हे गौतम ! अनरा त्रस प्राणी री नसराय नोअनेरा त्रस प्राणी हणाय, इण वास्ते अनरा त्रसप्राणी ने हणतो थको अनरा त्रस प्राणी न भी हण और नोअनेरा त्रस प्राणी ने भी हणे ।

अहो भगवान् ! ऋषीश्वर ने हणतो थको ऋषीश्वर न हण कि नोऋषीश्वर न हण ? हे गौतम ! ऋषीश्वर न हणतो थको नियमा अनन्ता जीवाँ न हण। अहो भगवान् ! कोई कारण ? हे गौतम ! ऋषीश्वर अनन्ता जीवों रा रक्षपाल (रक्षा करण वाला) है तथा ऋषीश्वर मरन अव्रत में उपजे । ऋषीश्वर रो १ असातो। वे २० असाता एक जीव आसरी हुआ । ऋषीश्वर वर्जीन १६ बोलां में तीन तान भांगा पर स्पर्शन आसरी जैसे कोई मनुष्य पुरुषने हणतो थको पुरुष रो वैर करीने स्पर्शे या पुरुष थकी अनरा नो वैर करीने स्पर्शे ? गोयमा ! (१) नियमा पुरुष रे वैर सुं स्पर्शे (२) पुरुष एक नोपुरुष एक रा वैर सुं स्पर्शे (३) पुरुष एक नोपुरुष घणा रा वैर सुं

स्पर्शे। १९×३=५७ भांगा। एक अपिने इणतो थको अपि थकी अनेरा थका वीवार वैर ने स्पर्शे=१ भांगो होज होवे। ५७+१=५८। ५८+२० समुच्चय रा=७८ अलावा हुवा।

अहो भगवान्! पृथ्वीकाय पृथ्वीकाय रो जाव वनस्पतिकाय रो श्वासोच्छ्वास लेवे? हंता गोयमा! लेवे। इमी तरह ४ स्थावर और कह देणा=५×५=२५ अलावा। अहो भगवान्! इण २५ ही बोलों में श्वासोच्छ्वास लेवे उणने किती क्रिया लागे? हे गौतम! सिय ३ क्रिया, सिय ४ क्रिया, सिय ५ क्रिया लागे=२५ अलावा।

अहो भगवान्! वृक्ष रो मूल कंद, खंध जाव बीज तक १० बोलों ने ठलाइतो थको, फेंकतो थको वायुकाय ने किती क्रिया लागे? हे गौतम! सिय ३ क्रिया सिय ४ क्रिया, सिय ५ क्रिया लागे=१० कुल ७८+२५+२५+१० =१३८ अलावा हुवा।

२१—अत्र भगवती शतक ३ उद्देशा ३ में भी मंडितपुत्र पूछा करी अहो भगवान्! क्रिया किता प्रकार री? हे मंडितपुत्र! क्रिया ५ प्रकार री काइया अधिकरणिया पाउसिया परितावणिया, पाणाइवाइया। काइया क्रिया रा २ भेद—अणुवरय काइया क्रिया और दुप्पउत्तकाइया क्रिया। अधिकरणिया क्रिया रा २ भेद—संजोयणा और निवर्तणा। पाउसिया क्रिया रा २ भेद—जीव पाउसिया और अजीवपाउसिया। परितावणिया क्रिया रा २ भेद— स्वहस्थपरितावणिया और परहस्थपरितावणिया। स्वहस्थपरितावणिया क्रियारा तीन भेद— (१) अपणा हाथ सुं अपणे गुरु ने तकलीफ उपजावे,

(२) अपणा हाथ सुं दूसरा ने तकलीफ उपजावे, (३) अपणा हाथ सु अपणे और दूसरा ने दोनों ने तकलीफ उपजावे। इसी तरह परहस्थ परितावणिया क्रिया रा भी तीन भेद कहणा। पाणाइवाइया क्रिया रा २ भेद—स्वहस्थ पाणाइवाइया और परहस्थ पाणाइवाइया। स्वहस्थ पाणाइवाइया और परहस्थ पाणाइवाइया क्रिया रा भी तीन तीन भेद परितावणिया री माफक कह देणा।

अहो भगवान्! पहले क्रिया पीछे वेदना कि पहले वेदना पीछे क्रिया? हे मंडितपुत्र! पहले क्रिया पीछे वेदना है किन्तु पहले वेदना पीछे क्रिया यह बात नहीं है।

अहो भगवान्! श्रमण निर्ग्रन्थ ने क्रिया लागे? हंता मंडित पुत्र! लागे। अहो भगवान! कांई कारण? हे मंडितपुत्र! प्रमाद जोग करीने क्रिया लागे।

अहो भगवान! एयति (कंपे), वयति (विविध प्रकार से कंपे) चलति (एक स्थान से दूसरे स्थान जावे), फंदइ (दूसरे स्थान में जाकर पीछा आवे), घट्टइ (सब दिशा विदिशा चाले अथवा दूसरा पदार्थों ने स्पर्शे) खुब्भइ (पृथ्वी में प्रवेश कर अथवा डरावे), उदीरइ (अनेरी वस्तु ने अनेरी वस्तु करे रूप पलटावे), तं तं भावे परिणमइ (बैठना, उठना, सोना, संकोच विस्तार करना इत्यादि भावों में परिणमें) इण ७ बोलों में प्रवर्तते थका जीव अन्तक्रिया कर (मोक्ष जावे)? हे मंडितपुत्र! णो इणट्ठे समट्ठे। अहो भगवान! कांई कारण? हे मंडितपुत्र! इण ७ बोलों में प्रवर्तते थका जीव २०

बोलों में प्रवर्त—१ आरम्भ करे, (२) सारम्भ करे, (३) समारम्भ करे, (४) आरम्भ में प्रवर्त, (५) सारम्भ में प्रवर्ते, (६) समारम्भ में प्रवत, (७) आरम्भ करतो थको, (८) सारम्भ करतो थको, (९) समारम्भ करतो थको (१०) आरम्भ में प्रवर्ततो थको, (११) सारम्भ में प्रवर्ततो थको, (१२) समारम्भ में प्रवर्ततो थको, (१३) प्राण (१४) भूत (१५) जीव (१६) सत्व ने (१७) दुक्खवियाए (दु:ख देवे), (१८) सोयावियाए (शोक करावे), (१९) झूरावियाए (झूरावे), (२०) तिप्पावियाए (आंसू गिरावे), (२१) पिट्टावियाए (मारपीट कर) (२२) परितावणियाए (तकलीफ उपजावे), इण २२ बोलों में प्रवर्ततो थको अन्तक्रिया नहीं करे। अहो भगवान्! एयति वेयति वगैरह ७ बोलों में नहीं प्रवर्ततो थको २२ बोलों में नहीं प्रवर्ते, २२ बोलों में नहीं प्रवर्ततो थको जीव अन्तक्रिया करे? हंता मंडितपुत्र! अन्तक्रिया करे। अहो भगवान! कांई कारण? हे मंडितपुत्र! यथा दृष्टान्त—१ जैसे सूखा तृणा अग्नि में नांखे तो तत्काल भस्म हो जाव। २ जैसे तप्योड़ा लोह रा तवा ऊपर पाणी री बूंद नांखे तो तत्काल भस्म हो जाय। ३ जैसे कोई द्रह (तालाब) पाणी सुं भर्यो है, उण में छिद्र वाली नाव पड़ी है, कोई पतुर पुरुष उण नाव रा छिद्र ने रूंध देवे और पाणी उलांचो ने बाहर काढ देव तो वह नाव तिर कर तत्काल ऊंची आय जाव। इण रीति सुं आत्मा ने संवरण वाला (गोपन वाला) मुनिराज ईर्यासमितिवंत आव गुणब्रह्मचारी जयणा सुं उठ जयणा सु बैठे, जयणा सुं हाले,

उपस्थान क्रिया– दूणा दिन निकाल्यां बिना फिर उसी ग्राम नगर में आवे। (३) अभिक्रान्त क्रिया–बाबा जोगी वगैरह के लिए बनाया हुआ मकान पुरुषान्तर हुआं बाद भोगवे (४) अनभिक्रान्तक्रिया बाबा जोगी वगैरह रे लिए बनाया हुआ मकान में बाबा जोगी उतरे सु पहली साधु उतर जाय तो। (५) वर्ज्यक्रिया (वर्जक्रिया– वर्ज्यक्रिया)–पश्चात्कर्म दोष लगाय जैसे अपने वास्ते बणायो हुवो मकान साधु ने उतरणे वास्ते दे दब और आपर लिए फिर नयो मकान बणा लेवे। ६ महावर्ज्य क्रिया (महावर्जक्रिया महावर्ज्यक्रिया)–एक भिखारी आदि रा अलग अलग नाम खोल कर बनाया हुआ मकान में उतर तो। ७ सावद्यक्रिया (सावद्य क्रिया)–पांच प्रकार रा* श्रमणों र वास्ते बनाया हुआ मकान में साधु उतरे तो। ८ महासावद्यक्रिया–(महासावद्यक्रिया)–साधु र वास्ते बनाया हुआ मकान में साधु उतर तो। ९ अल्पसावद्य क्रिया–गृहस्थ जो मकान अपने खुद र वास्ते बणायो है ऐसा निर्दोष प्रासुक मकान में साधु उतर। तीसरी क्रिया (अभिक्रान्तक्रिया) वालो मकान और नवमी क्रिया (अल्पसावद्यक्रिया) वालो मकान साधु र भोगन योग्य है बाकी भोगन योग्य नहीं है।

२३–सूयगडांग सूत्र श्रुतस्कन्ध दूजो अ० अध्ययन दूजा में १३ क्रिया कही– १ अर्थदण्ड–कोई प्रयोजन सु आरम्भ समारम्भ करे। २

---

* पांच प्रकार रा श्रमण–१ निर्ग्रन्थ (जैन साधु), २ शाक्य (बौद्ध भिक्षु) ३ तापस (वनवासी तपस्वी) ४ गैरुक (भगवे कपड़ों वाले), ५ आजीवक (गोशालक के साधु)।

अनर्थदण्ड—बिना मतलब फिजूल आरम्भ समारम्भ करे। ३ हिंसा दण्ड प्राणियों री हिंसा करे, यो जीव मने अथवा म्हारा कुटुम्बी जनां न मार्यो है इण वास्ते बदलो लेवण वास्ते मारे। ४ अकस्मात् दण्ड— अचानक बिना जाने प्राणियों री हिंसा हो जाय। ५ दृष्टि विपर्यास दण्ड—दृष्टि चूक जाने सु दूसरा जीव रे बदले दूसर री हिंसा हो जावे। ६ मोसवत्तिए—अपने वास्ते या दूसर वास्ते झूठ बोले। ७ अदिण्णादाणवत्तिए—अपने वास्ते या दूसर वास्ते चोरी करे। ८ अज्झत्थवत्तिए—क्रोधादि करे, चिन्ता शोक करे, आर्तध्यान करे। ९ माणवत्तिए—अभिमान करे, जाति-कुल आदि रो मद करे। १० मित्तदोसवत्तिए—मित्र तथा अपने कुटुम्बी जनों पर क्रोध करे, उनको दुःख देवे। ११ मायावत्तिए—माया कपटाई करे। १२ लोभवत्तिए—लोभ करे, कामभोगों में आसक्त होवे। १३ इरियावहिए—गमनागमनादि में क्रिया लागे।

* २४ प्रश्नव्याकरण सूत्र अध्ययन सातवें संवरद्वार दूजे में कह्यो आपरी प्रशंसा और पराई निन्दा रूप वचन नहीं बोलना चाहिए जैसे कि १ तू बुद्धिमान नहीं है, २ तू धन्य नहीं है, ३ तू प्रिय धर्म

* अप्पणो थवणा परेसु निंदा न तंसि मेहावी न तंसि धण्णो न तंसि पियधम्मो न तंसि कुलीणो न तंसि दाणवई न तंसि सूरो न तंसि पडिरूवो न तंसि लट्ठो न तंसि पंडिओ न तंसि बहुस्सुओ न वि य तं तवस्सी न यावि परलोगणिच्छियमई तंसि सव्वकालं जातिकुलरूववाहिरोगेण वावि जं होइ वज्जणिज्जं दुहओ उवयारमइक्कंतं एवंविहं सच्चं पि न वत्तव्वं।

वाला नहीं है, ४ तू कुलीन नहीं है, ५ तू दानेश्वरी (दानदाता) नहीं है। ६ तू शूरवीर नहीं है ७ तू रूपवान नहीं है, ८ तू सौभाग्यवान नहीं है, ९ तू पंडित नहीं है, १० तू बहुश्रुत नहीं है, ११ तू तपस्वी नहीं है, १२ परलोक के विषय में तेरी बुद्धि निश्चित नहीं है।

२५–क्रिया पच्चीस-१ काइया, २ अहिगरणिया, ३ पाउसिया, ४ परितावणिया, ५ पाणाइवाइया, ६ आरंभिया, ७ परिग्गहिया, ८ मायावत्तिया, ९ अपच्चक्खाणिया, १० मिच्छादंसणवत्तिया, ११ दिट्ठिया, १२ पुट्ठिया, १३ पाडुच्चिया, १४ सामंतोवणिवाइया १५ नेसत्थिया, १६ साहत्थिया, १७ आणवणिया, १८ वियारणिया, १९ अणाभोगवत्तिया, २० अणवकंखवत्तिया, २१ अण्णपओग वत्तिया, २२ समुदाणकिरिया, २३ पेज्जवत्तिया, २४ दोसवत्तिया, २५ ईरियावहिया।

इस पाठ का अर्थ टीका के अनुसार ऊपर दिया गया है किन्तु थोकड़ वाले इस पाठ का अर्थ थोकड़े में इस प्रकार करते हैं—

आठ आठ पदनिन्दना, तिण में तेरह दोष।
दूजे संवर समझो किण विध जासी मोष॥

आठवी प्रशंसा और पाठ निन्दा करण वाला में १३ दोष पावे—
(१) बुद्धिवन्त नहीं कहीजे। (२) कैसो भी अच्छा काम करे तो भी धनधारा (धन्य) नहीं दीजे (३) धर्म प्यारो नहीं कहीजे (४) कुल आदि निर्मल नहीं कहीजे (५) दानेश्वरी नहीं कहीजे। (६) शूरवीर नहीं कहीजे (७) रूपवन्त नहीं कहीजे (८) सौभाग्यवन्त नहीं कहीजे (९) पंडित नहीं कहीजे (१०) बहुसूत्री नहीं कहीजे (११) तपस्वी नहीं कहीजे (१२) वस्तु रो संशय मिटावण वालो नहीं कहीजे (१३) इसमें सदाराम नहिं मति आई कहीजे

(१) काइया किया रा २ भेद—अणुवरय काइया किया-अव्रत सुं लाग। २ दुप्पउत्त काइया किया—दुष्ट योगों सुं लाग।

(२) अधिकरणिया क्रिया रा २ भेद १ संजोयणा-शस्त्रादिक रो संजोग मिलावे, २ निवत्तणा— नया शस्त्र घड़ावे।

(३) पाउसिया किया रा २ भेद—१ जीव पाउसिया— जीव पर द्वेष करे, २ अजीव पाउसिया-अजीव पर द्वेष करे।

(४) परितावणिया क्रिया-जीवों ने परितापना उपजावे, शान्त हुआ क्लेश ने फिर ताजो करे इण क्रिया रा २ भेद—१ सहत्थ परितावणिया—अपणा हाथ सु परितापना उपजावे तथा नया क्लेश करीने अपणी आत्मा ने संताप उपजावे तथा छाती माथो कूटे। २ परहत्थ परितावणिया—दूसर रा हाथ सु परितापना उपजावे कुटि करीने दंडे करीने घाव घाले। (५) पाणाइवाइया—जीवन हणवा थकी लाग। इण रा २ भेद—१ सहत्थपाणाइवाइया—अपणा हाथ सु जीव री हिंसा करे। २ परहत्थपाणाइवाइया— दूसरे रा हाथ सु जीव री हिंसा करावे। (६) आरंभिया—आरम्भ सु लाग। इण रा २ भेद—१ जीव आरंभिया—छह काय जीवों री हिंसा सु लागे। २ अजीव आरंभिया—परिणाम सु जीव री आकृति वाला अजीव री हिंसा सु लाग। (७) परिग्गहिया क्रिया—ममता मूर्च्छा करने सु लागे। इण रा २ भेद—१ जीव परिग्गहिया—जीव पर ममता मूर्च्छा राखवे सु लागे। २ अजीव परिग्गहिया—अजीव पर ममता मूर्च्छा राखवे सु लागे। (८) मायावत्तिया—माया कपटाई करने सु लागे।

इस रा २ भेद–१ आयमावत्तकखया– आभ्यन्तर (अन्दर) टेढा परन्तु बाहर अपणे आपने अच्छो बतलावे, धर्म रा विषय में प्रमादी होतो हुवो भी बाहर क्रियावन्तपणो दिखावे। २ परमावत्तंकखया कूडा तोल कूडा मापा करके तथा कूडा लेख लिख कर लोगों ने ठगे। (९) अपच्चक्खाणिया– विना पच्चक्खाण सुं क्रिया लागे। इस रा २ भेद–१ जीव अपच्चक्खाणिया, २ अजीव अपच्चक्खाणिया। (१०) मिच्छादंसणवत्तिया–तत्त्वों में श्रद्धा नहीं राखणे सु और विपरीत श्रद्धा राखणे सुं कर्म बन्ध होवे। इस रा २ भेद–१ ऊणाइरित्त मिच्छादंसणवत्तिया–सर्वज्ञ भगवान रा कथन सुं हीना धिक माने। जैसे कि जीव तिल बराबर है, दीपक बराबर है, अंगुठ बराबर है ऐसो कहणो। २ तव्वइरित्त मिच्छादंसणवत्तिया–विपरीत सरघ, विपरीत प्ररूप, मिथ्यात्वी रा देव-गुरु धर्म ने साचा सरध। (११) दिट्ठियाक्रिया–राग द्वेष र वश होकर देखणे सु लाग। इस रा २ भद १ जीव दिट्ठिया, २ अजीव दिट्ठिया। (१२) पुट्ठिया क्रिया राग द्वेष रे वश होकर जीव अजीव ने स्पर्श करणे सु कर्म बन्ध होवे। इस रा २ भेद–१ जीव पुट्ठिया, २ अजीव पुट्ठिया। (१३) पाडुच्चिया क्रिया–पराई सम्पदा देख कर द्वेष करण सु क्रिया लाग। इस रा २ भद– १ जीव पाडुच्चिया, २ अजीव पाडुच्चिया। (१४) सामन्तोवणिवाइया–अपणी वस्तु री कोई प्रशंसा या निन्दा करे उस पर राग द्वेष लाव तो क्रिया लागे। इस रा २ भद–१ जीव सामन्तोवणिवाइया, २ अजीव सामन्तोवणिवाइया। (१५)

खेवरणिया क्रिया – अजतना सु वस्तु फेंकणे सु जीवों री घात होवे। इण रा २ भेद–१ जीव खेसरणिया, २ अजीव खेसरणिया। (१६) साहत्थिया – अपणा हाथ में लिया हुआ जीव या अजीव रा निमित्त सु आरम्भ उत्पन्न होवे सुं क्रिया लागे। इण रा २ भेद– जीव साहत्थिया, २ अजीव साहत्थिया। (१७) आणवणिया–स्वामी री आज्ञा सु काम करणे सु क्रिया लाग। इण रा २ भेद–१ जीव आणवणिया, २ अजीव आणवणिया। (१८) विदारणिया–छेदन भेदन सुं क्रिया लागे। इण रा २ भेद–१ जीव विदारणिया, २ अजीव विदारणिया। (१९) अणाभोगवत्तिया– बिना उपयोग सुं काम करणे सुं क्रिया लागे। इण रा २ भेद–१ अणाउत्त आयणा बिना उपयोग वस्त्रादि ग्रहण करणे सु लागे। २ अणाउत्त पमज्जणा बिना उपयोग पूंजण सु लागे। (२०) अणवकंखवत्तिया– इहलोक परलोक नो डर नहीं राखे अथवा स्वशरीर परशरीर री अपेक्षा नहीं राखे। इण रा दो भेद–१ इहलोक में अपयश रो काम करे, २ परलोक में बिनाश पावे ऐसो काम करे, हिंसा करी धर्म माने, धर्म अर्थे हिंसा करे। अथवा १–आयसरीर अणवकंखवत्तिया– अपणे शरीर सु पाप लागे वैसी क्रिया करे। २ परशरीर अणवकंखवत्तिया–पर शरीर सु पाप लागे वैसी क्रिया करे। २१ अण उपयोगवत्तिया–मन में आर्तरौद्रध्यान ध्यावे, प्रमाद से गमना गमन करतां, हाथ पग पसारतां संकोचतां मन वचन काया रा जोग सु क्रिया लागे। (२२) पेज्जवत्तिया–राग र वश क्रिया लागे।

इण रा दो भेद–१ मायावत्तिया, २ लोभवत्तिया। (२३) दोष वत्तिया–द्वेष रे वश क्रिया लागे। इण रा दो भेद–१ क्रोधवत्तिया, २ मानवत्तिया। (२४) सामुदाणी क्रिया– घणा जणा मिल कर महल महलायत घर इत्यादिक रो मोटो आरम्भ करे, करावे तथा कौतुक देखतां, होली दसरावो ओच्छव महोत्सव देखतां लागे। आठ कर्मों रा गाढा बन्धण बांध ये कर्म आगामी काले सरीखा भोगणा पड़, द्वारिका नष्ट हुई उण तरह। (२५) ईरियावहिया–अकषायी जीवों ने योग री प्रवृत्ति सु कर्म बन्ध होवे, पहले समय कर्म लाग, दूजे समय वेदे, तीजे समय निर्जरे।

सेव भंते ! सेव भंते !!

सूत्र श्री पन्नवणाजी र पद २३ वं उद्देशा १ में आठ कर्म भोगवे र कारण रा थोकड़ो चाले सो कहे छै –
(कर्म बन्धणे रा ८४ कारण श्री भगवती सूत्र शतक ८ उद्देशा ६ में है।
कर्म भोगणे रा ९३ कारण श्री पन्नवणा सूत्र पद २३ उद्देशा १ में है।)

कइ पयडी कह बंधइ, कइहि वि ठाणेहिं बंधए जीवो।
कइ वेएइ य पयडी, अणुभावो कइविहो कस्स ॥

(१) कर्म प्रकृतियों रा नाम, (२) जीव किस रीति सु कर्म बांधे ? (३) किण कारण सुं कर्म बांधे ? (४) कितनी प्रकृतियाँ वेदे ? (५) कर्मों रो अनुभाव– विपाक कितना प्रकार रो है ? ये पांच द्वार कहे छ।

(१) आठ कर्मों रा नाम– ज्ञानावरणीय, दर्शनावरणीय,

वेदनीय, मोहनीय, आयुष्य, नाम, गोत्र अन्तराय। १-ज्ञाना वरणीय कर्म ऊपर तेली रा बैल रो दृष्टान्त-जैसे तेली रा बैल री आंख्यां पर पाटो बांध दियांसुं उसने दीखे नहीं, इसी तरह ज्ञाना वरणीय कर्म रा उदय सु आत्मस्वरूप दीखे नहीं, ज्ञान री प्राप्ति होवे नहीं। २-दर्शनावरणीय कर्म ऊपर राजा रे पोलावे (दरबान) रो दृष्टान्त-जैसे राजा रो पोलीयो हुकम बिना राजा रा दर्शन करण देवे नहीं, इसी तरह दर्शनावरणीय कर्म र उदय सु आत्मा रा दर्शन होवे नहीं। ३-वेदनीय कर्म रे ऊपर दोधार वाला खांड रो दृष्टान्त, जैसे-दोधार रो खांडो, एक तरफ शहद लागी, एक तरफ अफीम लागी। शहद रो स्वाद मीठो, अफीम रो स्वाद खारो। मीठा समान साता वेदनीय, खारा समान असातावेदनीय। धार सु उस खांड रे जीभ लगावे तो स्वाद आजावे परन्तु शहद होकर कोर सु जीभ लगाकर काटसे सुं जीभ कट जावे, इसी तरह राग द्वेष सु नया कर्म बन्धे। ४ मोहनीय कर्म रे ऊपर मदिरा रो दृष्टान्त जैसे कोई मदिरा पीवे तो उसने भान रहवे नहीं, इसी तरह सु मोहनीय कर्म रा उदय सुं जीव भान भूल जावे। ५-आयुष्य कर्म रे ऊपर राजा र खोड रो दृष्टान्त-जैसे राजा किसी अपराधी ने खोडे में डाल देवे तो अवधि (मियाद) पूरी होया सु पहले उसन उठासु निकलण देवे नहीं, इसी तरह आयुष्य पूरा हुयां बिना जीव उस गति में सुं निकल सके नहीं। ६-नाम कर्म र ऊपर चितारे रो दृष्टान्त-जैसे चित्रकार उसी रंगों सु अनेक तरह रा चित्र तय्यार

फर इसी तरह आत्मा तो वही एक है परन्तु अनेक सांग कर जैसे कभी नारकी रो नेरीयो, कभी घोड़ो, कभी बकरी कभी मनुष्य और कभी देव हो गयो। ७—गोत्र कर्म रे ऊपर कुम्मार रा मांडा (बरतनों) रो दृष्टान्त—जैसे एक कुम्मार घड़ा बणाया। उण में सु एक घड़ो ब्राह्मण रे यहाँ गयो वह ब्राह्मण रो घड़ो कहलावे। एक घड़ो महत्तर रे यहाँ गयो, वह महत्तर रो घड़ो कहलाव, इसी तरह जीव संगति सु ऊँच नीच कहलाव। ८ — अन्तराय कर्म रे ऊपर राजा रा भंडारी रो दृष्टान्त—जैसे राजा हुक्म देवे तो भी राजा रो भंडारी दान देवण में विघ्न करे—अन्तराय देवे। इसी तरह अन्तराय रे उदय सु चाही हुई इष्ट वस्तु री प्राप्ति होवे नहीं।

आठ कर्म ४ तरह सु बांध—१ प्रकृति बन्ध, २ स्थिति बन्ध, ३ अनुभाग बन्ध (रस बन्ध) और ४ प्रदेश बन्ध। प्रकृति बन्ध में कर्मों री १४८ प्रकृतियाँ है। स्थितिबन्ध में कर्मों री १४८ प्रकृतियों री स्थिति हुवे। अनुभागबन्ध में रस पड़। प्रदेशबन्ध में कर्म एकत्र होकर आत्मप्रदेशों पर बन्ध हुवे। इण पर लड्डू रो दृष्टान्त—प्रकृतिबन्ध जैसे कोई लड्डू सूंठ रो, कोई मेथी रो और कोई अजवाण रो होवे, कोई में कफ हरण रो गुण होवे, कोई में वायु हरण रो और कोई में पित्त हरणे रो गुण होवे, यह प्रकृति बन्ध है। स्थितिबन्ध कोई लड्डू एक महीनो तक रह, कोई १५ दिन तक रहे और कोई ज्यादा कमती रहे। इणी तरह कर्मों री स्थिति भी अलग अलग हुवे यह स्थिति बन्ध है। अनुभाग (रस) बन्ध—जैसे कोई लड्डू कम मीठे

रो होवे और कोई ज्यादा मात्रे रो होय । इण तरह कर्मों रो रस होय, कोई में ज्यादा रस पड़, कोई में कम पड़ । कोई में चौठाणवडीया रस पड़, कोई में तिठाणवडीया, कोई में दुठाणवडीया और कोई में एकठाणवडीया रस पड़े, * सेलड़ी और नीम रो दृष्टान्त यह अनुभाग बन्ध है। प्रदेशबन्ध–जैसे कोई लड्डू वजन में एक छटांक रो होवे, कोई दो छटांक रो, कोई पाव रो और कोई सेर रो होय। इसी तरह कर्मों री प्रकृतियों में कोई में प्रदेश थोड़ा और कोई में घणा होवे । कोई कर्मप्रकृति भारी होय, कोई पतली होवे यह प्रदेश बन्ध है ।

ज्ञानावरणीय कर्म ६ प्रकार बांधे–१णाणपडिणीययाए ज्ञानी सु प्रत्यनीकपणो (शत्रुता) करे, ज्ञानी सु विरोध करे उसर प्रतिकूल आचरण कर । २ णाणणिण्हवणयाए – ज्ञानदाता गुरु रो नाम छिपावे । ३ णाणंतराएणं–ज्ञान पढने वाले में अन्तराय देवे । ४ णाणप्पदोसेणं–ज्ञानी सु द्वेष करे। ५ णाणच्चासायणाए–ज्ञान और ज्ञानी री आशातना कर । ६ णाणविसंवादणाजोगेणं ज्ञानी सु विसंवाद करे अथवा उसमें दोष दिखावे, ज्ञान पर अरुचि राखे । ज्ञानावरणीय कर्म १० प्रकारे भोगवे–१ सोयावरणीय–

---

* नोट – पाप प्रकृति के ऊपर नीम रे रस रो दृष्टान्त जैसे नीम रो १ सेर रस है उसने एकठाणवडीया कहीजे। १ सेर रस ने उकाल कर आधा सेर कर दियो वह उसपे ज्यादा कुण सु दुठाणवडीया रस कहीजे और १ सेर रो तीजो हिस्सो राख्यो वह चौठाणवडीया कहीजे इसी तरह री पुण्य प्रकृति के ऊपर सेलड़ी रो दृष्टान्त कर देयो ।

सुनन रो आवरण, सुने नहीं। २ सोयविएणाणावरणीय—शब्द में समझ सके नहीं। ३ नेत्तावरणीय—दखण रो अभाव, रूप देख सके नहीं। ४ नेत्तविएणाणावरणीय — रूप में समझ सके नहीं। ५ घाणावरणीय— सुगन्ध लेवण रो आवरण—सुगन्ध ले सके नहीं। ६ घाणविएणाणावरणीय—गन्ध में समझ सके नहीं। ७ रसावरणीय—स्वाद लेवण रो आवरण। रसविएणाणावरणीय— स्वाद में समझ सके नहीं। ९ फासावरणीय—स्पर्श रो आवरण। १० फासविएणाणावरणीय—स्पर्श रो विज्ञान हुवे नहीं, स्पर्श में समझ सके नहीं।

दर्शनावरणीय कर्म ६ प्रकारे बांधे—१-दंसणपडिणीययाए—दर्शनवान सु प्रत्यनीकपणो (शत्रुता) कर, विरोध करे, उणर प्रतिकूल आचरण करे। २ दंसणणिण्हवणयाए—दर्शनने गोपवे। ३ दंसणं तराएण—दर्शन में अन्तराय देवे। ४ दंसणप्पदोसेण—दर्शनवान् सु द्वेष करे। ५ दंसणासायणयाए—दर्शन और दर्शनवान री आशातना करे। ६ दंसणविसंवादणाजोगेणं—दर्शनवान् र साथ विसंवाद कर, उणमें दोष निकाले, उणमें अरुचि राखे।

दर्शनावरणीय कर्म ९ प्रकार सु भोगवे — १ निद्रा — सुखे सुखे सुखे जागे। २ निद्रानिद्रा—दुखे सुखे दुखे जागे। ३ प्रचला—बैठ बैठ ने, खड खड न नींद आवे। ४ प्रचला प्रचला — चलत चलते न नींद आवे। ५ स्त्यानगृद्धिनिद्रा— इण निद्रा वालो जीव दिन में सोच्यो हुवो काम नींद में कर डाले। इण में वासुदेव रो आधो बल आय जाव। इण निद्रा वालो जीव पर्वत नीचे धन गाड देवे

अथवा पीछो निश्चल सोवे अथवा हाथी रा दांत उखाड़ लेवे इसी निद्रा आवे उण नें स्त्यानगृद्धि निद्रा कहिये। इण निद्रा में काल करे तो नरक में जावे। इण निद्रा री स्थिति छह महीनों री। ६ चक्षु दर्शनावरणीय, ७ अचक्षुदर्शनावरणीय, ८ अवधिदर्शनावरणीय, ९ केवलदर्शनावरणीय।

वेदनीय कर्म रा २ भेद—सातावेदनीय, असातावेदनीय। साता वेदनीय १० प्रकार सु बांधे—१ पाणाणुकंपयाए, २ भूयाणुकंपयाए, ३ जीवाणुकंपयाए, ४ सत्ताणुकंपयाए—प्राणी, भूत, जीव, सत्व पर अनुकम्पा करवा सु। ५ बहूणं पाणाणं जाव सत्ताणं अदुक्खणयाए—प्राणी भूत जीव सत्व ने दुःख नहीं देवा सु। ६ असोयणयाए—शोक नहीं करावा सु। ७ अझूरणयाए—झूरापो नहीं करावा सु ८ अतिप्पणयाए—टप टप आंसू नहीं गिरवावा सु। अपिट्टणयाए नहीं पीटवा मारवा सु। १० अपरितावणयाए—परितापना नहीं उपजावा सु।

वेदनीय कर्म—८ प्रकार भोगवे—१ मणुण्णा सद्दा २ मणुण्णा रूवा ३ मणुण्णा गंधा ४ मणुण्णा रसा ५ मणुण्णा फासा—मनोज्ञ शब्द रूप गन्ध रस स्पर्श री प्राप्ति होवे। ६ मणसुहया—मन प्रसन्न रहवे। ७ वयसुहया—वचन बोलवा में तकलीफ नहीं होवे। ८ कायसुहया—काया में रोगादिक नहीं होवे।

असातावेदनीय कर्म १२ प्रकार सु बांधे—१ परदुक्खणयाए २ परसोयणयाए ३ परझूरणयाए ४ परतिप्पणयाए ५ परपिट्टणयाए ६ परपरितावणयाए ७ बहूणं पाणाणं जाव सत्ताणं दुक्खण

याए ८ सोयणयाए ९ भूरणयाए १० तिप्पणयाए ११ पिट्टण याए १२ परितावणयाए।

असातावेदनीय ८ प्रकार सुं भोगवे– १ अमणुण्णा सद्दा २ अमणुण्णा रूवा ३ अमणुण्णा गन्धा ४ अमणुण्णा रसा ५ अमणुण्णा फासा–अमनोज्ञ शब्द रूप गन्ध रस स्पर्श री प्राप्ति होवे ६ मणदुहया– मन में संकल्प विकल्प करे ७ वयदुहया– बोलणे में तकलीफ होवे। ८ कायदुहया–शरीर में रोगादिक आवे।

मोहनीय कर्म ६ प्रकारे बांधे– १ तिव्वकोहयाए २ तिव्व माणयाए ३ तिव्वमायाए ४ तिव्वलोभयाए ५ तिव्वदंसणमोहणि ज्जयाए ६ तिव्वचरित्तमोहणिज्जयाए–तीव्र, क्रोध, मान माया, लोभ करणे सुं और तीव्र दर्शनमोहनीय, तीव्र चारित्रमोहनीय सु । ५ प्रकारे भोगवे–दर्शनमोहनीय चारित्रमोहनीय। दर्शनमोहनीय रा ३ भेद– समकितमोहनीय, मिथ्यात्वमोहनीय, मिश्रमोहनीय। चारित्र मोहनीय रा २ भेद–कषाय नोकषाय। कषाय रा १६ भेद–अनन्ता– नुबन्धी रो चोक (अनन्तानुबन्धी क्रोध मान, माया लोभ)। अप्रत्याख्यानी रो चोक (अप्रत्याख्यानी क्रोध, मान, माया, लोभ)। प्रत्याख्यानावरणीय रो चोक (प्रत्याख्यानावरणीय क्रोध, मान, माया, लोभ) संज्वलन रो चोक (संज्वलन क्रोध, मान, माया, लोभ)। अनन्तानुबन्धी रो चोक क्रोध रो स्वभाव पत्थर री तड़ समान, मान रो स्वभाव वज्र र थम समान, माया रो स्वभाव वांस री जड़ समान, लोभ रो स्वभाव किरमची रेशम रे रंग समान। इण चोक री अवधि

भावजीव री, यह समकित री घात करे, नारकी री गति करे।

अप्रत्याख्यानी रो चोक– क्रोध रो स्वभाव तालाब री तड़ समान, मान रो स्वभाव मींढा रे सींग समान, लोभ रो स्वभाव सीलपी रा गोबर (हरो घास खावे सु गोबर हुव तिको) सहित नगर नारवा रो कीच। इण री अवधि १२ महीनों री गति तिर्यञ्च री, यह श्रावकपणे री घात करे। प्रत्याख्यानावरणीय रो चोक– क्रोध रो स्वभाव रेत री लकीर समान, मान रो स्वभाव काठ रे थम समान, माया रो स्वभाव चालते बैल रे पेशाब रे समान, लोभ रो स्वभाव चांस्यों रे अंजन या गाडी रे खंजन समान। इण री अवधि ४ महीनों री, गति मनुष्य री, यह साधुपणे री घात करे। संज्वलन रो चोक–क्रोध रो स्वभाव पाणी री लकीर समान, मान रो स्वभाव तृणों रे थंम समान, माया रो स्वभाव बांस रा छिलका समान, लोभ रो स्वभाव हल्दी पतंग रे रंग समान। इण रे क्रोध री अवधि दो महीनों री, मान री १ महीने री माया री १५ दिनों री, लोभ री अन्तर्मुहूर्त री, गति देवता री, यह वीतरागपणा री घात कर।

नोकषाय रा ६ भेद–हास्य, रति, अरति, भय, शोक जुगुप्सा (दुगु छा) स्त्रीवद, पुरुषवेद, नपुसकवद।

आयुष्य कर्म १६ प्रकारे बांधे– चार कारणों से नारकी रो आयुष्य बांधे–महाआरम्भी महापरिग्रही, पञ्चेन्द्रिय री घात करे, मद-मांस रो आहार करे। चार कारण से तिर्यञ्च रो आयुष्य बांधे– माया करे, गूढ माया कर, झूठ बोले, कूडा तोल कूडा माप कर।

ार कारण से मनुष्य रो आयुष्य बांधे—प्रकृति रो भद्रिक, प्रकृति रो
र्नत, अनुकम्पा रा परिणाम वाळो, मच्छरभाव, ईर्षाभाव रहित।
ार कारण से देवता रो आयुष्य बांधे—सराग संजम, संजमासंजमी—
दशविरति भावकरणो, अकाम निर्जरा, बाल-तप। आयुष्य कर्म
४ प्रकार सुं भोगवे—नारकी, तिर्यञ्च, मनुष्य, देवता।

नाम कर्म रा २ भेद—शुभ नाम, अशुभ नाम। शुभ नामकर्म
४ कारण सु बांध—काया रो सरल, भाषा रो सरल, भाव रो सरल,
विषमवाद जोग रहित। शुभ नाम कर्म १४ प्रकार सु भोगवे—इट्टा
(इष्ट) सदा (शब्द), इट्टा रुवा (रूप), इट्टा गंधा (गंध), इट्टा रसा
(रस), इट्टा फासा (स्पर्श), इट्टा गई (गति), इट्टा ठिई (स्थिति),
इट्टं लावण्ये कान्ति), इट्टा जसोकित्ती (यशः कीर्ति), इट्टा उट्ठाण
कम्म बल वीय पुरुषाकार पराक्रम, इट्टा स्सरया (इष्टस्वर), कंतस्सरया
(कान्तस्वर), पियस्सरया (प्रिय स्वर), मणुण्णस्सरया (मनोज्ञस्वर)।
अशुभ नाम कर्म ४ कारण सु बांध — काया रो वांको, भाषा रो
वांको, भाव रो वांको, विषमवाद योग सहित। अशुभ नाम कर्म १४
प्रकार सु भोगव — अणिट्ठा (जो इष्टकारी न हो) सदा, अणिट्ठा
रुवा अणिट्ठा गंधा, अणिट्ठा रसा, अणिट्ठा फासा, अणिट्ठा गई,
अणिट्ठा ठिई अणिट्ठे लावण्ये, अणिट्ठा जसोकित्ती, अणिट्ठा
उट्ठाणकम्म बल वीर्य पुरुषाकार पराक्रम, अणिट्ठास्सरया (अनिष्ट
स्वर), हीणस्सरया (हीनस्वर), दीणस्सरया (दीनस्वर), अकंत-
स्सरया (अकान्तस्वर)।

गोत्र कर्म रा दो भेद–ऊंचगोत्र, नीचगोत्र। ऊंचगोत्र ८ प्रकार सुं बांधे– जाति रो मद नहीं करे, कुल रो मद नहीं करे, बल रो मद नहीं करे, रूप रो मद नहीं करे, तप रो मद नहीं करे, सूत्र रो मद नहीं करे, लाभ रो मद नहीं करे, ऐश्वर्य (ठकुराई) रो मद नहीं करे। ऊंचगोत्र आठ प्रकार सुं भोगवे–जाति, कुल, बल, रूप, तप, सूत्र, लाभ, ऐश्वर्य विशिष्ट (ऊंच) पावे। नीचगोत्र ८ प्रकार सु बांधे – जाति रो मद करे, कुल रो मद करे, बल रो मद करे, रूप रो मद करे, तप रो मद करे, सूत्र रो मद करे लाभ रो मद करे, ऐश्वर्य रो मद करे। नीचगोत्र ८ प्रकार सुं भोगवे – जाति, कुल, बल, रूप, तप, सूत्र, लाभ, ऐश्वर्य सु हीन होवे।

अन्तराय कर्म ५ प्रकार सुं बांधे–दानान्तराय, लाभान्तराय, भोगान्तराय, उपभोगान्तराय, वीर्यान्तराय। दान, लाभ, भोग, उप भोग वीर्य में अन्तराय देवे सु अन्तराय कर्म बान्धे। अन्तराय कर्म ५ प्रकार सु भोगवे–दानान्तराय, लाभान्तराय, भोगान्तराय, उप भोगान्तराय, वीर्यान्तराय अर्थात् दान, लाभ, भोग, उपभोग में अन्तराय लागे, इनकी प्राप्ति होवे नहीं। वीर्य फोड़ सके नहीं।

सेवं भंते ! सेवं भंते !!

नोट—८ कर्म बान्धवे रो विस्तृत वर्णन श्रीभगवती सूत्र रा शतक ८ उद्देशा ९ में है।

सूत्र श्री पन्नवणाजी रे पद २३ वें उद्देशा २ में अबाधा काल रो थोकड़ो चाले सो कहे छै –

समुच्चय जीव ५ ज्ञानावरणीय, ४ दर्शनावरणीय और ५ अन्तराय ये १४ प्रकृतियाँ जघन्य अन्तर्मुहूर्त री बांधे। ५ निद्रा और १ असातावेदनीय ये ६ प्रकृतियाँ एक सागर रे सातिया तीन भाग पल रे असंख्यातवें भाग ऊणी बांधे। २० ही प्रकृतियाँ उत्कृष्टी ३० कोड़ाकोड़ी सागर री बांधे। अबाधाकाल ३००० तीन हजार वर्ष रो। एकेन्द्रिय बांधे तो जघन्य एक सागर र सातिया तीन भाग, बेइन्द्रिय २५ सागर र सातिया तीन भाग, तेइन्द्रिय ५० सागर र सातिया तीन भाग, चौइन्द्रिय १०० सौ सागर रे सातिया तीन भाग, असन्नी पञ्चेन्द्रिय १००० एक हजार सागर र सातिया तीन भाग, सब में जघन्य पल र असंख्यातवें भाग ऊणी और उत्कृष्टी सब में पूरी। सन्नीपञ्चेन्द्रिय में १४ प्रकृति बांधे तो जघन्य अन्तर्मुहूर्त ६ प्रकृति बांधे तो जघन्य अन्तो कोड़ा कोड़ी(१ कोड़ाकोड़ी सुं कुछ कम) सागर री, उत्कृष्टी ३० कोड़ाकोड़ी सागर री, अबाधा काल ३००० वर्ष रो। ← २० ही प्रकृतियाँ

(२१) साता वेदनीय रा दो भेद – साम्परायिक साता वेदनीय और इरियावहिय साता वेदनीय। इरियावहिय साता वेदनीय बन्ध री स्थिति २ समय री, साम्परायिक सातावेदनीय बन्ध समुच्चय जीव री अपेक्षा जघन्य १२ मुहूर्त, उत्कृष्ट १५ कोड़ाकोड़ी सागरोपम, अबाधा काल १५०० पन्द्रह सौ वर्ष रो। एकेन्द्रिय बांधे तो

एक सागर रे सातियो डेढ़ भाग पल्य रे असंख्यातवें भाग ऊणी, उत्कृष्टी पूरी। बेइन्द्रिय २५ सागर रे सातीया डेढ भाग, तेइन्द्रिय ५० सागर रे सातीया डेढ भाग, चौइन्द्रिय १०० सागर रे सातीया डेढ भाग, असन्नी पञ्चेन्द्रिय १००० एक हजार सागर र सातिया डेढ भाग, जघन्य सब में पल्य र असंख्यातवें भाग ऊणी, उत्कृष्टी सब में पूरी। सन्नी पञ्चेन्द्रिय बान्धे तो जघन्य १२ मुहूर्त उत्कृष्टी १५ कोडाकोडी सागर री, अबाधाकाल १५०० पन्द्रह सौ वर्षों रो।

(२२ से ४६ तक) मोहनीय कर्म री २८ प्रकृतियाँ–३ चोक (अनन्तानुबन्धी क्रोध, मान, माया, लोभ, अप्रत्याख्यानी क्रोध, मान, माया लोभ, प्रत्याख्यानावरण क्रोध, मान, माया, लोभ) री १२ प्रकृतियाँ एकेन्द्रिय जीव बान्धे तो जघन्य १ सागर रे सातिया चार भाग में पल्य रे असंख्यातवें भाग ऊणी, संज्वलन र क्रोध री जघन्य २ महीनों री, मान री जघन्य १ महीने री, माया री जघन्य १५ दिन री, लोभ री जघन्य अन्तमुहूर्त री, उत्कृष्टी १६ ही प्रकृतियों ४ ० कोडाकोडी सागर री, अबाधा काल ४० ० चार हजार वर्षों री। ये १६ प्रकृतियाँ एकेन्द्रिय बांधे तो एक सागर रे सातिया चार भाग, बेइन्द्रिय २५ सागर रे सातिया चार भाग, तेइन्द्रिय ५ सागर रे सातिया चार भाग चौइन्द्रिय १०० सागर रे सातिया चार भाग, असन्नी पञ्चे-न्द्रिय १००० एक हजार सागर रे सातिया चार भाग, जघन्य सब में पल्य रे असंख्यातवें भाग ऊणी उत्कृष्टी सब में पूरी। सन्नी पञ्चेन्द्रिय में १२ प्रकृतियाँ तो जघन्य अन्तो कोडाकोडी सागर री और संज्वलन

क्रोध री जघन्य २ महीनों री, मान री एक महीने री, माया री १५ दिन री, लोभ री अन्तर्मुहूर्त री, उत्कृष्टी १६ ही प्रकृतियाँ ४० कोडाकोडी सागर री, अबाधाकाल ४००० चार हजार वर्षो रो। हास्य, रति ये २ प्रकृतियाँ समुच्चय जीव में एक सागर रे सातिया एक भाग, पल्य र असंख्यातवें भाग ऊणी। पुरुषवेद री जघन्य ८ वर्ष, उत्कृष्टी तीनों ही प्रकृतियों री १० दस कोडाकोडी सागर री, अबाधा काल १००० वर्षरो। एकेन्द्रिय में एक सागर रे सातियो एक भाग, बेइन्द्रिय में २५ सागर रे सातियो एक भाग, तेइन्द्रिय में ५० सागर रे सातियो एक भाग, चौइन्द्रिय में १०० सौ सागर रे सातियो एक भाग, असन्नी पञ्चेन्द्रिय में १००० हजार सागर र सातियो एक भाग, जघन्य सब में पल्य र असंख्यातवें भाग ऊणी, उत्कृष्टी सब में पूरी। सन्नी पञ्चेन्द्रिय में हास्य रति ये दो प्रकृतियाँ जघन्य अन्तो कोडाकोडी सागर री, पुरुषवेद री जघन्य ८ वर्ष, उत्कृष्टी तीनों ही प्रकृतियाँ १० दस कोडाकोडी सागर री, अबाधाकाल १००० एक हजार वर्ष रो।

अरति, भय, शोक, दुगु छा (जुगुप्सा), नपुंसकवेद ये ५ पांच प्रकृतियाँ समुच्चय जीव में जघन्य एक सागर र सातिया दो भाग पल्य रे असंख्यातवें भाग ऊणी, उत्कृष्टी २० बीस कोडाकोडी सागर री, अबाधा काल २००० दो हजार वर्षो रो। एकेन्द्रिय में एक सागर रे सातिया दो भाग बेइन्द्रिय में २५ सागर रे सातिया दो भाग, तेइन्द्रिय में ५० सागर रे सातिया दो भाग, चौइन्द्रिय में १००

(१४८-१९८) नामकर्म री ६३ और गोत्रकर्म री २ प्रकृतियाँ रो बन्ध-नरकगति नरकानुपूर्वी, वैक्रिय रो थोक (वैक्रियशरीर, अंगोपाङ्ग, बंधन, संघातन) ये ६ प्रकृतियाँ समुच्चय जीव बांधे तो जघन्य १००० हजार सागर र सातिया दो भाग पल्य र असंख्यातवें भाग ऊणी, उत्कृष्ट २० कोडाकोडी सागर री अबाधा काल २००० वर्षों रो। एकेन्द्रिय, बेइन्द्रिय, तेइन्द्रिय चौइन्द्रिय नहीं बांधे, असन्नी पञ्चेन्द्रिय बांधे तो जघन्य १००० एक हजार सागर र सातिया दो भाग पल्य रे असंख्यातवें भाग ऊणी, उत्कृष्टी पूरी। सन्नी पञ्चेन्द्रिय बांधे तो जघन्य अन्तो कोडाकोडी सागर री, उत्कृष्ट २० बीस कोडाकोडी सागर री, अबाधाकाल २००० वर्षों रो। देवगति, देवानुपूर्वी ये २ प्रकृतियाँ समुच्चय जीव बांधे तो जघन्य १००० एक हजार सागर रे सातिया एक भाग पल्य र असंख्यातवें भाग ऊणी, उत्कृष्ट १० दस कोडाकोडी सागर री, अबाधा काल १००० एक हजार वर्षों रो। एकेन्द्रिय, बेइन्द्रिय, तेइन्द्रिय, चौइन्द्रिय नहीं बांधे। असन्नी पञ्चेन्द्रिय बांधे तो जघन्य १००० एक हजार सागर र सातिया एक भाग पल्य र असंख्यातवें भाग ऊणी, उत्कृष्टी पूरी। सन्नी पञ्चेन्द्रिय बांधे तो जघन्य अन्तोकोडाकोडी सागर री, उत्कृष्ट १० दस कोडाकोडी सागर री, अबाधाकाल १००० एक हजार वर्षों रो।

मनुष्यगति मनुष्यानुपूर्वी ये २ प्रकृतियाँ समुच्चय जीव बांधे तो जघन्य १ सागर सातिया डेढ भाग पल्य रे असंख्यातवें भाग

ऊणी, उत्कृष्ट १५ कोडाकोड सागर री, अबाधा काल १५०० वर्षों रो, एकेन्द्रिय बांधे तो जघन्य एक सागर रे सातिया ढढ भाग, पल्य र असंख्यातवें भाग ऊणी, उत्कृष्ट पूरी। बेइन्द्रिय २५सागर र सातियो डेढ भाग, तेइन्द्रिय ५० सागर रे सातियो ढढ भाग, चौइन्द्रिय १०० सागर रे सातियो ढढ भाग, असन्नी पञ्चेन्द्रिय १००० एक हजार सागर रे सातियो डेढ भाग, जघन्य सब में पल्य असंख्यातवें भाग ऊणी, उत्कृष्टी सब में पूरी। सन्नी पञ्चेन्द्रिय बांधे तो जघन्य अन्तोकोडाकोडी सागर री, उत्कृष्ट १५ कोडाकोडी सागर री, अबाधा काल १५०० वर्षों रो।

तिर्यञ्च गति, तिर्यञ्चानुपूर्वी, एकेन्द्रिय, पञ्चेन्द्रिय, औदारिक, रो चोक (औदारिक शरीर, अङ्गोपाङ्ग, बन्धन, संघातन), तैजसत्रिक (तैजस शरीर, बन्धन, संघातन) कार्मणत्रिक (कार्मण शरीर, बन्धन संघातन), ४ माठा स्पर्श (खरदरो, भारी, शीत, रूक्ष), दुरभिगन्ध ये १८ प्रकृतियाँ समुच्चय जीव बांधे तो जघन्य एक सागर र सातिया दो भाग पल्य असंख्यातवें भाग ऊणी, उत्कृष्ट २० कोडाकोडी सागर, अबाधा काल २००० दो हजार वर्षों रो। एकेन्द्रिय बांधे तो एक सागर र सातिया दो भाग, बेइन्द्रिय २५ सागर रे सातिया दो भाग तेइन्द्रिय ५० सागर रे सातिया दो भाग, चौइन्द्रिय १०० सौ सागर रे सातिया दो भाग, असन्नी पञ्चेन्द्रिय १००० हजार सागर रे सातिया दो भाग, जघन्य सब में पल्य असंख्यातवें भाग ऊणी, उत्कृष्ट सब में पूरी। सन्नी पञ्चेन्द्रिय बांधे तो जघन्य

अन्तोकोडाकोडी सागर री, उत्कृष्ट २० बीस कोडाकोडी सागर री अबाधा काल २००० दो हजार वर्षों रो।

तीन विकलेन्द्रिय (बेइन्द्रिय, तेइन्द्रिय, चौइन्द्रिय), सूक्ष्मत्रिक (सूक्ष्मनाम साधारण नाम, अपर्याप्त नाम) ये ६ प्रकृतियाँ समुच्चय जीव बांधे तो जघन्य एक सागर रे पैंतीसिया नव भाग पल रे असंख्यातवें भाग ऊणी, उत्कृष्ट १८ कोडाकोडी सागर री, अबाधा काल १८०० अठारह सौ वर्षों रो। एकेन्द्रिय बांधे तो एक सागर रे पैंतीसिया नव भाग, बेइन्द्रिय २५ सागर रे पैंतीसिया नव भाग तेइन्द्रिय ५० सागर रे पैंतीसिया नव भाग चौइन्द्रिय १० सागर रे पैंतीसिया नव भाग असन्नी पञ्चेन्द्रिय १००० हजार सागर रे पैंतीसिया नव भाग, जघन्य सब में पल रे असंख्यातवें भाग ऊणी, उत्कृष्ट सब में पूरी। सन्नी पञ्चेन्द्रिय में जघन्य अन्तो कोडाकोडी सागर री, उत्कृष्ट १८ कोडाकोडी सागर री, अबाधा काल १८० वर्षों रो।

४ महा स्पर्श (खुहालो, हल्को, उन्हो चोपडयो) और १ सुरभिगन्ध ये ५ प्रकृतियाँ समुच्चय जीव बांधे तो जघन्य एक सागर रे सातियो एक भाग पल रे असंख्यातवें भाग ऊणी, उत्कृष्ट १० कोडाकोडी सागर री, अबाधा काल १० ० वर्षों रो। एकेन्द्रिय बांधे तो एक सागर रे सातियो एक भाग, बेइन्द्रिय २५ सागर रे सातियो एक भाग, तेइन्द्रिय ५ मागर रे सातियो एक भाग, चौइन्द्रिय १० सागर रे सातियो एक भाग, असन्नी पञ्चेन्द्रिय १०० हजार सागर रे सातियो एक भाग जघन्य सब में पल रे असंख्यातवें भाग ऊणी, उत्कृष्ट सब में पूरी।

सन्नी पञ्चेन्द्रिय में जघन्य अन्तो कोड़ाकोड़ी सागर री, उत्कृष्ट १० कोड़ाकोड़ी सागर री, अबाधा काल १००० वर्षों री।

आहारक रो चोक (आहारक शरीर, अङ्गोपाङ्ग, बन्धन, संघातन) और जिन नाम ये ५ प्रकृतियाँ समुच्चय जीव और सन्नी पञ्चेन्द्रिय बांधे तो जघन्य उत्कृष्ट अन्तो कोड़ाकोड़ी सागर री, अबाधा काल नत्थि।

५ वर्ण, ५ रस ये दस प्रकृतियाँ समुच्चय जीव बान्धे तो जघन्य एक सागर रे अठाईसिया चार भाग, पाँच भाग, छह भाग, सात भाग, आठ भाग, पल्य रे असंख्यातवें भाग ऊणी, उत्कृष्ट १० कोड़ाकोड़, १२॥ साढ़ी बारह कोड़ाकोड़, १५ कोड़ाकोड़, १७॥ साढ़ी सतरह कोड़ाकोड़, २० कोड़ाकोड़ सागर री, अबाधा काल १००० वर्षों रो, १२५० वर्षों रो, १५०० वर्षों रो, १७५० वर्षों रो, २००० वर्षों रो,* पच्छाणुपूर्वी कहणी। एकेन्द्रिय बांधे तो एक सागर रे

---

* जैसे सफेद वर्ण, मीठो रस समुच्चय जीव बांधे तो जघन्य १ सागर रे अठाईसिया चार भाग पल्य रे असंख्यातवें भाग ऊणी उत्कृष्ट १० कोड़ाकोड़ी सागर री अबाधा काल १००० वर्षों रो। पीलो वर्ण, खाटो रस समुच्चय जीव बांधे तो जघन्य १ सागर रे अठाईसिया पाँच भाग पल्य रे असंख्यातवें भाग ऊणी उत्कृष्टी १२॥ साढ़ी बारह कोड़ाकोड़ी सागर री, अबाधा काल १२५० वर्षों रो। रातो वर्ण, कषायलो रस समुच्चय जीव बांधे तो जघन्य १ सागर रे अठाईसिया छह भाग पल्य रे असंख्यातवें भाग ऊणी उत्कृष्टी १५ कोड़ाकोड़ी सागर री, अबाधा काल १५०० वर्षों रो। नीलो वर्ण कड़वो रस समुच्चय जीव बांधे तो जघन्य १ सागर रे अठाईसिया सात भाग पल्य रे असंख्यातवें भाग ऊणी उत्कृष्ट १७॥ कोड़ाकोड़ी सागर री, अबाधा काल १७५० वर्षों रो। कालो वर्ण, तीखो रस समुच्चय जीव बांधे तो जघन्य १ सागर रे अठाईसिया आठ भाग पल्य रे असंख्यातवें भाग ऊणी उत्कृष्टी २० कोड़ाकोड़ी सागर री अबाधा काल २००० वर्षों रो।

अठ्ठाईसिया चार भाग आव ८ भाग, बइन्द्रिय २५ सागर रे अठाईसिया चार भाग आव ८ भाग, तेइन्द्रिय ५० सागर रे अठाईसिया चार भाग आव ८ भाग, चौइन्द्रिय १०० सागर र अठाईसिया चार भाग आव ८ भाग असन्नी पञ्चेन्द्रिय १००० हजार सागर रे अठाईसिया चार भाग आव ८ भाग, जघन्य सब में पल रे असंख्यातवें भाग ऊणी, उत्कृष्ट सब में पूरी। सन्नी पञ्चेन्द्रिय बान्धे तो जघन्य अन्तो कोडाकोड सागर री, उत्कृष्ट १० कोडाकोड १२॥ कोडा कोड, १५ कोडाकोड, १७॥ कोडाकोड, २० कोडाकोड सागर री, अबाधाकाल १००० वर्षों रो, १२५ वर्षों रो, १५०० वर्षों रो, १७५० वर्षों रो, २ ०० वर्षों रो, पच्छाणुपूर्वी करणी।

६ संघयण, ६ संठाण ये १२ प्रकृतियाँ समुच्चय जीव बांधे तो जघन्य एक सागर रे पैंतीसिया पांच भाग, छह भाग, सात भाग, आठ भाग, नौ भाग, दस भाग जघन्य पल रे असंख्यातवें भाग ऊणी उत्कृष्ट १० कोडाकोड, १२ कोडाकोड, १४ कोडाकोड, १६ कोडाकोड, १८ कोडाकोड, २० कोडाकोड सागर री, अबाधा काल १ ० –१२००–१४० –१६ –१८००–२००० वर्षों रो। एकेन्द्रिय में एक सागर र पैंतीसिया पांच भाग आव दस भाग, बेइन्द्रिय में २५ सागर रे, तेइन्द्रिय में ५० सागर रे, चौइन्द्रिय में १ सागर रे, असन्नी पञ्चेन्द्रिय में १००० सागर रे सब में जघन्य पैंतीसिया पांच भाग आव दस भाग पल रे असख्यातवें भाग ऊणी, उत्कृष्ट सब में पूरी। सन्नी पञ्चेन्द्रिय बान्ध तो जघन्य अन्तो

कोडाकोडी सागर री, उत्कृष्ट १० कोडाकोड, १२ कोडाकोड, १४ कोडाकोड, १६ कोडाकोड, १८ कोडाकोड, २० कोडाकोड सागर री, अबाधा काल १०००-१२००-१४००-१६००-१८००-२००० वर्षों रो।

सूक्ष्मत्रिक बर्जी ने स्थावर दशक मांयली ७ प्रकृतियाँ (स्थावर, अस्थिर, अशुभ, दुर्भग, दु:स्वर, अनादेय, अयश:कीर्ति), जिन नाम बर्जी ने ७ प्रत्येक प्रकृतियाँ (पराघात, उच्छ्वास, आतप, उद्योत, अगुरुलघु, निर्माण, उपघात), त्रस दशक मांयली ४ प्रकृतियाँ (त्रस नाम, बादर नाम, प्रत्येक नाम, पर्याप्त नाम), नीचगोत्र, अशुभ विहायोगति य २० प्रकृतियाँ तिर्यञ्च गति माफक एक सागर रे सातिया दो भाग, उत्कृष्ट २० कोडाकोडी सागर री कह देणी।

त्रसदशक मांयली ६ प्रकृतियाँ (स्थिर, शुभ, सुभग, सुस्वर, आदेय, यश:कीर्ति) उच्च गोत्र शुभ विहायोगति, ये ८ प्रकृतियाँ में यश:कीर्ति और उच्च गोत्र समुच्चय जीव बांधे तो जघन्य ८ मुहूर्त री, छह प्रकृतियों एक सागर रे सातियो एक भाग, पल्यरे असंख्यातवें भाग ऊणी, उत्कृष्ट १० कोडाकोडी सागर री, अबाधा काल १००० वर्षों रो। एकेन्द्रिय बांधे तो आठों ही प्रकृतियाँ एक सागर रे सातियो एक भाग, बेइन्द्रिय २५ सागर र सातियो एक भाग, तेइन्द्रिय ५० सागर र सातियो एक भाग, चौइन्द्रिय १०० सागर रे सातियो एक भाग, असन्नी पञ्चेन्द्रिय १००० सागर र सातियो एक भाग, जघन्य मध में पल्यर असंख्यातवें भाग ऊणी, उत्कृष्ट सब में पूरी। सन्नी पञ्चेन्द्रिय में २ प्रकृतियाँ जघन्य ८ मुहूर्त री और ६ प्रकृतियाँ

अन्तोकोडाकोड सागर री, उत्कृष्ट १० दस कोडाकोड सागर री, अबाधा काल १००० वर्षों रो।

सेवं भंते ! सेवं भंते !!

सूत्र श्री पन्नवणाजी र पद २४ वं में बांधता बांधे रा थाकड़ा चाले सो कहे है —

अहो भगवान्! समुचय एक जीव ज्ञानावरणीय कर्म बांधतो थको कितनी कर्म प्रकृतियाँ बांधे ? हे गौतम ! ७ बांधे, ८ बांधे, ६ बांधे। इमी तरह मनुष्य भी ७ बांधे, ८ बांधे, ६ बांधे। शेष नरकादिक २३ दण्डक ७ बांधे ८ बांधे। अहो भगवान् ! समुचय घणा जीव ज्ञानावरणीय कर्म बांधता थका कितनी कर्म प्रकृतियाँ बांधे? हे गौतम ! ७ बांधे, ८ बांधे, ६ बांधे। ७–८ रा शाश्वता, ६ रा अशाश्वता, जिस रा भांगा ३—सब्वे वि ताव हुज्जा ७–८ रा, ७–८ रा घणा ६ रो एक, ७–८ रा घणा ६ रा घणा।

अहो भगवान ! घणा नारकी रा नेरीया ज्ञानावरणीय कर्म बांधता थका कितनी कर्म प्रकृतियाँ बांधे ? हे गौतम ! ७ बांधे, ८ बांधे। ७ रा शाश्वता ८ रा अशाश्वता जिस रा भांगा ३—सब्वे वि ताव हुज्जा ७ रा, ७ रा घणा ८ रो एक, ७ रा घणा ८ रा घणा। इमी तरह ३ विकलेन्द्रिय, तिर्यञ्च पञ्चेन्द्रिय और १३ दण्डक देवता रा ये १७ दंडक कह देणा। अहो भगवान् ! ५ स्थावर ज्ञानावरणीय कर्म बांधता थका कितनी कर्म प्रकृतियाँ बांधे? हे गौतम! ७ भी बांधे ८ भी बांधे, भांगो अभंग। अहो भगवान् ! घणा

मनुष्य ज्ञानावरणीय कर्म बांधता थका कितनी कर्म प्रकृतियाँ बांधे ? हे गौतम ! ७ बांधे ८ बांधे, ६ बांधे । ७ रा शाश्वता, ८ ६ रा अशाश्वता जिण रा भांगा ६ हुवे—असंयोगी १, दोसंयोगी ४, तीनसंयोगी ४ । (१) सब्वे वि ताव हुज्जा ७ रा, (२) ७ रा घणा ८ रो एक, (३) ७ रा घणा ८ रा घणा, (४) ७ रा घणा ६ रो एक, (५) ७ रा घणा ६ रा घणा, (६) ७ रा घणा ८ रो एक ६ रो एक, (७) ७ रा घणा ८ रो एक ६ रा घणा । (८) ७ रा घणा ८ रा घणा ६ रो एक (६) ७ रा घणा ८ रा घणा ६ रा घणा।

समुच्चय जीव रा ३ भांगा १८ दण्डक रा ५४ भांगा, मनुष्य रा ६ भांगा, सब मिला कर ज्ञानावरणीय कर्म रा ६६ भांगा हुवा।

ज्ञानावरणीय कयो उसी तरह दर्शनावरणीय, नाम, गोत्र, अन्तराय कह देणा—६६×५=३३० भांगा हुवा ।

अहो भगवान् ! समुच्चय एक जीव वेदनीय कर्म बांधतो थको कितनी प्रकृतियाँ बांधे ? हे गौतम ! ७ बांधे, ८ बांधे, ६ बांधे, १ बांधे । इसी तरह मनुष्य रो दण्डक कह देणो । शेष २३ दण्डक समुच्चय एक व न आसरी ७ बांधे, ८ बांधे । समुच्चय घणा जीव आसरी ७ बांधे, ८ बांधे, ६ बांधे, १ बांधे । ७—८—१ रा शाश्वता, ६ रा अशाश्वता जिण रा भांगा ३—सब्वे वि ताव हुज्जा ७—८—१रा, ७—८—१ रा घणा ६ रो एक, ७—८—१ रा घणा ६ रा घणा।

अहो भगवान् ! घणा नारकी रा नेरीया वेदनीय कर्म बांधता थका कितनी कर्म प्रकृतियाँ बांधे ? हे गौतम ! ७ बांधे, ८ बांधे । ७ रा

शाश्वता ८ रा अशाश्वता त्रिय रा भांगा ३ पूर्ववत्। इसी तरह ३ विकलेन्द्रिय तिर्यञ्च पंचेन्द्रिय और १३ दण्डक देवता रा कह देणा। अहो भगवान्! ५ स्थावर वेदनीय कर्म बांधता थका कितनी कर्म प्रकृतियाँ बांधे? हे गौतम! ७ भी बांधे, ८ भी बांधे, भांगो अभंग। अहो भगवान्! घणा मनुष्य वेदनीय कर्म बांधता थका कितनी कर्म प्रकृतियाँ बांधे? हे गौतम! ७ बांधे, ८ बांधे, ६ बांधे, १ बांधे। ७–१ रा शाश्वता, ८–६ रा अशाश्वता, त्रिय रा भांगा ६ होवे अभंगोगी १ दो संजोगी ४, तीन संजोगी ४, (१) सम्बे वि ताव हुज्जा ७–१ रा, (२) ७–१ रा घणा, ८ रो एक, (३) ७–१ रा घणा ८ रा घणा, (४) ७–१ रा घणा ६ रो एक (५) ७–१ रा घणा, ६ रा घणा, (६) ७–१ रा घणा, ८ रो एक ६ रो एक, (७) ७–१ रा घणा ८ रो एक ६ रा घणा, (८) ७–१रा घणा ८ रा घणा ६ रो एक, (६) ७–१ रा घणा ८ रा घणा ६ रा घणा = ६६।

अहो भगवान्! समुच्चय एक जीव मोहनीय कर्म बांधतो थको कितनी कर्म प्रकृतियाँ बांधे? हे गौतम! ७ बांधे, ८ बांधे। इसी तरह २४ दण्डक कह देणा। अहो भगवान्! समुच्चय घणा जीव मोहनीय कर्म बांधता थका कितनी कर्म प्रकृतियाँ बांधे? हे गौतम ७ भी बांधे, ८ भी बांधे, भांगो अभंग। इसी तरह ५ स्थावर कह देणा। अहो भगवान्! घणा नारकी रा नेरीया मोहनीय कर्म बांधता थका कितनी कर्म प्रकृतियाँ बांधे? हे गौतम! ७ बांधे ८ बांधे। ७ रा शाश्वता, ८ रा अशाश्वता त्रिय रा भांगा ३ पूर्ववत्।

नारकी रा नेरीया क्या उमी तरह ही १८ दण्डक मार कह देणा = १८×३=५७ मांगा हुआ।

अहो भगवान् ! समुच्चय एक जीव तथा घणा जीव आयुष्य कर्म बांधता थका कितनी कर्म प्रकृतियाँ बांधे ? हे गौतम ! ८ बांधे। इस तरह २४ ही दण्डक कह देणा।

मांगा ३३०+६६+५७ सबे मिल कर ४५३ मांगा हुआ।

सेवं भंते ! सेवं भंते !!

सूत्र श्री पन्नवणाजी र पद ९५ वें में बांधतो थको बेदे रो थोकड़ो चाले सा कहे छे'—

अहो भगवान ! समुच्चय एक जीव, समुच्चय घणा जीव ज्ञानावरणीय कर्म बांधता थका कितनी कर्म प्रकृतियाँ वेदे ? हे गौतम ! नियमा आठ कर्म वेदे। इसी तरह नारकी आदि २४ दण्डक कह देणा। ज्ञानावरणीय कर्म कयो इसी तरह ६ कर्म (वेदनीय छोड़ कर) कह देणा।

अहो भगवान ! समुच्चय एक जीव वेदनीय कर्म बांधतो थको कितनी कर्मप्रकृतियाँ वेदे ? हे गौतम ! ८ अथवा ७ अथवा ४ कर्म वेदे। इसी तरह मनुष्य कह देणा। नारकी आदि २३ दण्डक नियमा ८ कर्म वेदे। अहो भगवान् ! समुच्चय घणा जीव वेदनीय कर्म बांधता थका कितनी कर्म प्रकृतियाँ वेदे ? हे गौतम ! ८-७-४ वेदे। ८-४ रा शाश्वता। ७ रा अशाश्वता जिण रा

भांगा ३ हुवा सम्भे वि ताप हुज्या ८–४ रा, ८–४ रा घणा ७ रो एक, ८–४ रा पणा ७ रा घणा।
इसी तरह मनुष्य कह दया। नारकी रा नरीया आदि २३ दंडक वेदनीय कर्म बांधता थका नियमा ८ कर्म बंदे। इत्त भांगा ६ हुवा।

सेवं भंते ! सेव मंत !!

सूत्र श्री पन्नवणाजी र पद २६ वें में वेदना बांधे रा थाकड़ा चाले सा कहे हैं—

अहो भगवान् ! समुच्चय एक जीव ज्ञानावरणीय कर्म वेदता थको कितनी कर्म प्रकृतियों बांधे ? हे गौतम ! ७–८–६–१ बांधे। इसी तरह मनुष्य कह देखो। बाकी नारकी आदि २३ दण्डक एक जीव आसरी ज्ञानावरणीय कर्म वेदता थको ७–८ कर्म बांधे। समुच्चय घणा जीव आसरी ज्ञानावरणीय कर्म वेदता थका ७–८–६–१ कर्म बांधे जिस में ७–८ बांधने वाला शाश्वता, ६–१ बांधने वाला अशाश्वता जिस रा भांगा ९ हुवे—असंजोगी १, दो संजोगी ४, तीन संजोगी ४। (१) सम्भे वि ताव हुज्जा ७–८ रा, (२) ७–८ रा घणा ६ रो एक, (३) ७–८ रा घणा ६ रा घणा, (४) ७–८ रा घणा १ रो एक, (५) ७–८ रा घणा १ रा घणा, (६) ७–८ रा घणा ६ रो एक, १ रो एक। (७) ७–८ रा घणा ६ रो एक, १ रा घणा। (८) ७–८ रा घणा ६ रा घणा, १ रो एक। (९) ७–८ रा घणा ६ रा घणा, १ रा घणा।

घणा नारकी रा नेरीया, (५ स्थावर, मनुष्य वर्ज कर) १८ ही दण्डक ज्ञानावरणीय कर्म वेदता थका ७–८ कर्म बांधे। ७ रा शाश्वता, ८ रा अशाश्वता जिण रा भांगा ३ हुवा। पांच स्थावर रा घणा जीव ज्ञानावरणीय कर्म वेदता थका बांधे, ७ कर्म बांधने वाला ही घणा ८ कर्म बांधने वाला ही घणा भांगो अभंग। घणा मनुष्य ज्ञानावरणीय कर्म वेदता थका ७–८–६–१ कर्म बांध। ७ रा शाश्वता ८–६–१ रा अशाश्वता जिण रा भांगा २७ हुवे–असंयोगी १, दो संयोगी ६, तीन संयोगी १२, चार संयोगी ८। (१) सब्वे वि ताव हुज्जा ७ रा, (२) ७ रा घणा ८ रो एक, (३) ७ रा घणा ८ रा घणा, (४) ७ रा घणा ६ रो एक (५) ७ रा घणा ६ रा घणा (६) ७ रा घणा १ रो एक, (७) ७ रा घणा १रा घणा,(२११–२१३–२३१–२३३),(८) ७ रा घणा ८ रो एक ६ रो एक, (९) ७ रा घणा ८ रो एक ६ रा घणा, (१०) ७ रा घणा ८ रा घणा ६ रो एक, (११) ७ रा घणा ८ रा घणा ६ रा घणा। (१२) ७ रा घणा ८ रो एक १ रो एक (१३) ७ रा घणा ८ रो एक १ रा घणा, (१४) ७ रा घणा ८ रा घणा १ रो एक, (१५) ७ रा घणा ८ रा घणा १ रा घणा,(१६) ७ रा घणा ६ रो एक १ रो एक, (१७) ७ रा घणा ६ रो एक १ रा घणा, (१८) ७ रा घणा ६ रा घणा १ रो एक, (१९) ७ रा घणा ६ रा घणा १ रा घणा। (३१११–३११३–३१३१–३१३३–३३११–३३१३–३३३१–३३३३)

(२०) ७ रा घणा ८ रो एक ६ रो एक १ रो एक,
(२१) ७ रा घणा ८ रो एक ६ रो एक १ रा घणा,
(२२) ७ रा घणा ८ रो एक ६ रा घणा १ रो एक,
(२३) ७ रा घणा ८ रो एक ६ रा घणा १ रा घणा,
(२४) ७ रा घणा ८ रा घणा ६ रो एक १ रो एक,
(२५) ७ रा घणा ८ रा घणा ६ रो एक १ रा घणा,
(२६) ७ रा घणा ८ रा घणा ६ रा घणा १ रो एक,
(२७) ७ रा घणा ८ रा घणा ६ रा घणा १ रा घणा।
९+५४+२७=९०

जिम तरह ज्ञानावरणीय कर्म रा कह्या उणी तरह अज्ञानावरणीय और अन्तराय कर्म रा कह देणा ९०+९० =१८०।

अहो भगवान्! समुच्चय एक जीव वेदनीय कर्म वेदतो थको कितनी कर्म प्रकृतियाँ बान्धे? हे गौतम! ७-८-६-१ बांधे अथवा अबन्ध। इसी तरह मनुष्य कह देणो। बाकी नारकी आदी २३ दण्डक वेदनीय कर्म वेदता थका ७-८ कर्म बान्धे। अहो भगवान्! समुच्चय घणा जीव वेदनीय कर्म वेदता थका कितनी कर्म प्रकृतियाँ बान्धे? हे गौतम! ७-८-६-१ बांधे अथवा अबन्ध, जिण में ७-८-१ रा शाश्वता, ६ रा अबन्ध रा अशाश्वता, जिण रा भांगा ९ हुवे—असंयोगी १ दो संयोगी ४, तीन संयोगी ४। (१) सघळे ही थान हुवणा ७-८-१ रा, (२) ७-८-१ रा घणा ६ रो एक, (३) ७-८-१ रा घणा ६ रा घणा, (४) ७-८-१ रा घणा अबन्ध

रो एक, (५) ७-८-१ रा घणा, अबन्ध रा घणा। (६) ७-८-१ रा घणा ६ रो एक, अबन्ध रो एक (७) ७-८-१ रा घणा ६ रो एक, अबन्ध रा घणा (८) ७-८-१रा घणा ६ रा घणा, अबन्ध रो एक (९) ७-८-१ रा घणा ६ रा घणा अबन्ध रा घणा।

अहो भगवान्! घणा नारकी रा नेरीया आदि १८ दण्डक (५ स्थावर और मनुष्य वर्जी ने) वेदनीय कर्म वेदता थका कितनी कर्म प्रकृतियाँ बान्धे? हे गौतम! ७-८ बांधे। ७ रा शाश्वता, ८ रा अशाश्वता, त्रिय रा भांगा ३-३ करके हुवे १८×३=५४।

घणा ५ स्थावर रा जीव वेदनीय कर्म वेदता थका ७ ही बांधे, ८ ही बांधे, भांगो अभंग।

घणा मनुष्य वेदनीय कर्म वेदता थका ७-८-६-१ बांधे, अबंध, जिण में ७-१ रा शाश्वता, ८-६ रा, अबन्ध रा अशाश्वता जिण रा भांगा २७ हुवे-असंयोगी १ दो संयोगी ६, तीन संयोगी १२, चार संयोगी ८ कुल भांगा २७ हुवे। ९+५४+२७=९०।

जिस तरह वेदनीय कर्म कयो उसी तरह आयुष्य, नाम, गौत्र कह देणा। ९०+९०+९०=२७०।

अहो भगवान्! समुच्चय एक जीव मोहनीय कर्म वेदतो थको कितनी कर्म प्रकृतियाँ बान्धे? हे गौतम! ७-८-६ बान्धे। इसी तरह मनुष्य कह देणा। नारकी आदि २३ दण्डक ७-८ बान्धे। समुच्चय घणा जीव मोहनीय कर्म वेदता थका ७-८-६ बांधे, जिण में ७-८ रा शाश्वता, ६ रा अशाश्वता, जिण रा भांगा ३ हुवे। घणा नारकी

रा नेरीया मोहनीय कर्म वेदता थका ७ बांध, ८ बांधे। ७ रा शाश्वता, ८ रा अशाश्वता, बिना रा भांगा ३ हुव। इसी तरह १७ दण्डक और कह दया। थका ५ स्थावर रा जीव मोहनीय कर्म वेदता थका ७ ही बांधे, ८ ही बांध भांगो अभंग। थका मनुष्य मोहनीय कर्म वेदता थका ७ बान्ध, ८ बांध, ६ बांध, ७ रा शाश्वता, ८–६ रा अशाश्वता, बिना रा भांगा ६ हुव– असंयोगी १, दो संयोगी ४, तीन संयोगी ४। भांगा ३+५४+६=६६। ७ कर्म× ६०=६३०+६६=६६६ भांगा। भांगों रो खुलासो इस प्रकार है–

समुच्चय जीव में ७ कर्मों रा (मोहनीय कर्म छोड़ कर) ६–६ भांगा=६३। मोहनीय रा ३ भांगा, इस तरह समुच्चय जीव रा ६६ भांगा हुवा।

पांच स्थावर में भांगा नहिं। १८ दण्डक (मनुष्य वर्जनि) ३–३ भांगा=१८×३=५४। इणां ने ८ कर्मों सु गुणा करता सु ५४×८=४३२ भांगा हुवा।

मनुष्य में ७ कर्मों रा (मोहनीय वर्जी ने) २७–२७ भांगा हुवे २७×७=१८८। मोहनीय कर्म रा ६ भांगा, सब मिला कर १८८ भांगा हुवा। कुल मिला कर ६६+४३२+१८८=६६६ भांगा हुवा।

सेवं भंते ! सेवं भंते !!

सूत्र श्री पन्नवणाजी र पद २७ वें में वेदना वेद रा थोकड़ा चाले सो कहे छै—

अहो भगवान ! समुच्चय १ जीव ज्ञानावरणीय कर्म वेदतो थको कितनी कर्म प्रकृतियाँ वेदे ? हे गौतम ! ८ वेद, ७ वेदे। इसी तरह मनुष्य कह देणा। एक जीव नारकी आदि २३ दंडक में नियमा ८ कर्म वेदे। समुच्चय घणा जीव ज्ञानावरणीय कर्म वेदता थका ८ कर्म वेद, ७ कर्म वेदे, ८ रा शाश्वता ७ रा अशाश्वता जिणरा भांगा३ हुवे। मनुष्य वर्ज कर शेष२३दण्डक ज्ञानावरणीय वेदता थका नियमा ८ कर्म वेदे। मनुष्य समुच्चय जीव माफिक कह देणा ३+३=६ भांगा।

जिम तरह ज्ञानावरणीय कर्म कयो उसी तरह दर्शनावरणीय और अन्तराय कर्म कह देणा ६+६=१२ भांगा।

अहो भगवान ! समुच्चय १ जीव वेदनीय कर्म वेदतो थको कितनी कर्म प्रकृतियाँ वेदे ? हे गौतम ! ८ वदे, ७ वेद, ४ वदे। इसी तरह मनुष्य कह देणा। नारकी आदि २३ दण्डक रा जीव एक जीव आसरी नियमा ८ कर्म वदे। समुच्चय घणा जीव वेदनीय कर्म वेदता थका ८ वद, ७ वदे, ४ वद, ८—४ रा शाश्वता, ७ रा अशाश्वता, जिण रा भांगा ३ हुवे। इसी तरह मनुष्य कह देणा। घणा जीव नारकी आदि २३ दण्डक वेदनीय कर्म वेदता थका नियमा ८ कर्म वद ६ भांगा।

जिम तरह वदनीय कर्म कयो उसी तरह आयुष्य, नाम, गोत्र,

का हवा ६+६+६=१८ भांगा।

महा भगवान्! समुच्चय एक जीव तथा घणा जीव मोहनीय कर्म वदता थका कितनी कर्म प्रकृतियाँ बन्धे? इ गाथा १८ ही घर। इसी तरह नारकी आदि २४ दण्डक कह ऐसा ७×६=४० भांगा (सात कम आसरी २१ समुच्चय रा और २१ मनुष्य रा=४२)

बांधता बांध रा ४५१ भांगा, बांधता बन्धे रा ६, वदता बांध रा ६०६ और वदता बन्धे रा ४२ सब भांगा ११६७ हुवा।

समुच्चय जीव रो १ बोल और २४ दण्डक रा २४ बोल= २५×८कर्म=२००बोल हुवा। बांधतो बांध रा २० बोल, बांधता वद रा २०० बोल, वदता बांध रा २०० बोल और वदता बन्धे रा २० बोल, कुल ८०० बोल हुवा। ८०० बोल री पंधा रो थोकड़ा सम्पूर्ण।

सेवं भंते ! सेवं भंते !!

सूत्र श्री पन्नवणाजी र पद २८ र उद्देशा पहला में आहार पद रा थोकड़ा चाले सा कह छै। जैमाहयो गाथा—

सचित्ताहारट्ठी केवइ, किं वावि सव्वओ चेव।
कइ भाग सव्व खलु, परिणाम चेव बोद्धव्व॥
एगिंदिय सरीराइं, लोमाहारो तहेव मणभक्खी।
एएसिं तु पयाणं, विभावणा होंति कायव्वा॥

(१)सचित्त आहारी,(२)आहारार्थी,(३)कितना काल सु आहार री इच्छा होवे, (४) किस पुद्गलों रो आहार करे (५)सर्व आत्म

प्रदशों सु आहार करे, (६) कितना भाग आहार ग्रहण करे, (७) सर्व पुद्गलों को आहार ग्रहण करे, (८) आहार रो परिणाम, (६) एकेन्द्रिय शरीरादि रो आहार करे, (१०) लोमाहार, (११)मनोभक्षी आहार। इन ११ द्वारों रो विस्तार चाले सो कह छै—

(१)अहो भगवान! नारकी रा नेरीया किम्(क्या)सचित्त आहारा, अचित्त आहारा, मिश्र आहारा? हे गौतम! नो सचित्त आहारा, अचित्त आहारा, नो मिश्र आहारा। इसी तरह १२ दण्डक देवता रा कह देना। ५ स्थावर, ३ विकलेन्द्रिय, तिर्यञ्च पञ्चेन्द्रिय और मनुष्य इन १० दण्डक में आहार तीनु ही (सचित्त, अचित्त, मिश्र) प्रकार रो होवे। (२) अहो भगवान्! नारकी रा नेरीया आहार री इच्छा वाला होवे? हाँ गौतम! होवे। चौवीस ही दण्डकों में आहार री इच्छा होव।

(३) नारकी में आहार २ प्रकार रो–आभोग, अनाभोग। आभोग तो असंख्यात समय रो अन्तर्मुहूर्त रो, अनाभोग अनु समय अविरह (प्रतिसमय–निरन्तर)। असुरकुमार देवताओं में आहार २ प्रकार रो, अनाभोग अनुसमय अविरह (विरह रहित –निरन्तर)। आभोग निष्पतिए जघन्य चौथभक्त (१ दिन) सु, उत्कृष्ट १००० वर्ष साधिक सु। नागकुमार आदि नव निकाय रा देवता तथा वाणव्यन्तर देवता में आहार दो प्रकार रो–अनाभोग निष्पतिए तो अनुसमय अविरह, आभोग निष्पत्तिए जघन्य चौथ भक्त सु, उत्कृष्ट प्रत्येक दिवस सु। ज्योतिषी देवता में आहार

दो प्रकार रो– अणाभोग निष्पत्तिए तो अनुसमय अविरह, आभोग निष्पत्तिए जघन्य उत्कृष्ट प्रत्येक दिवस सु । वैमानिक देवता में आहार २ प्रकार रो– अणाभोग निष्पत्तिए तो अनुसमय अविरह, आभोग निष्पत्तिए पहले देवलोक र देवता गे जघन्य प्रत्येक दिवस सुं, उत्कृष्ट २० ० वर्ष सुं । दूसरा देवलोक रा देवता रो जघन्य प्रत्येक दिवस म्हाफेरे सु उत्कृष्ट २० ० वर्ष म्हाफेर सु । तीसरा देवलोक सु लेकर सर्वार्थसिद्ध विमान तक जितना सागर री स्थिति है उतना हजार वर्षो सुं आहार लेवे । ५ स्थावर अनुसमय अविरह (निरन्तर) आहार लेवे । ३ विकलेन्द्रिय में आहार दो प्रकार रो– अणाभोग निष्पत्तिए तो अनुसमय अविरह, आभोग निष्पत्तिए जघन्य उत्कृष्ट अन्तमुहूर्त सु । तिर्यञ्च पञ्चेन्द्रिय में आहार दो प्रकार रो– अणाभोग निष्पत्तिए तो अनुसमय अविरह, आभोग निष्पत्तिए जघन्य अन्तमुहूर्त सु, उत्कृष्ट २ दिन सु । मनुष्य में आहार दो प्रकार रा– अणाभोग निष्पत्तिए तो अनुसमय अविरह, आभोग निष्पत्तिए जघन्य अन्तमुहूर्त सु उत्कृष्ट ३ दिन सु ।

(४) अहो भगवान् ! नारकी रा नेरीया किण रो आहार लेवे ? हे गौतम ! द्रव्य थकी अनन्ता अनन्त प्रदेशी खंध रो आहार लेवे, क्षेत्र थकी असंख्याता आकाश प्रदेश ओगाया रो आहार लेवे, काल थकी एक समय री स्थिति रो लेवे, दो समय रो लेवे, ३ समय रो लेवे जाव १ समय, संख्यात समय, असंख्यात समय री स्थिति रो लेवे, भाव थकी वर्ण रो लेवे, गन्ध रो लेवे, रस रो

लेवे, स्पर्श रो लेवे, वर्ण रो लेव तो काला नीला राता पीला धोला रो लेवे, गन्ध रो लवे तो सुरभिगन्ध रो लेवे दुरभिगन्ध रो लेवे, रस रो लेवे तो तीखो, कड़वो कषायलो खाटो मीठो पांचों ही रस रो लवे, स्पर्श रो लवे तो खरखरा रो लेवे सु हाले रो लेवे याव ८ ही स्पर्श रो लेवे। वर्ण रो लेव तो १ गुण काले रो लेवे, २ गुण काले रो लेवे याव १० गुण काले रो लेवे, संख्यात गुण काले रो लवे, असंख्यात गुण काल रो लव, अनन्त गुण काल रो लव। इसी तरह वर्णादिक रा २०ही बोल कह दया=१३×२०=२६०। पुट्ठा आहारइ, ओगाढा आहारेइ याव नियमा छह दिसी (दिशा) आहारेइ तक १४ बोल जिस तरह भाषा पद में कथा उसी तरह कह देवा। द्रव्य रो १, क्षेत्र रो १, काल रा १२, भाव रा २६० और पुट्ठा आदि १४ ये सर्व मिला कर (१+१+१२+२६०+१४)२८८ बोल हुवा।

अधिकतर नारकी रा नेरीया वर्ण में काला और नीला वर्ण रो, गन्ध में दुरभिगन्ध रो, रस में तीखा कड़वा रस रो, स्पर्श में खरखरो, गुरु, शीत, रुक्ष रो आहार लव। उन ग्रहण किया हुवा पुद्गलों ने सड़ा कर खराब करके, पहले रा वर्णादिक गुणों ने विपरीत करके नया खराब वर्णादिक उपजाय कर फिर ग्रहण किया हुवा पुद्गलों रो आहार लव। इसी तरह दण्डा रा १३ दण्डकों में भी २८८ बोलों रो आहार लवं है परन्तु बहुल प्रकारे व द्रव्य में शुभ द्रव्य, वर्ण में, पीला सफद, गन्ध में सुरभि गन्ध, रस में खाटो मीठो रस रो, स्पर्श में सुंहालो लघु उष्ण स्निग्ध पुद्गलों रो

आहार लवे प उन पुद्गलों में पहल रा मगरा गुणां ने अच्छा मनाप कर मनोज्ञ पुद्गलों गे आहार लवे। इमी तरह पृथ्वाकाय आदि १० दण्डकों में वर्णादिक २० बोल रा पुद्गलों ने ग्रहण करके पाइ यो उणां ने अच्छा रा खराब बणाव, पाइ मगरा ग अच्छा बणाव, पूर्ववत् २८८ बोलों रो आहार लवे परन्तु ५ स्थावर में दो प्रकार सु आहार लवे, व्याघात सु और निर्व्याघात सु। व्याघात आसरी कदाचित् ३ दिशारो कदाचित् ४ दिशारो कदाचित् ५ दिशा रो आहार लवे, निर्व्याघात आसरी नियमा छह दिशा रो आहार लवे = २५×२८८=७२०।

(५) अहो भगवान्! नारकी रा नेरीया सर्वत (सर्व प्रकारे आत्मप्रदेश करके) आहार करे? सर्वत (सर्व प्रकार आत्म प्रदेश करके) परिणमावे? सब आत्म प्रदेशों सु उच्छ्वास लवे, नि:श्वास छोड़े? पर्याप्ता की अपेक्षा बारंबार आहार लवे? बारंबार परिणमावे? बारंबार उच्छ्वास लवे? बारंबार नि:श्वास छोड़े? अपर्याप्ता री अपेक्षा कदाचित् आहार लवे? कदाचित् परिणमावे? कदाचित् उच्छ्वास लवे? कदाचित् नि:श्वास छोड़े? हंता गोयमा! से बारह ही बोल करे। इमी तरह बाकी २३ दण्डक में भी बारह ही बोल कह देणा २४×१२=२८८।

(६) अहो भगवान्! नारकी रा नरीया जो पुद्गल आहार पणे ग्रहण कर उणां रो कितरवो (कितना) भाग आहार लवे, आस्वाद करे? हे गौतम! जितना पुद्गल आहारपणे ग्रहण कर

इमां रो असंख्यातवों माग आहार करे और अनन्तवों माग आस्वाद कर, शेष पुद्‌गल बिना आहार कियां तथा बिना आस्वाद लियां ही विध्वंस हो जावे। इसी तरह शेष २३ दण्डक में कह देखा। परन्तु ५ स्थावर में एक स्पर्शेन्द्रिय ही होणे सु स्पर्श कियां बिना ही अनन्त भाग पुद्‌गल विध्वस हो जावे।

(७) अहो भगवान्! नारकी रा नेरीया जो पुद्‌गल आहारपणे ग्रहण करे त सव्वे आहारेंति या नो सव्वे आहारेंति (सब रो आहार करे या सब रो आहार नहीं करे)? हे गौतम! ते सव्वे अपरि सेसए आहारेंति (सर्व रो निर्विशेष पणे (समग्रपणे) आहार करे, कुछ भी बचे नहीं)। इसी तरह देवता रा १३ दण्डक और ५ स्थावर ये १८ दण्डक कह देखा। तीन विकलेन्द्रिय में आहार दो प्रकार रो-रोम आहार और कवल आहार। रोम आहार तो सब निर्विशेषपणे (समग्रपणे) आहार करे। कवल आहार में बेइन्द्रिय असंख्यातवां माग रो आहार लेवे और अनेक हजारों भाग आस्वादयां बिना फरस्यां बिना विध्वंस पावे। इसी तरह तेइन्द्रिय चौइन्द्रिय कह देखा नवरं स् घ्राण बिना, आस्वादयां बिना, फरस्यां बिना पुद्‌गल विध्वंस पावे। तिर्यञ्च पञ्चेन्द्रिय और मनुष्य, तेइन्द्रिय माफक कह देणा। बेइन्द्रिय में सब सु थोड़ा अस्वादणा (स्वाद लियां बिना) पुद्‌गल, ते थकी अफरस्या (स्पर्श कियां बिना) अनन्तगुणा। तेइन्द्रिय, चौइन्द्रिय, तिर्यञ्च पञ्चेन्द्रिय और मनुष्य में सब सु थोड़ा अघ्राण्या (सुगन्ध लियां बिना) पुद्‌गल, ते थकी

असवादपणा अनन्त गुणा, ते थकी अफरसपणा अनन्त गुणा ।

(८) अहो भगवान् ! नारकी रा नेरीया जो पुद्गल आहा पणे ग्रहण करे वे किस रूप सु परिणमे ? हे गौतम ! सोइंद्रियप यात फासिंदियत्ताए (श्रोत्रेन्द्रियपणे यावत् स्पर्शेन्द्रियपणे), अणि त्ताए (अनिष्टपणे), अकंतत्ताए (अकान्तपणे), अपियत्ताए (अप्रि पणे) असुभत्ताए (अशुभपणे), अमणुण्णत्ताए (अमनोज्ञपण अमणामत्ताए (अमनोहरपणे), अणिच्छियत्ताए (अनिच्छनीयपण अणभिज्झियत्ताए(अनभिलषितपणे), अहत्ताए णो उड्ढत्ताए(अधो भारीपणे, पण ऊर्ध्व हल्के-लघुपणे नहीं) दुक्खत्ताए णो सुहत्ताए(दुःख सुखपणे नहीं) भुज्जो भुज्जो परिणमंति (बारबार परिणमावे)

पांच स्थावर, तीन विकलेन्द्रिय, तिर्यञ्च पञ्चेन्द्रिय और मनु अपणी अपणी इन्द्रियों रे सुखपणे और दुःखपणे दोनु रूप सुं परि मावे। देवता रा १३ दण्डक में नारकी सुं उल्टा बोल कह देणा जैसे सोइंदियत्त ए यात फासिंदियत्ताए, इट्ठत्ताए कंतत्ताए, पियत्ताए, सु त्ताए, मणुण्णत्ताए मणामत्ताए, इच्छत्ताए, अभिज्झियत्ताए, उड्ढ णो अहत्ताए सुहत्ताए णो दुक्खत्ताए भुज्जो भुज्जो परिणमंति

(९) अहो भगवान् ! नारकी रा नेरीया एकेन्द्रिय रे शरीर आहार लवे अथवा यात पञ्चेन्द्रिय रे शरीर रो आहार लवे हे गौतम ! पूर्व पर्याय आसरी एकेन्द्रिय रे शरीर रो भी आह लेवे यात पञ्चेन्द्रिय रे शरीर रो भी आहार लेवे। वर्तमान पर्या आसरी पञ्चेन्द्रिय रे शरीर रो आहार लवे (वर्तमान में नार

रो शरीर पञ्चेन्द्रिय है, जिन पुद्गलों ने आहारपणे ग्रहण करे उणांने पञ्चेन्द्रिय शरीरपणे परिणमावे इण कारण सु वे पुद्गल पञ्चेन्द्रिय रो शरीर कहलावे)। इसी तरह पञ्चेन्द्रिय रा १६ दण्डक कह देणा। पांच स्थावर, तीन विकलेन्द्रिय इसी तरह कह देणा नवरं वर्तमान पर्याय आसरी अपने अपने शरीर रो आहार लेवे (जैसे एकेन्द्रिय एकेन्द्रिय रे शरीर रो आहार लेवे, बइन्द्रिय बइन्द्रिय रे शरीर रो आहार लेवे, तेइन्द्रिय तइन्द्रिय रे शरीर रो आहार लेवे और चौइन्द्रिय चौइन्द्रिय रे शरीर रो आहार लेवे)।

(१०) अहो भगवान् ! नारकी रा नेरीया क्या रोम आहारी या पक्खेव आहारी (कवल आहारी) ? हे गौतम ! रोम आहारी, नो पक्खेव आहारी। इसी तरह देवता रा १३ दण्डक और ५ स्थावर ये १८ दण्डक कह देणा। तीन विकलेन्द्रिय, तिर्यञ्च पञ्चेन्द्रिय और मनुष्य में आहार २ प्रकार रो—रोम आहार और कवल आहार।

(११) अहो भगवान् ! नारकी रा नेरीया क्या ओज आहारी या मनभक्खी ? हे गौतम ! ओज आहारी, नो मनभक्खी। इसी तरह औदारिक रा १० दण्डक कह देणा। देवता रा १३ दण्डक ओज आहारी (उत्पन्न होने री बखत लेवे) और मनभक्खी है (अपणी शक्ति सुं मन रे द्वारा शरीर री पुष्टि करने वाला पुद्गलों रो आहार लियो जाय और आहार पर्याप्त पछे तृप्ति पूर्वक परम सन्तोष होय तिण ने मनभक्खी—मनो भक्षी आहार कहीजे)।

सेवं भंते ! सेवं भंते !!

सूत्र श्री पन्नवणाजी र पद २८ में र उद्देशे दूसर में आहार पद रा थोकड़ा चाले सा कहे छै— संग्रहणी गाथा

आहार भविय सण्णी, लेस्सा दिट्ठी संजय कसाए ।
णाणा जोगुवओगे, वेए य सरीर पज्जत्ती ॥

अर्थात्– (१) आहार, (२) भव्य, (३) सन्नी, (४) लेश्या (५) दृष्टि, (६) संयत (७) कषाय (८) ज्ञान (९) योग (१०) उपयोग, (११) वेद (१२) शरीर (१३) पर्याप्ति। य तरह द्वार कह्या जासी।

(१) आहार द्वार– समुच्चय जीव और २४ दण्डक एक जीव आसरी सिय आहारक सिय अनाहारक घणा जीव आसरी समुच्चय जीव एकेन्द्रिय वर्जी ने १९ दण्डक में तीन भांगा– १ सब्बे वि ताव हुज्जा आहारया, २ आहारक घणा अनाहारक एक ३ आहारक घणा अनाहारक घणा। समुच्चय जीव एकेन्द्रिय अभंगो सिद्ध भगवान् एक जीव आसरी घणा जीव आसरी अनाहारक।

(२) भव्य (भवसिद्धिक) द्वार – समुच्चय जीव और २४ दण्डक–एक जीव आसरी सिय आहारक सिय अनाहारक। घणा जीव आसरी– समुच्चय जीव एकेन्द्रिय वर्जी ने १९ दण्डक में तीन भांगा समुच्चय जीव एकेन्द्रिय अभंगो। इसी तरह अभव्य (अभवसिद्धिक) का केणा। नोभव्य नोअभव्य (नो भवसिद्धिक नोअभवसिद्धिक) जीव और सिद्ध भगवान्– एक जीव आसरी घणा जीव आसरी अनाहारक।

(३) सन्नीद्वार– समुच्चय जीव और १६ दण्डक–एक जीव

आसरी सिय आहारक सिय अनाहारक। घणा जीव आसरी—जीव और १६ दण्डक में तिभंगो (तीन भांगा)। असन्नी (असंज्ञी), समुच्चय जीव, २२ दण्डक—एक जीव आसरी सिय आहारक सिय अनाहारक। घणा जीव आसरी—जीव और एकेन्द्रिय वर्जी ने तिभंगो, जीव और एकेन्द्रिय अभंगो(भांगो पावे नहीं)नवरं नारकी, देवता,मनुष्य में भांगा पावे छह—१आहारक घणा २अनाहारक घणा ३ आहारक एक अनाहारक एक ४ आहारक एक अनाहारक घणा ५ आहारक घणा अनाहारक एक ६ आहारक घणा अनाहारक घणा। नोसन्नी नोअसन्नी, जीव, मनुष्य एक जीव आसरी सिय आहारक सिय अनाहारक। घणा जीव आसरी जीव अभंगो, मनुष्य तिभंगो। सिद्ध भगवान् एक जीव घणा जीव आसरी अनाहारक।

(४) लेश्या द्वार—सलेशी समुच्चय जीव और २४ दण्डक—एक जीव आसरी सिय आहारक सिय अनाहारक। घणा जीव आसरी जीव और एकेन्द्रिय वर्जी न तिभंगो। जीव और एकेन्द्रिय अभंगो। कृष्ण नील कापोत लेशी—समुच्चय जीव और २२ दण्डक एक जीव आसरी सिय आहारक सिय अनाहारक। घणा जीव आसरी जीव और एकेन्द्रिय वर्जी न तिभंगो। जीव और एकेन्द्रिय अभंगो। तेजोलेशी—समुच्चय जीव और १८ दण्डक एक जीव आसरी सिय आहारक सिय अनाहारक। घणा जीव आसरी समुच्चय जीव असुरकुमार आदि १५ दण्डक तिभंगो। पृथ्वी पानी वनस्पति तेजो लेश्या आसरी छभंगो। पद्म शुक्ल लेशी समुच्चय जीव और

१ दण्डक एक जीव आसरी सिय आहारक सिय अनाहारक। पणा जीव आसरी–जीव और ३ दण्डक तिर्भंगो। अलेशी जीव, मनुष्य और सिद्ध–एक जीव आसरी अन पणा जीव आसरी अनाहारक।

(५) दृष्टिद्वार–समदृष्टि समुच्चय जीव और १६ दण्डक–एक जीव आसरी सिय आहारक सिय अनाहारक। पणा जीव आसरी जीव आदि १६ दण्डक में तिर्भंगो, नवरं तीन विकलेन्द्रिय में (छ) भंगो। सिद्ध भगवान्–एक जीव आसरी पणा जीव आसरी अनाहारक मिथ्या दृष्टि समुच्चय जीव और २४ दण्डक एक जीव आसरी सिय आहारक सिय अनाहारक। पणा जीव आसरी–जीव और एकेन्द्रिय वर्जी ने १६ दण्डक में तिर्भंगो। जीव और एकेन्द्रिय अभंगो। मिश्रदृष्टि समुच्चय जीव और १६ दण्डक– एक जीव आसरी और पणा जीव आसरी आहारक।

(६) संजति द्वार– संजति जीव मनुष्य– एक जीव आसरी सिय आहारक सिय अनाहारक। पणा जीव आसरी–जीव मनुष्य तिर्भंगो। संजतासंजति जीव, मनुष्य, तिर्यञ्च– एक जीव आसरी पणा जीव आसरी आहारक। असंजति समुच्चय जीव और २४ दण्डक एक जीव आसरी सिय आहारक सिय अनाहारक। पणा जीव आसरी– जीव और एकेन्द्रिय वर्जी ने १६ दण्डक तिर्भंगो। जीव, एकेन्द्रिय अभंगो। नो संजति नो असंजति नो संजतासंजति जीव और सिद्ध एक जीव आसरी पणा जीव आसरी अनाहारक।

(७) कषायद्वार– सकषायी समुच्चय जीव और २४ दण्डक

एक जीव आसरी सिय आहारक सिय अनाहारक। घणा जीव आसरी जीव और एकेन्द्रिय वर्जी ने तिभंगो। जीव और एकेन्द्रिय अभंगो। क्रोध कषायी समुच्चय जीव और २४ दण्डक–एक जीव आसरी सिय आहारक सिय अनाहारक। घणा जीव आसरी–जीव एकेन्द्रिय वर्जी ने तिभंगो। जीव एकेन्द्रिय अभंगो, नवरं देवता में छभंगो। मानकषायी माया कषायी समुच्चय जीव और २४ दण्डक एक जीव आसरी सिय आहारक सिय अनाहारक। घणा जीव आसरी– जीव एकेन्द्रिय वर्जी ने तिभंगो। जीव एकेन्द्रिय अभंगो, नवरं नारकी देवता छभंगो। लोभकषायी समुच्चय जीव और २४ दण्डक–एक जीव आसरी सिय आहारक सिय अनाहारक। घणा जीव आसरी जीव एकेन्द्रिय वर्जी ने तिभंगो, जीव एकेन्द्रिय अभंगो, नवरं नारकी छभंगो। अकषायी जीव, मनुष्य– एक जीव आसरी सिय आहारक सिय अनाहारक। घणा जीव आसरी समुच्चय जीव अभंगो, मनुष्य तिभंगो। सिद्ध भगवान्– एक जीव आसरी घणा जीव आसरी अनाहारक।

(८) नाण द्वार (ज्ञान द्वार)– सनाणी समुच्चय जीव और १६ दण्डक– एक जीव आसरी सिय आहारक सिय अनाहारक। घणा जीव आसरी समुच्चय जीव और नारकी आदि १६ दण्डक में तिभंगो, तीन विकलेन्द्रिय में छभंगो। सिद्ध भगवान् एक जीव आसरी घणा जीव आसरी अनाहारक। मतिज्ञानी श्रुतज्ञानी समुच्चय जीव और १६ दण्डक– एक जीव आसरी सिय आहारक सिय

अनाहारक। घणा जीव आसरी समुच्चय जीव और १६ दण्डक तिभंगो, तीन विकलेन्द्रिय में छभंगो। अवधिज्ञानी समुच्चय जीव और १४ दण्डक- एक जीव आसरी सिय आहारक सिय अनाहारक, घणा जीव आसरी समुच्चय जीव और १४ दण्डक तिभंगो। तिर्यञ्च पञ्चेन्द्रिय एक जीव आसरी घणा जीव आसरी आहारक। मन-पर्ययज्ञानी समुच्चय जीव और मनुष्य एक जीव आसरी घणा जीव आसरा आहारक। केवलज्ञानी समुच्चय जीव, मनुष्य एक जीव आसरी सिय आहारक सिय अनाहारक, घणा जीव आसरी-जीव अभंगो, मनुष्य तिभंगो, सिद्ध भगवान एक जीव आसरी घणा जीव आसरी अनाहारक। समुच्चय अज्ञानी मति-अज्ञानी श्रुतअज्ञानी समुच्चय जीव और २४ दण्डक- एक जीव आसरी सिय आहारक सिय अनाहारक, घणा जीव आसरी-जीव एकेन्द्रिय वर्जी ने तिभंगो, जीव एकेन्द्रिय अभंगो। विभंग-ज्ञानी समुच्चय जीव और १४ दण्डक- (नारकी, देवता) एक जीव आसरी सिय आहारक सिय अनाहारक, घणा जीव आसरी-जीव और १४ दण्डक तिभंगो। तिर्यञ्च और मनुष्य- एक जीव आसरी घणा जीव आसरी आहारक।

(६) जोगद्वार- सजोगी समुच्चय जीव और २४ दण्डक- एक जीव आसरी सिय आहारक सिय अनाहारक, घणा जीव आसरी-जीव और एकेन्द्रिय वर्जी ने तिभंगो, जीव, और एकेन्द्रिय अभंगो। इसी तरह कायजोगी कह देणा। मनजोगी समुच्चय जीव

और १६ दण्डक, वचन योगी समुच्चय जीव और १६ दण्डक– एक जीव आसरी घणा जीव आसरी आहारक। अयोगी, जीव, मनुष्य, सिद्ध– एक जीव आसरी घणा जीव आसरी अनाहारक।

(१०) उपयोग द्वार–सागारपउत्ता अणागारपउत्ता (साकारोपयुक्त अनाकारोपयुक्त) समुच्चय जीव और २४ दण्डक–एक जीव आसरी सिय आहारक सिय अनाहारक, घणा जीव आसरी–जीव एकेन्द्रिय वर्जी ने तिभंगो, जीव एकेन्द्रिय अभंगो। सिद्ध भगवान् एक जीव आसरी घणा जीव आसरी अनाहारक।

(११) वेद द्वार– सवेदी समुच्चय जीव और २४ दण्डक एक जीव आसरी सिय आहारक सिय अनाहारक, घणा जीव आसरी जीव एकेन्द्रिय वर्जी ने तिभंगो, जीव एकेन्द्रिय अभंगो। स्त्रीवेद पुरुषवेद समुच्चय जीव और १५ दण्डक एक जीव आसरी सिय आहारक सिय अनाहारक। घणा जीव आसरी जीव आदि १५ दण्डक में तिभंगो। नपुंसकवेद समुच्चय जीव और ११ दण्डक एक जीव आसरी सिय आहारक सिय अनाहारक। घणा जीव आसरी जीव एकेन्द्रिय वर्जी ने तिभंगो, जीव एकेन्द्रिय अभंगो। अवेदी जीव, मनुष्य, एक जीव आसरी सिय आहारक सिय अनाहारक, घणा जीव आसरी जीव अभंगो, मनुष्य तिभंगो। सिद्ध भगवान् एक जीव आसरी घणा जीव आसरी अनाहारक।

(१२) शरीर द्वार– सशरीरी समुच्चय जीव और २४ दण्डक एक जीव आसरी सिय आहारक सिय अनाहारक। घणा जीव

आमरी जाव एकेन्द्रिय वर्जी ने तिर्भंगा, जीव एकेन्द्रिय अभंगो। औदारिक शरीर समुच्चय जीव और ६ दण्डक (मनुष्य वर्जी ने) एक जीव आमरी घणा जाव आमरी आहारक। मनुष्य एक जीव आमरी सिय आहारक सिय अनाहारक। घणा जीव आमरी त्रिभंगा। वक्रिय शरीर समुच्चय जीव, १७ दण्डक और आहारक शरीर समुच्चय जीव और मनुष्य एक जीव आमरी घणा जीव आमरी आहारक। तैजस कार्मण शरीर समुच्चय जाव और २४ दण्डक एक जीव आमरी सिय आहारक सिय अनाहारक। घणा जीव आमरी जीव, एकेन्द्रिय वर्जी ने तिर्भंगा, जीव एकेन्द्रिय अभंगा। अशरीरी जीव, सिद्ध भगवान् एक जीव आमरी घणा जीव आमरी अनाहारक।

(१३) पज्जत्ति (पर्याप्ति) द्वार– आहार परज्या (पर्याय) शरीर परज्या इन्द्रिय परज्या श्वासोच्छ्वास परज्या समुच्चय जीव, २४ दण्डक, वचन परज्या समुच्चय जीव १९ दण्डक, मन परज्या समुच्चय जीव और १६ दण्डक (नारकी, देवता, तियच पंचेन्द्रिय) एक जाव आमरी घणा जीव आमरी आहारक। मनुष्य एक जीव आमरी सिय आहारक सिय अनाहारक, घणा जीव आमरी तिर्भंगो। आहार अपज्जत्ति (अपर्याप्ति) समुच्चय जीव २४ दण्डक एक जीव आमरी घणा जीव आमरी अनाहारक। शरीर अपज्जत्ति इन्द्रिय अपज्जत्ति श्वासोच्छ्वास अपज्जत्ति समुच्चय जीव २४ दंडक एक जीव आमरी सिय आहारक, सिय अनाहारक, घणा जीव आमरी जीव एकेन्द्रिय वर्जी ने तिर्भंगो, जीव एकेन्द्रिय अभंगो

नवरं नारकी देवता मनुष्य छभंगो। माषा अपज्जत्ति समुच्चय जीव, १६ दण्डक, मन अपज्जत्ति समुच्चय जीव १६ दण्डक एक आव आसरी सिय आहारक सिय अनाहारक, घणा जीव आसरी तिभंगो नवरं नारकी देवता मनुष्य छभंगो।

सेवं भंते ! सेवं भंते !!

श्री पन्नवणाजी र पद २६ वें में उपयोग पद रो थोकड़ो चाले सो कहे छे—

अहो भगवान् ! उपयोग कितरा प्रकार रा ? हे गौतम ! उपयोग दो प्रकार रा–साकार उपयोग, अनाकार उपयोग। साकार उपयोग रा ८ भेद– ५ ज्ञान (मतिज्ञान, श्रुतज्ञान, अवधिज्ञान, मन पर्यय ज्ञान, केवलज्ञान), ३ अज्ञान (मति अज्ञान, श्रुत अज्ञान, विभंग ज्ञान)। अनाकार उपयोग रा ४ भेद– (चक्षु दर्शन, अचक्षुदर्शन, अवधिदर्शन, केवलदर्शन)।

नारकी, देवता, तिर्यञ्च पञ्चेन्द्रिय में उपयोग पावे दो– साकार उपयोग, अनाकार उपयोग, साकार उपयोग रा ६ भेद– ३ ज्ञान, ३ अज्ञान, अनाकार उपयोग रा ३ भेद–३ दर्शन। पांच स्थावर में उपयोग दो प्रकार रा– साकार उपयोग, अनाकार उपयोग, साकार उपयोग में २ अज्ञान, अनाकार उपयोग में १ अचक्षु दर्शन। विकलेन्द्रिय (बेइन्द्रिय तेइन्द्रिय चौइन्द्रिय) में उपयोग पावे दो– साकार उपयोग और अनाकार उपयोग। साकार उपयोग में २ज्ञान,

२ अज्ञान अनाकार उपयोग में १ अचक्षु दर्शन, नवरं चौइन्द्रिय में चक्षुदर्शन अधिक कहणो। मनुष्य में उपयोग पावे दो प्रकार रा— साकार उपयोग, अनाकार उपयोग। साकार उपयोग में ५ ज्ञान३ अज्ञान, अनाकार उपयोग में ४ दर्शन। सिद्ध भगवान् में उपयोग पावे दो प्रकार रा—साकार उपयोग, अनाकार उपयोग, साकार उपयोग में १ केवल ज्ञान, अनाकार उपयोग में १ केवल दर्शन।

सेवं भंते! सेवं भंते!!

सूत्र श्री पन्नवणाजी र पद ३० वें में पासणया (पश्यत्ता) पद रो थोकड़ा चाले सो कहे हैं—

अहो भगवान्!* पासणया (परयत्ता) कितना प्रकार री? हे गौतम! पासणया २ प्रकार री—साकार पासणया, अनाकार पासणया। अहो भगवान्! साकार पासणया कितना प्रकार री? हे गौतम! ६ प्रकार री—४ ज्ञान पासणया (श्रुतज्ञान पासणया, अवधिज्ञान पासणया, मनःपर्ययज्ञान पासणया, केवल ज्ञान पासणया), २ अज्ञान (श्रुत अज्ञान, विभंग ज्ञान)। अहो भगवान्! अनाकार पासणया कितना प्रकार री? हे गौतम! ३ प्रकार री, ३ दर्शन (चक्षु दर्शन, अवधि दर्शन, केवल दर्शन)। नारकी, देवता, तिर्यंच पञ्चेन्द्रिय में पासणया पावे २—साकार पासणया, अनाकार पासणया, साकार पासणया रा भेद ४ (श्रुत ज्ञान, अवधि ज्ञान, श्रुत अज्ञान, विभंगज्ञान)

---

* त्रैकालिक अथवा स्पष्ट उपयोग को पासणया (पश्यत्ता) कहते हैं।

और अनाकार पासणया रा २ भेद (चक्षु दर्शन, अवधि दर्शन), पांच स्थावर में साकार पासणया रो भेद पावे १ (श्रुत अज्ञान)। बेइन्द्रिय तेइन्द्रिय में साकार पासणया रा भेद पावे २ (श्रुत ज्ञान श्रुत अज्ञान)। चौइन्द्रिय में पासणया पावे दो प्रकार री — साकार पासणया, अनाकार पासणया, साकार पासणया रा दो भेद (श्रुत ज्ञान, श्रुत अज्ञान)। अनाकार पासणया रो १ भेद (चक्षु दर्शन), मनुष्य में पासणया पावे २ प्रकार री — साकार पासणया और अनाकार पासणया। साकार पासणया रा ६ भेद (मतिज्ञान, मति अज्ञान टल्या)। अनाकार पासणया रा ३ भेद (अचक्षु दर्शन टल्यो) सिद्ध भगवान् में पासणया दो प्रकार री — साकार पासणया, अनाकार पासणया, साकार पासणया में भेद पावे १ (केवल ज्ञान), अनाकार पासणया में भेद पावे १ (केवल दर्शन)।

सेवं भंते ! सेवं भंते !!

सूत्र श्री पन्नवणाजी रे पद ३१ वें में सन्नी पद रो थोकड़ो चाले सो कहे छे—

णेरइय तिरिय मणुया य, वणयरग सुराइ सण्णीऽसण्णी य।
विगलिंदिया असण्णी, जोइस वेमाणिया सण्णी ॥ १ ॥

अहो भगवान् ! क्या जीव सन्नी, असन्नी, नोसन्नी नोअसन्नी ? हे गौतम ! जीव सन्नी भि, असन्नी भि, नोसन्नी नो असन्नी भि। नारकी, दस भवनपति, वाणव्यन्तर, तिर्यञ्च पञ्चेन्द्रिय सन्नी

वि, असन्नी वि, नोसन्नी नोअसन्नी नहीं। पांच स्थावर तीन विकलेन्द्रिय असन्नी। मनुष्य सन्नी वि, असन्नी वि नोसन्नी नो असन्नी वि। ज्योतिषी, वैमानिक सन्नी। सिद्ध भगवान् सन्नी नहीं, असन्नी नहीं, नोसन्नी नोअसन्नी है।

सेवं भंते! सेवं भंते !!

सूत्र श्रीपन्नवणाजी रे पद ३२ वें में संजति पद रो थोकड़ो चाले सो कहे छै—

संजय असंजय मीसगा य, जीव तहेव मणुया य।
संजय रहिया तिरिया, सेसा असंजया होंति ॥ १ ॥

अहो भगवान्! क्या जीव संजति असंजति, संजतासंजति, नो संजति नो असंजति नो संजतासंजति? हे गौतम! जीव संजति वि, असंजति वि, संजतासंजति वि नो संजति नो असंजति नो संजता-संजति वि। मनुष्य तिर्यञ्च दो दण्डक वर्जी ने नारकी आदि २२ दण्डक असंजति। तिर्यञ्च पञ्चन्द्रिय असंजति संजतासंजति। मनुष्य संजति वि, असंजति वि, संजतासंजति वि। सिद्ध भगवान् संजति नहीं असंजति नहीं, संजतासंजति नहीं, ना संजति नो असंजति नो संजतासंजति है।

सेवं भंते! सेवं भंते !!

सूत्र श्रीपन्नवणाजी रे पद ३३वें में अवधि पद रो थोकड़ो चाले सो कहे छै-

भेद विसय संठाणे, अब्भिंतर बाहिर य देसोही ।

ओहिस्स य खयवुड्ढी, पडिवाई चेव अपडिवाई ॥१॥

१ भेद द्वार, २ विषय द्वार, ३ संठाण (संस्थान) द्वार, ४ आभ्यन्तर बाह्य द्वार, ५ देश थकी सर्व थकी द्वार, ६ हीयमान वर्धमान अवठिया द्वार, ७ अनुगामी अननुगामी द्वार, ८ पडिवाई (प्रतिपाती), अपडिवाई (अप्रतिपाती) द्वार ।

(१) भेद द्वार – अहो भगवान्! अवधि ज्ञान रा कितना भेद? हे गौतम! अवधिज्ञान रा दो भेद – भवप्रत्यय और क्षायोपशमिक। नारकी और देवता रे भवप्रत्यय अवधिज्ञान होवे, मनुष्य और तिर्यञ्च रे क्षायोपशमिक अवधिज्ञान होवे ।

(२) विषय द्वार – नारकी रा नेरीया रे अवधि ज्ञान रो विषय जघन्य आधा गाउ (कोस) रो, उत्कृष्ट ४ गाउ रो । पहली नारकी सु सातवीं नारकी तक रो विषय अलग अलग है, पहली नारकी रो विषय जघन्य साढ़ी तीन गाउ उत्कृष्ट चार गाउ। दूसरी नारकी रा विषय जघन्य तीन गाउ, उत्कृष्ट साढ़ी तीन गाउ। तीसरी नारकी रो विषय जघन्य ढाई गाउ, उत्कृष्ट तीन गाउ । चौथी नारकी रो विषय जघन्य दो गाउ, उत्कृष्ट ढाई गाउ। पांचवीं नारकी रो विषय जघन्य डेढ गाउ, उत्कृष्ट दो गाउ। छट्ठी नारकी रो विषय जघन्य एक गाउ, उत्कृष्ट डेढ गाउ । सातवीं नारकी रो विषय जघन्य

आधा गाउ, उत्कृष्ट एक गाउ ।

✲असुरकुमार देवता रे अवधिज्ञान रो विषय जघन्य २५ योजन, उत्कृष्ट असंख्याता द्वीप समुद्र (पल्योपम रे आयुष्य वाला रो विषय संख्याता द्वीप समुद्र और सागरोपम रे आयुष्य वाला रो विषय असंख्याता द्वीप समुद्र) । नवनिकाय (नाग कुमार आदि) रा देवता और ✲ वाणव्यन्तर देवता जघन्य २५ योजन, उत्कृष्ट संख्याता द्वीप समुद्र जाणे देखे ।

तिर्यञ्च पञ्चेन्द्रिय रे अवधिज्ञान रो विषय जघन्य अंगुल रे असंख्यातवें भाग, उत्कृष्ट असंख्याता द्वीप समुद्र । मनुष्य जघन्य अंगुल र असंख्यातवें भाग उत्कृष्ट आखो (सम्पूर्ण) लोक तथा आखा लोक सरीखा असंख्याता खंड अलोक में हुवे तो जाणे पासे (देखे), परन्तु अलोक में जाणवा जोग रूपी द्रव्य नहीं । इस कारण जाणे देखे नहीं, जाणवा देखवा री शक्ति है ।

ज्योतिषी देवता जघन्य उत्कृष्ट संख्याता द्वीप समुद्र जाणे देखे । × पहले दूजे देवलोक रा देवता जघन्य अंगुल रे असंख्यातवें भाग, उत्कृष्ट नीचे देखे तो रत्नप्रभा पृथ्वी रे नीचे रो चरमान्त, तिरछो देखे तो असंख्याता द्वीप समुद्र, ऊंचो देखे तो अपणी

✲ नोट– भवनपति, और वाण व्यन्तर देव २५ योजन जाणे देखे कयो सो दस हजार वर्ष री स्थिति री अपेक्षा से कयो ।

× नोट– वैमानिक देव जघन्य अंगुल रे असंख्यातवें भाग जाणे देखे कयो सो पूर्व भव री अपेक्षा सु कयो ।

ध्वजा पताका तक। तीजे चौथे देवलोक रा देवता—पहले दूजे देवलोक माफक कह देखा नवर नीचे दूजी नारकी रे नीचे रा चरमान्त तक जाणे देखे। पांचवें छठे देवलोक रा देवता नीचे तीजी नारकी र नीचे रा चरमान्त तक, सातवें आठवें देवलोक रा देवता नीचे चौथी नारकी रे नीचे रा चरमान्त तक, नवमें, दसमें, ग्यारहवें, बारहवें देवलोक रा देवता पांचवीं नारकी र नीचे रा चरमान्त तक जाणे देखे। नवग्रैवेयक र नीचली त्रिक रा देवता, बीचली त्रिक रा देवता नीचे छठी नारकी र नीचे रा चरमान्त तक जाणे देखे। ऊपरली त्रिक रा देवता नीचे सातवीं नारकी रे नीचे रा चरमान्त तक जाणे देखे, तिरछो उत्कृष्ट असंख्याता द्वीप समुद्र, ऊपर आप आप रे विमान री ध्वजा पताका तक जाणे देखे। पांच अनुत्तर विमान रा देवता संभिन्न लोक नाल (कुछ ऊणी चौदह राजु परिमाण लोक नाल) जाणे देखे।

(३) संठाण द्वार — अहो भगवान्! नारकी रा नेरयाँ र अवधिज्ञान रो काँई संठाण है? हे गौतम! त्रपा (तिपाई) रे आकार रो हुवे। भवनपति देवता रे अवधिज्ञान रो संठाण पल्लग (पाला) र आकार, तिर्यञ्च पञ्चेन्द्रिय, मनुष्य रे अवधिज्ञान रो संठाण नाना प्रकार रो। वाणव्यन्तर देवों रे अवधिज्ञान रो संठाण पटह (ढोल) रे आकार, ज्योतिषी देवों रे अवधिज्ञान रो संठाण झालर रे आकार, बारह देवलोक र देवों र अवधिज्ञान रो संठाण खड़ी मृदङ्ग रे आकार, नवग्रैवेयक रे देवों रे अवधिज्ञान रो संठाण फूलों सुं भरी हुई चंगेरी रे आकार, पांच अनुत्तर विमान रे देवों रे

भवधिज्ञान रो संगाण जवणालिया (जवनालिका) कंवारी कन्या रा कंचुक रे आकार हुवे ।

(४) आभ्यन्तर बाह्य द्वार – अहो भगवान्! नारकी रा नेरीया में आभ्यन्तर अवधिज्ञान (साथ में लेकर आवे) होवे या बाह्य अवधिज्ञान (पाछे उत्पन्न होय) होवे ? हे गौतम ! नारकी रा नेरीया में आभ्यन्तर अवधिज्ञान होवे, बाह्य अवधिज्ञान नहीं होवे । १० भवनपति वाणव्यन्तर, ज्योतिषी और वैमानिक देवों में नारकी री तरह कह देणो । तिर्यञ्च पञ्चेन्द्रिय में आभ्यन्तर अवधिज्ञान नहीं होवे परन्तु बाह्य होवे । मनुष्य में आभ्यन्तर और बाह्य दोनों प्रकार रो अवधिज्ञान होवे ।

(५) देश थकी सर्व थकी द्वार – अहो भगवान् ! नारकी रा नेरीयों मे देश अवधि होवे या सर्व अवधि होवे ? हे गौतम ! देश अवधि होवे, सर्व अवधि नहीं होवे । इसी तरह भवनपति, वाणव्यन्तर, ज्योतिषी और वैमानिक देव और तिर्यञ्च पञ्चेन्द्रिय कह देणा । मनुष्य मे देश अवधि भी होवे और सर्व अवधि भी होवे ।

(६) हीयमाण वड्ढमाण अवट्ठिया द्वार – अहो भगवान् ! नारकी रा नेरीयों में अवधिज्ञान हीयमाण, वड्ढमाण, अवट्ठिया, होवे ? हे गौतम ! अवट्ठिया अवधिज्ञान होवे, हीयमाण, वड्ढमाण नहीं होवे । इसी तरह देवताओं में कह देणो । तिर्यञ्च पञ्चेन्द्रिय और मनुष्य में हीयमाण, वड्ढमाण, अवट्ठिया अवधिज्ञान होवे ।

(७) * अनुगामी अननुगामी द्वार — अहो भगवान्! नारकी रा नेरीयों में अनुगामी अवधिज्ञान होवे या अननुगामी होवे? हे गौतम! अनुगामी होवे, अननुगामी नहीं होवे। इसी तरह देवताओं में कह दयो। तिर्यञ्च पञ्चेन्द्रिय और मनुष्य में अनुगामी और अननुगामी दोनु ही होवे।

(८) पडिवाई अपडिवाई द्वार अहो भगवान्! नारकी रा नेरीयों रो अवधिज्ञान पडिवाई होवे या अपडिवाई? हे गौतम! अपडिवाई होवे, पडिवाई नहीं होवे। इसी तरह देवताओं में कह दयो। तिर्यञ्च पञ्चेन्द्रिय और मनुष्य में अवधिज्ञान पडिवाई और अपडिवाई दोनों ही होवे।

सेवं भंते! सेवं भंते!!

---

* नोट— अनुगामी अवधिज्ञान — साथे आवे, जैसे चिराग लेकर मनुष्य आवे तो उजारो प्रकाश साथ रहवे। इसी तरह अवधिज्ञान भी साथे रहवे। अननुगामी अवधिज्ञान — साथ नहीं आवे जैसे धूणी रो दृष्टान्त। धूणी रो प्रकाश आस पास में रहवे परन्तु साथ नहीं आवे इसी तरह अवधिज्ञान साथ नहीं आवे। धूणी छोड़ कर आवे तो आग अन्धारो, पीछो धूणी पर आवे तो प्रकाश इसी तरह अननुगामी अवधिज्ञान वालो वह ठिकाणो छोड़ कर जावे तो आगे अवधिज्ञान नहीं रहवे पीछो उसी ठिकाणे आवे तो अवधिज्ञान पु (न) उत्पन्न हो जावे।

(२) आहार द्वार– आहार २ प्रकार रो – आभोग निव्वत्तिए, अनाभोग निव्वत्तिए । १६ दण्डक (पांच स्थावर वर्जने) में आहार पावे दोनों प्रकार रो । पांच स्थावर में आहार पावे एक– अनाभोग निव्वत्तिए ।

(३) अहो भगवान् ! नारकी रा नेरीया जिण पुद्गलों ने आहारपणे ग्रहण करे उण पुद्गलों ने १ जाणता देखता आहार लेवे, २ नहीं जाणता, देखता आहार लेवे, ३ जाणता, नहीं देखता आहार लेवे, ४ नहीं जाणता नहीं देखता आहार लेवे ? हे गौतम ! नहीं जाणता नहीं देखता हुआ आहार लेवे । इसी तरह १० भवनपति, १ वाणव्यन्तर, १ ज्योतिषी, ५ स्थावर और ३ विकलेन्द्रिय, ये २०दण्डक और कइ देवता तिर्यञ्च पञ्चेन्द्रिय और मनुष्य चारों ही भांगां सुं आहार लेवे। वैमानिक देवता रा २ भेद–मायी मिथ्यादृष्टि और अमायी समदृष्टि । मायी मिथ्यादृष्टि नहीं जाणे नहीं देखे आहार लेवे । अमायी समदृष्टि रा दो भेद–अनुत्तर उववण्णगा, परंपर उववण्णगा । अनुत्तर उववण्णगा नहीं जाणे नहीं देखे आहार लेवे । परंपर उववण्णगा रा दो भेद–अपज्जत्ता, पज्जत्ता । अपज्जत्ता नहीं जाणे नहीं देखे आहार लेवे । पज्जत्ता रा दो भेद–उपयोगवंत, अण उपयोगवंत । अण उपयोगवंत नहीं जाणे नहीं देखे आहार लेवे । उपयोगवंत जाणे देखे आहार लेवे ।

(४) अहो भगवान् ! नारकी रा नेरीयां में कितना अध्यवसाय प्ररूप्या(कह्या) ? हे गौतम ! भला और भूंडा (प्रशस्त और अप्रशस्त)

धर्मध्याणी अध्यवसाय प्रशस्था । इसी तरह बाकी २३ ही दंडक कह देणा ।

(५) अहो भगवान् ! नारकी रा नरीया सम्यक्त्व री प्राप्ति वाला होवे ? मिथ्यात्व री प्राप्ति वाला होवे ? अथवा सम्यग्मिथ्यात्व री प्राप्ति वाला होवे ? हे गौतम ! १ सम्यक्त्व, २ मिथ्यात्व और ३ सम्यग्मिथ्यात्व ए तीनों री प्राप्ति वाला होवे । इसी तरह १३ दण्डक देवता रा, तिर्यञ्च पञ्चेन्द्रिय और मनुष्य, ये १५ दण्डक और कह देणा । ५ स्थावर और ३ विकलेन्द्रिय ये ८ दण्डक मिथ्यात्व री प्राप्ति वाला होवे ।

(६) अहो भगवान् ! क्या देवता १ सदेवी सपरियारा, २ सदेवी अपरियारा, ३ अदेवी सपरियारा, अथवा ४ अदेवी अपरियारा होवे ? हे गौतम ! देवता में भांगा पावे ३—सदेवी सपरियारा, अदेवी सपरियारा, अदेवी अपरियारा । सदेवी सपरियारा देवता—भवनपति, वाणव्यन्तर, ज्योतिषी, पहले दूजे देवलोक रा । अदेवी सपरियारा देवता — तीजे देवलोक सुं बारहवें देवलोक तक रा । अदेवी अपरियारा देवता—नवग्रैवेयक, ५ अनुत्तर विमान रा ।

(७) अहो भगवान् ! परिचारणा (मैथुन सेवन) कित्ता प्रकार री ? हे गौतम ! पांच प्रकार री — १ काया री परिचारणा, २ स्पर्श री परिचारणा, ३ रूप री परिचारणा, ४ शब्द री परिचारणा, ५ मन री परिचारणा ।

अहो भगवान ! कित्ता देवतों में किसी किसी परिचारणा

पावे ? हे गौतम ! भवनपति, वाणव्यन्तर, ज्योतिषी, पहले दूजे देवलोक रा देवों में परिचारणा पावे?—काया री। तीजे चौथे देव लोक में १—स्पर्श री। पांचवें छठ देवलोक में १—रूप री, सातवें आठवें देवलोक में १—शब्द री, नवमें दसवें ग्यारहवें बारहवें देवलोक में १—मन री परिचारणा पावे। ऊपरलों देवों में परिचारणा पावे नहीं (अपरिचारणा)।

काया री परिचारणा किस तरह करे ? कोई देवता रे काया री परिचारणा रो मन हुवे तब देवी ने याद करे, तब उंवी रो आसन कंप, तब देवी ने मालूम पड़, तब देवी गहणा कपड़ा अलंकार पहरी ने देवता र पास हाजिर होवे, तर देवता काया री परिचारणा करे मनुष्य री तरह। अहो भगवान् ! देवता रे वीर्य रा पुद्गल है ? हाँ, गौतम ! देवता रे वीर्य रा पुद्गल है। वे देवी रे श्रोत्रेन्द्रियपणे चक्षुइन्द्रियपणे घ्राणेन्द्रियपणे रसनेन्द्रियपणे स्पर्शनेन्द्रियपणे इष्टपणे कान्तपणे मणुण्णपणे मणामपणे सुभगपणे सौभाग्यपणे रूपपणे यौवनपणे गुणपणे लावण्यपणे बारबार परिणमे इमी तरह स्पर्श री परिचारणा कह देवी नजर स्पर्श सुं स्पर्श मिलावे कह देणो। इसी तरह रूप री परिचारणा कह देवी नजर नेत्र सुं नेत्र मिलाय कहणो। इसी तरह शब्द री परिचारणा कह देवी नजर देवी रा शब्द, गीत, हास्य, नाच आदि रा शब्द सुणणे सुं परिचारणा होय। इसी तरह मन री परिचारणा कह देवी नजर मन सुं मन मिलावे कहणो।

(८) अल्पाबोध – १ – सब सु थोड़ा अपरिचारणा रा देवता, २ ते थकी मन री परिचारणा रा देवता संख्यातगुणा, ३ ते थकी शब्द री परिचारणा रा देवता असंख्यातगुणा, ४ ते थकी रूप री परिचारणा रा देवता असंख्यातगुणा, ५ ते थकी स्पर्श री परिचारणा रा देवता असंख्यातगुणा, ६ ते थकी काया री परिचारणा रा देवता असंख्यातगुणा।

सेवं भंते ! सेवं भंते ! !

सूत्र श्री पन्नवणाजी रे पद ३५ वें में वेदना रा थोकड़ो चाले सो कहे छै —

सीया य दव्वसरिरा, साया तह वेयणा भवइ दुक्खा।
अब्भुवगमोवक्कमिया, णिदा य अणिदा य णायव्वा।
सायमसायं सव्वे सुहं च, दुक्खं अदुक्खमसुहं च।
माणसरहियं विगलिंदिया उ सेसा दुविहमेव॥

अहो भगवान् ! वेदना कितरा प्रकार री ? हे गौतम ! वेदना ३ प्रकार री – शीत वेदना, उष्ण वेदना, शीतोष्ण वेदना। पहली, दूसरी, तीसरी नारकी में शीत योनिया नेरीया, उष्ण री वेदना। चौथी नारकी में नेरीया २ प्रकार रा–शीतयोनिया, उष्ण योनिया, शीतयोनियों ने उष्ण री वेदना, उष्णयोनियों ने शीत री वेदना, शीतयोनिया घणा, उष्णयोनिया थोड़ा, उष्ण री वेदना वाला घणा, शीत री वेदना वाला थोड़ा। पांचवीं नारकी में नेरीया

२ प्रकार रा – शीतयोनिया, उष्णयोनिया। शीतयोनियों ने उष्ण री वेदना, उष्णयोनियों ने शीत री वेदना, शीतयोनिया थोड़ा उष्णयोनिया घणा, शीत री वेदना वाला घणा, उष्ण री वेदना वाला थोड़ा। छठी नारकी में उष्णयोनिया नेरीया है, उणां ने शीत री वेदना। सातवीं नारकी में महा उष्णयोनिया नेरीया है, उणां ने महाशीत री वेदना है। १३ दण्डक देवता रा और १० दण्डक औदारिक रा इण २३ दण्डक में वेदना पावे तीन–शीत वेदना उष्णवेदना शीतोष्णवेदना।

२– अहो भगवान्! वेदना किता प्रकार री? हे गौतम! वेदना चार प्रकार री – द्रव्य सु, क्षेत्र सु, काल सु, भाव सु, २४ ही दण्डक में च्यारों प्रकार री वेदना पावे।

३ – अहो भगवान्! वेदना किता प्रकार री? हे गौतम! तीन प्रकार री – शारीरिक वेदना, मानसिक वेदना, शारीरिक मानसिक वेदना। नारकी, देवता, तिर्यञ्च पञ्चेन्द्रिय और मनुष्य इण १६ दण्डक में वेदना पावे तीनों प्रकार री। पांच स्थावर, तीन विकलेन्द्रिय इण ८ दण्डक में वेदना पावे १– शारीरिक।

४–अहो भगवान्! वेदना किता प्रकार री? हे गौतम! वेदना तीन प्रकार री–साता वेदना, असाता वेदना, साता असाता वेदना। २४ ही दण्डक में वेदना पावे तीनों ही प्रकार री।

५–अहो भगवान्! वेदना किता प्रकार री? हे गौतम! वेदना

तीन प्रकार री– दुखरा वेदना, सुखा वेदना, अदुखरा सुखा वेदना। २४ ही दण्डक में वेदना पावे तीनों प्रकार री।

६– अहो भगवान्! वेदना किता प्रकार री? हे गौतम! वदना २ प्रकार री–अब्भोवगमिया (आम्युपगमिकी), उवक्कमिया (औप क्रमिकी)। तिर्यञ्च पञ्चेन्द्रिय और मनुष्य में वदना पावे दो प्रकार री–अब्भोवगमिया, (स्वयं रूप ने अंगीकार करयो, जैसे केशलोच वगैरह) उवक्कमिया (स्वभाव सु उदय में आवे ज्वरादि)। १२ दण्डक में वेदना पावे? उवक्कमिया।

७–अहो भगवान्! वदना किता प्रकार री? हे गौतम! वदना २ प्रकार री – निदा (मन रा आलापणा सहित), अनिदा (मन रा आलापणा रहित)। नारकी, भवनपति, वाणव्यन्तर, तिर्यञ्च पञ्चेन्द्रिय और मनुष्य, ये १४ दण्डक में वेदना २ प्रकार री – निदा और अनिदा। सन्नीभूत निदा वेदना वेद और असन्नीभूत अनिदा वेदना वेदे। पांच स्थावर, तीन विकलेन्द्रिय असन्नीभूत? अनिदा वेदना वेदे। ज्योतिषी वैमानिक दो प्रकार रा–मायी मिथ्या दृष्टि, अमायी समदृष्टि। मायी मिथ्यादृष्टि १ – अनिदा वेदना वेदे, अमायी समदृष्टि १ निदा वेदना वेदे।

सेवं भंते! सेवं भंते

सूत्र श्री पन्नवणाजी रे पद ३६ वें में ७ समुद्घात रो थोकड़ो चाले सो कहे छै:—

१ नाम द्वार, २ काल द्वार, ३ पावणा द्वार, ४ एक जीव आसरी, ५ घणा जीव आसरी, ६ एक जीव माहोमाही (परस्पर) आसरी, ७ घणा जीव माहोमाही (परस्पर) आसरी, ८ अल्पाबोध द्वार।

वेयणकसायमरणे, वेउव्वियतेयए य आहार।
केवलिए चेव भवे, जीव मणुस्साण सत्तेव॥

१– नाम द्वार – १ वेदना समुद्घात, २ कषाय समुद्घात, ३ मारणान्तिक समुद्घात, ४ वैक्रिय समुद्घात, ५ तैजस समुद्घात, ६ आहारक समुद्घात, ७ केवली समुद्घात।

२– काल द्वार–६ समुद्घात रो काल जघन्य उत्कृष्ट अन्तमुहूर्त रो, केवली समुद्घात रो काल ८ समय रो।

३– पावणा द्वार – नारकी में समुद्घात पावे ४। भवनपति, वाणव्यन्तर, ज्योतिषी, पहले सु बारहवें देवलोक तक समुद्घात पावे ५। नवग्रैवेयक, पांच अनुत्तर विमान में समुद्घात पावे ३। चार स्थावर, तीन विकलेन्द्रिय में, समुद्घात पावे ३, वायु काय में ४, तिर्यञ्च पञ्चेन्द्रिय में ५ और मनुष्य में समुद्घात पावे ७।

४– एक जीव आसरी द्वार–अहो भगवान्! एक एक नारकी गे नेरीयो पांच समुद्घात किती करी? हे गौतम! अतीता (गया काल में) अनन्ती, पुरेक्खडा (आवता काल–भविष्य काल में)

कस्सइ अत्थि कस्सइ नत्थि, जस्स अत्थि एगोत्तरीया (एक, दो, तीन यावत् दस संख्याती असंख्याती अनन्ती) इसी तरह २३ दण्डक और कह देना । अहो भगवान् ! नारकी रो एक एक नेरीयो आहारक समुद्घात किती करी ? हे गौतम ! अतीता कस्सइ अत्थि कस्सइ नत्थि, जस्स अत्थि जघन्य १–२, उत्कृष्ट ३ । पुरेक्खडा कस्सइ अत्थि कस्सइ नत्थि, जस्स अत्थि जघन्य १–२–३ उत्कृष्ट ४ । इसी तरह २२ दण्डक (मनुष्य वर्जीने) और कह देना । एक एक मनुष्य आहारक समुद्घात किती करी ? अतीता कस्सइ अत्थि कस्सइ नत्थि, जस्स अत्थि, जघन्य १–२–३, उत्कृष्ट ४, पुरेक्खडा कस्सइ अत्थि कस्सइ नत्थि जस्स अत्थि जघन्य १–२–३, उत्कृष्ट ४ ।

अहो भगवान् ! एक एक नारकी रो नेरीयो केवलीसमुद्घात किती करी ? हे गौतम ! अतीता नत्थि, पुरेक्खडा कस्सइ अत्थि कस्सइ नत्थि, जस्स अत्थि–१ । इसी तरह २२ दण्डक (मनुष्य वर्जीने) और कह देना । एक एक मनुष्य केवली समुद्घात किती करी ? अतीता कस्सइ अत्थि कस्सइ नत्थि, जस्स अत्थि – १, पुरेक्खडा कस्सइ अत्थि कस्सइ नत्थि, जस्स अत्थि – १ ।

४– घणा जीव आसरी द्वार–अहो भगवान् ! घणा नारकी रा नेरीया पांच समुद्घात किती करी ? हे गौतम ! अतीता अनन्ती, पुरेक्खडा अनन्ती । इसी तरह २३ दण्डक और कह देना । घणा नारकी रा नेरीया आहारक समुद्घात किती करी ? अतीता असंख्याती, पुरेक्खडा असंख्याती । इसी तरह २१ दण्डक(वनस्पति

श्रौर मनुष्य वर्जीने) श्रौर कह देखा । घणा वनस्पति रा जीव आहारक समुद्‌घात किधी करी ? श्रतीता अनन्ती, पुरेक्खडा अनन्ती । घणा मनुष्य रा जीव आहारक समुद्‌घात किधी करी ? अतीता सिय संख्याती (गर्भज-मनुष्य आसरी), सिय असंख्याती (सम्मूर्च्छिम मनुष्य आसरी), पुरेक्खडा सिय संख्याती सिय असंख्याती ।

घणा नारकी रा नेरीया केवली समुद्‌घात किधी करी ? अतीता नत्थि, पुरेक्खडा असंख्याती । इसी तरह २१ दण्डक (वनस्पति श्रौर मनुष्य वर्जीने) श्रौर कह देखा । घणा वनस्पति रा जीव केवली समुद्‌घात किधी करी ? अतीता नत्थि, पुरेक्खडा अनन्ती । घणा मनुष्य रा जीव केवली समुद्‌घात किधी करी ? अतीता कस्सइ अत्थि कस्सइ नत्थि जस्स अत्थि जघन्य १-२-३, उत्कृष्ट प्रत्येक सौ। पुरेक्खडा सिय संख्याती सिय असंख्याती।

६- एक जीव माहोमाही (परस्पर) आसरी द्वार- एक एक नारकी रो नेरीयो नारकीपणे ४ समुद्‌घात किधी करी ? अतीता अनन्ती, पुरेक्खडा कस्सइ अत्थि कस्सइ नत्थि जस्स अत्थि एगो त्तरिया जाव अनन्ती । एक एक नारकी रो नेरीयो नारकीपणे तीन समुद्‌घात किधी करी ? अतीता नत्थि, पुरेक्खडा नत्थि । एक एक नारकी रो नेरीयो १३ दण्डक देवतापणे पांच समुद्‌घात किधी करी ? अतीता अनन्ती, पुरेक्खडा कस्सइ अत्थि कस्सइ नत्थि जस्स अत्थि पहली तीजी पांचवीं एगोत्तरीया जाव अनन्ती, दूसरी चोथी भवनपति वाणव्यन्तरपणे सिय संख्याती सिय असंख्याती

सिय अनन्ती, ज्योतिषी वैमानिकपणे सिय असंख्याती, सिय अनन्ती। एक एक नारकी रो नेरीयो १३ दण्डक देवतापणे आहारक समुद्‌घात, केवली समुद्‌घात किती किती करी ? अतीता नत्थि, पुरेक्खडा नत्थि । एक एक नारकी रो नेरीयो चार स्थावर तीन विकलेन्द्रियपणे ३ समुद्‌घात, वायुकायपणे ४ समुद्‌घात, तिर्यञ्च पञ्चेन्द्रियपणे ५ समुद्‌घात, मनुष्यपणे ५ समुद्‌घात किती करी ? अतीता अनन्ती, पुरेक्खडा कस्सइ अत्थि कस्सइ नत्थि जस्स अत्थि एगोत्तरिया जाव अनन्ती। एक एक नारकी रो नेरीयो मनुष्यपणे आहारक समुद्‌घात किती करी ? अतीता कस्सइ अत्थि कस्सइ नत्थि जस्स अत्थि जघन्य १-२, उत्कृष्ट ३। पुरेक्खडा कस्सइ अत्थि कस्सइ नत्थि जस्स अत्थि जघन्य १-२-३, उत्कृष्ट ४। एक एक नारकी रो नेरीयो मनुष्यपणे केवली समुद्‌घात किती करी ? अतीता नत्थि, पुरेक्खडा कस्सइ अत्थि कस्सइ नत्थि जस्स अत्थि १। एक एक नारकी रो नेरीयो चार स्थावर तीन विकलेन्द्रियपणे ४ समुद्‌घात (अन्त की), वायुकायपणे ३ समुद्‌घात (अन्त की), तिर्यञ्च पञ्चेन्द्रियपणे २ समुद्‌घात (अन्त की) किती करी ? अतीता नत्थि पुरेक्खडा नत्थि ।

तेरह दण्डक रा एक एक देवता आपरे सठिकाणे परठिकाणे ५ समुद्‌घात किती करी ? अतीता अनन्ती, पुरेक्खडा कस्सइ अत्थि कस्सइ नत्थि जस्स अत्थि सठिकाणे एगोत्तरीया, परठिकाणे पहली तीसरी पाँचवी एगोत्तरीया, दूजी चौथी भवनपति वाणव्यन्तर-

पणे सिय संख्याती सिय असंख्याती सिय अनन्ती, ज्योतिषी वैमानिकपणे सिय असंख्याती सिय अनन्ती। तेरह दण्डक रा एक एक देवता, सठिकायपणे दो समुद्घात (अन्त की) किती करी? अतीता नत्थि, पुरेक्खडा नत्थि। तेरह दण्डक रा एक एक देवता नारकी पणे ४ समुद्घात किती करी? अतीता अनन्ती, पुरेक्खडा कस्सइ अत्थि कस्सइ नत्थि जस्स अत्थि मारणान्तिक समुद्घात पणोतरीया, बाकी ३ समुद्घात सिय संख्याती सिय असंख्याती सिय अनन्ती। तेरह दण्डक रा एक एक देवता नारकीपणे २ समुद्घात (अन्त की) किती करी? अतीता नत्थि, पुरेक्खडा नत्थि। तेरह दण्डक रा एक एक देवता चार स्थावर, तीन विकलेन्द्रियपणे ३ समुद्घात, वायुकाय पणे ४ समुद्घात, तिर्यञ्च पञ्चेन्द्रियपणे ५ समुद्घात और मनुष्यपणे ५ समुद्घात किती करी? अतीता अनन्ती, पुरेक्खडा कस्सइ अत्थि कस्सइ नत्थि जस्स अत्थि पणोपराया। तेरह दण्डक रा एक एक देवता मनुष्यपणे आहारक समुद्घात किती करी? अतीता कस्सइ अत्थि कस्सइ नत्थि जस्स अत्थि जघन्य १–२, उत्कृष्ट ३, पुरेक्खडा कस्सइ अत्थि कस्सइ नत्थि जस्स अत्थि जघन्य १–२–३, उत्कृष्ट ४। तेरह दण्डक रा एक एक देवता मनुष्यपणे केवली समुद्घात किती करी? अतीता नत्थि, पुरेक्खडा कस्सइ अत्थि कस्सइ नत्थि जस्स अत्थि १। तेरह दण्डक रा एक एक देवता चार स्थावर तीन विकलेन्द्रियपणे, ४ समुद्घात (अन्त की) वायुकायपणे ३ समुद्घात (अन्त की), तिर्यञ्च पञ्चेन्द्रियपणे २ समुद्घात (अन्त की)

किती करी ? अतीता नत्थि, पुरेक्खडा नत्थि ।

दस औदारिक रा एक एक जीव दस औदारिकपणे आपरे सठिकाणे परठिकाणे पावे पावे किती समुद्घात (आहारक समुद्घात और केवली समुद्घात वर्जीने) किती करी ? अतीता अनन्ती, पुरेक्खडा कस्सइ अत्थि कस्सइ नत्थि जस्स अत्थि पगोचरीया । एक एक मनुष्य मनुष्यपणे आहारक समुद्घात किती करी ? अतीता कस्सइ अत्थि कस्सइ नत्थि, जस्स अत्थि जघन्य १-२-३, उत्कृष्ट ४, इसी तरह पुरेक्खडा कह देणी। एक एक मनुष्य मनुष्यपणे केवली समुद्घात किती करी ? अतीता कस्सइ अत्थि कस्सइ नत्थि जस्स अत्थि १ पुरेक्खडा कस्सइ अत्थि कस्सइ नत्थि जस्स अत्थि १ । नव औदारिक (मनुष्य वर्जीने) रा एक एक जीव मनुष्यपणे आहारक समुद्घात किती करी ? अतीता कस्सइ अत्थि कस्सइ नत्थि जस्स अत्थि जघन्य १-२, उत्कृष्ट ३ । पुरेक्खडा कस्सइ अत्थि कस्सइ नत्थि जस्स अत्थि जघन्य १-२-३, उत्कृष्ट ४ । नव औदारिक (मनुष्य वर्जीने) रा एक एक जीव मनुष्यपणे केवली समुद्घात किती करी ? अतीता नत्थि, पुरेक्खडा कस्सइ अत्थि कस्सइ नत्थि जस्स अत्थि १ । एक एक १० औदारिक मारणीयपणे ४ समुद्घात किती करी ? अतीता अनन्ती पुरेक्खडा कस्सइ अत्थि कस्सइ नत्थि जस्स अत्थि मारणान्तिक समुद्घात पगोचरीया, ३ समुद्घात सिय संख्याती सिय असंख्याती सिय अनन्ती । एक एक १० दण्डक औदारिक रा जीव तेरह दण्डक देवतापणे

५ समुद्घात किसी करी ? मतीता मनन्तो, पुरेक्खडा कस्सइ म त्थि कस्सइ नत्थि जस्स मत्थि पहली तीसरी पांचवी एगोतरीया, दुसरी चौथी भवनपति वाणव्यन्तरपणे सिय संख्याती सिय असंख्याती सिय अनन्ती । ज्योतिषी वैमाणिकपणे सिय असंख्याती सिय अनन्ती। एक एक १० औदारिक रा जीव नारकीपणे ३ समुद्घात (अन्त की), तेरह दण्डक देवतापणे २ समुद्घात (अन्त की), चार स्थावर तीन विकलेन्द्रियपणे ४ समुद्घात (अन्त की), वायुकायपणे ३ समुद्घात (अन्त की), तिर्यञ्च पञ्चेन्द्रियपणे २ समुद्घात (अन्त की) किसी करी ? अतीता नत्थि, पुरेक्खडा नत्थि ।

७— घणा जीव माहोमाही (परस्पर) आसरी द्वार– घणा नारकी रा नेरीया नारकीपणे ४ समुद्घात किसी करी ? अतीता अनन्ती, पुरेक्खडा अनन्ती । घणा नारकी रा नेरीया घणा तेरह दण्डक देवतापणे ५ समुद्घात, चार स्थावर तीन विकलेन्द्रियपणे ३ समुद्घात, वायुकायपणे ४ समुद्घात, तिर्यञ्च पञ्चेन्द्रिय, मनुष्य पणे ५ समुद्घात किसी करी ? अतीता अनन्ती, पुरेक्खडा अनन्ती । घणा नारकी रा नेरीया मनुष्यपणे आहारक समुद्घात किसी करी । अतीता असंख्याती, पुरेक्खडा असंख्याती । घणा नारकी रा नेरीया मनुष्यपणे केवली समुद्घात किसी करी ? अतीता नत्थि, पुरेक्खडा असंख्याती । घणा नारकी रा नेरीया नारकीपणे ३ समुद्घात, (अन्त की), तेरह दण्डक देवतापणे २ समुद्घात (अन्त की), चार स्थावर तीन विकलेन्द्रियपणे ४ समुद्घात (अन्त की), वायुकायपणे

किती करी ? अतीता नत्थि, पुरेक्खडा नत्थि ।

दस औदारिक रा एक एक जीव दस औदारिकपणे आपरे सन्निकाये परनिकाये पावे पावे कितो समुद्घात (आहारक समुद्घात और केवली समुद्घात वर्जीने) किती करी ? अतीता अनन्ती, पुरेक्खडा कस्सइ अत्थि कस्सइ नत्थि जस्स अत्थि एगोत्तरीया । एक एक मनुष्य मनुष्यपणे आहारक समुद्घात किती करी ? अतीता कस्सइ अत्थि कस्सइ नत्थि, जस्स अत्थि जघन्य १-२-३, उत्कृष्ट ४, इसी तरह पुरेक्खडा कह देणी। एक एक मनुष्य मनुष्यपणे केवली समुद्घात किती करी ? अतीता कस्सइ अत्थि कस्सइ नत्थि जस्स अत्थि १ पुरेक्खडा कस्सइ अत्थि कस्सइ नत्थि जस्स अत्थि १ । नव औदारिक (मनुष्य वर्जीने) रा एक एक जीव मनुष्यपणे आहारक समुद्घात किती करी ? अतीता कस्सइ अत्थि कस्सइ नत्थि जस्स अत्थि जघन्य १-२, उत्कृष्ट ३ । पुरेक्खडा कस्सइ अत्थि कस्सइ नत्थि जस्स अत्थि जघन्य १-२-३, उत्कृष्ट ४ । नव औदारिक (मनुष्य वर्जीने) रा एक एक जीव मनुष्यपणे केवली समुद्घात किती करी ? अतीता नत्थि, पुरेक्खडा कस्सइ अत्थि कस्सइ नत्थि जस्स अत्थि १ । एक एक १० औदारिक नारकीपणे ४ समुद्घात किती करी ? अतीता अनन्ती, पुरेक्खडा कस्सइ अत्थि कस्सइ नत्थि जस्स अत्थि मारणान्तिक समुद्घात एगोत्तरीया, ३ समुद्घात सिय संख्याती सिय असंख्याती सिय अनन्ती । एक एक १० इग्यारह औदारिक रा जीव तेरह इग्यारह देवतापणे

५ समुद्घात किती करी ? अतीता अनन्ती, पुरेक्खड़ा कस्सइ अ न्थ कस्सइ नत्थि जस्स अत्थि पहली तीसरी पांचवी एगोत्तरीया, दू सरी चौथी भवनपति वाणव्यन्तरपणे सिय संख्याती सिय असंख्याती सिय अनन्ती । ज्योतिषी वैमाणिकपणे सिय असंख्याती सि य अनन्ती। एक एक १० औदारिक रा जीव नारकीपणे ३ समुद्घात (अन्त की), तेरह दण्डक देवतापणे २ समुद्घात (अन्त की), चार स्थावर तीन विकलेन्द्रियपणे ४ समुद्घात (अन्त की), वायुकायपणे ३ समुद्घात (अन्त की), तिर्यञ्च पञ्चेन्द्रियपणे २ समुद्घा त (अन्त की) किती करी ? अतीता नत्थि, पुरेक्खड़ा नत्थि ।

७– घणा जीव माहोमाही (परस्पर) आसरी द्वार– घणा नारकी रा नेरीया नारकीपणे ४ समुद्घात किती करी ? अतीता अनन्ती, पुरेक्खड़ा अनन्ती । घणा नारकी रा नेरीया घणा तेरह दण्डक देवतापणे ५ समुद्घात, चार स्थावर तीन विकलेन्द्रियपणे ३ समुद्घात, वायुकायपणे ४ समुद्घात, तिर्यञ्च पञ्चेन्द्रिय, मनुष्य पणे ५ समुद्घात किती करी ? अतीता अनन्ती, पुरेक्खड़ा अनन्ती । घणा नारकी रा नेरीया मनुष्यपणे आहारक समुद्घात किती करी । अतीना असंख्याती, पुरेक्खड़ा असंख्याती । घणा नारकी रा नेरीया मनुष्यपणे केवली समुद्घात किती करी ? अतीता नत्थि, पुरेक्खड़ा असंख्याती । घणा नारकी रा नेरीया नारकीपणे ३ समुद्घात, (अन्त की), तेरह दण्डक देवतापणे २ समुद्घात (अन्त की), चार स्थावर तीन विकलेन्द्रियपणे ४ समुद्घात (अन्त की), वायुकायपणे

१ समुद्घात (अन्त की), तिर्यंच पञ्चेन्द्रियपणे २ समुद्घात (अन्त की) किती करी ? अतीता नत्थि, पुरेक्खडा नत्थि।

पणा तेरह दण्डक रा देवता आपरे सन्नियाणे परठिकाणे ५ समुद्घात किती करी ? अतीता अनन्ती, पुरेक्खडा अनन्ती। पणा तेरह दण्डक रा देवता नारकीपणे ४ समुद्घात, चार स्थावर तीन विकलेन्द्रियपणे ३ समुद्घात, वायुकायपणे ४ समुद्घात, तिर्यंच पञ्चेन्द्रियपणे, मनुष्यपणे ५-५ समुद्घात किती करी ? अतीता अनन्ती, पुरेक्खडा अनन्ती। पणा तेरह दण्डक रा देवता मनुष्यपणे आहारक समुद्घात किती करी ? अतीता असंख्याती, पुरेक्खडा असंख्याती। पणा तेरह दण्डक रा देवता मनुष्यपणे केवली समुद्घात किती करी ? अतीता नत्थि पुरेक्खडा असंख्याती। पणा तेरह दण्डक रा देवता नारकीपणे २ समुद्घात (अन्त की), तेरह दण्डक देवतापणे ३ समुद्घात (अन्त की), चार स्थावर तीन विकलेन्द्रियपणे ४ समुद्घात (अन्त की), वायुकायपणे ३ समुद्घात (अन्त की), तिर्यंचपञ्चेन्द्रियपणे २ समुद्घात (अन्त की) किती करी ? अतीता नत्थि, पुरेक्खडा नत्थि।

पणा १० औदारिक रा जीव आपरे सन्नियाणे परठिकाणे चार स्थावर तीन विकलेन्द्रियपणे ३ समुद्घात, वायुकायपणे ४ समुद्घात, तिर्यञ्च पञ्चेन्द्रियपणे, मनुष्यपणे ५-५ समुद्घात किती करी ? अतीता अनन्ती, पुरेक्खडा अनन्ती। पणा मनुष्य मनुष्यपणे आहारक समुद्घात किती करी ? अतीता सिय संख्याती सिय

असंख्याती, पुरेक्खड़ा सिय संख्याती सिय असंख्याती । घणा मनुष्य मनुष्यपणे केवली समुद्घात किसी करी ? अतीता कस्सइ अस्थि कस्सइ नत्थि जस्स अत्थि जघन्य १–२–३, उत्कृष्ट प्रत्येक सौ, पुरेक्खड़ा सिय संख्याती सिय असंख्याती ।

घणा पांच स्थावर तीन विकलेन्द्रिय और तिर्यञ्च पञ्चेन्द्रिय २१ दण्डकपणे (मनुष्य रो दण्डक वर्जने) आहारक समुद्घात और केवलीसमुद्घात, किसी करी ? अतीता नत्थि, पुरेक्खड़ा नत्थि । घणा औदारिक रा ६ दण्डक रा जीव मनुष्यपणे आहारक समुद्घात किसी करी ? अतीता वनस्पति रा जीव अनन्ती, बाकी ८ दण्डक रा जीव असंख्याती, पुरेक्खड़ा वनस्पति रा जीव अनन्ती, बाकी ८ दण्डक रा जीव असंख्याती । घणा औदारिक रा ६ दण्डक रा जीव मनुष्यपणे केवली समुद्घात किसी करी ? अतीता नत्थि, पुरेक्खड़ा वनस्पति रा जीव अनन्ती, बाकी ८ दण्डक रा जीव असंख्याती । घणा १० औदारिक रा जीव नारकीपणे ४ समुद्घात, देवतापणे ५ समुद्घात किसी करी ? अतीता अनन्ती, पुरेक्खड़ा अनन्ती । घणा १० औदारिक रा जीव नारकीपणे ३ समुद्घात (अन्त की), तेरह दण्डक देवतापणे २ समुद्घात (अन्त की) किसी करी ? अतीता नत्थि, पुरेक्खड़ा नत्थि ।

८ – अल्पाबोध (अल्पबहुत्व) द्वार – १ सब सु थोड़ा आहारक समुद्घात समोहया, २ ते थकी केवली समुद्घात समोहया संख्यातगुणा, ३ ते थकी तैजस समुद्घात समोहया असंख्या–

गुणा, ४ ते थकी वैक्रिय समुद्घात समोहया असंख्यात गुणा, ५ ते थकी मारणान्तिक समुद्घात समोहया अनन्तगुणा, ६ ते थकी कषाय समुद्घात समोहया असंख्यात गुणा, ७ ते थकी वेदनीय समुद्घात समोहया विसेसाहिया, ८ ते थकी असमोहया (समुद्घात नहीं करने वाला) असंख्यात गुणा ।

नारकी ग नरीयों में– १ सब सु थोडा मारणान्तिक समुद्घात समोहया, २ ते थकी वैक्रिय समुद्घात समोहया असंख्यात गुणा ३ ते थकी कषाय समुद्घात समोहया संख्यात गुणा, ४ ते थकी वेदनीय समुद्घात समोहया संख्यात गुणा, ५ ते थकी असमोहया संख्यातगुणा ।

सरद दण्डक देवता में – १ सब सु थोडा तेजस समुद्घात समोहया, २ ते थकी मारणान्तिक समुद्घात समोहया असंख्यात गुणा, ३ ते थकी वेदनीय समुद्घात समोहया असंख्यात गुणा ४ ते थकी कषाय समुद्घात समोहया संख्यातगुणा, ५ ते थकी वक्रिय समुद्घात समोहया संख्यातगुणा, ६ ते थकी असमोहया असंख्यात गुणा ।

पृथ्वीकाय, अपकाय तेउकाय, वनस्पतिकाय, इन चार स्थावर में – १ सब सु थोडा मारणान्तिक समुद्घात समोहया, २ ते थकी कषाय समुद्घात समोहया संख्यात गुणा, ३ ते थकी वेदनीय समुद्घात समोहया विसेसाहिया, ४ ते थकी असमोहया असंख्यात गुणा ।

वायुकाय में— १ सब सुं थोड़ा वैक्रिय समुद्घात समोहया, २ ते थकी मारणान्तिक समुद्घात समोहया असंख्यात गुणा, ३ ते थकी कषाय समुद्घात समोहया संख्यातगुणा, ४ ते थकी वेदनीय समुद्घात समोहया विसेसाहिया, ५ ते थकी असमोहया असंख्यात गुणा।

तीन विकलेन्द्रिय में— १ सब सु थोड़ा मारणान्तिक समुद्घात समोहया, २ ते थकी वेदनीय समुद्घात समोहया असंख्यातगुणा, ३ ते थकी कषाय समुद्घात समोहया संख्यातगुणा, ४ ते थकी असमोहया संख्यातगुणा।

तिर्यञ्च पञ्चेन्द्रिय में— १ सब सु थोड़ा तैजस समुद्घात समोहया, २ ते थकी वैक्रिय समुद्घात समोहया असंख्यातगुणा, ३ ते थकी मारणान्तिक समुद्घात समोहया असंख्यात गुणा, ४ ते थकी वेदनीय समुद्घात समोहया असंख्यात गुणा, ५ ते थकी कषाय समुद्घात समोहया संख्यात गुणा, ६ ते थकी असमोहया संख्यात गुणा।

मनुष्य में — १ सब सु थोड़ा आहारक समुद्घात समोहया, २ ते थकी केवली समुद्घात समोहया संख्यात गुणा, ३ ते थकी तैजस समुद्घात समोहया संख्यात गुणा, ४ ते थकी वैक्रिय समुद्घात समोहया संख्यात गुणा, ५ ते थकी मारणान्तिक समुद्घात समोहया असंख्यात गुणा, ६ ते थकी वेदनीय समुद्घात समोहया

असंख्यात गुणा, ७ ते थकी कषाय समुद्घात समोहया संख्यातगुणा, ८ ते थकी असमोहया असंख्यात गुणा।

सेवं भंते! सेवं भंते!!

सूत्र श्री पन्नवणाजी रे पद ३६ वें में ४ कषाय समुद्घात रो थोकड़ो चाले सो कहे छै—

१ नाम द्वार, २ काल द्वार, ३ पावणा द्वार, ४ एक जीव आसरी द्वार, ५ घणा जीव आसरी द्वार, ६ एक जीव माहोमाही (परस्पर) आसरी द्वार, ७ घणा जीव माहोमाही (परस्पर) आसरी द्वार, ८ अल्पाबोध द्वार।

१ नाम द्वार – अहो भगवान्! कषाय समुद्घात रा किता भेद? हे गौतम! कषाय समुद्घात रा ४ भेद– १ क्रोध समुद्घात २ मान समुद्घात, ३ माया समुद्घात, ४ लोभ समुद्घात।

२ – काल द्वार – चार समुद्घात रो काल जघन्य उत्कृष्ट अन्तर्मुहूर्त रो।

३ – पावणा द्वार – समुच्चय जीव २४ दण्डक में समुद्घात पावे ४–४।

४– एक जीव आसरी द्वार–अहो भगवान्! एक एक नारकी रो नेरीयो ४ समुद्घात किती करी? हे गौतम! अतीता अनन्ती, पुरेक्खड़ा कस्सइ अत्थि कस्सइ नत्थि जस्स अत्थि एगोत्तरीया *। इस तरह २३ ही दण्डक कह देणा।

---

* नोट– एक दो तीन यावत् संख्याती असंख्याती अनन्ती।

५– घणा जीव आसरी द्वार– अहो भगवान् ! घणा नारकी रा नेरीया घार समुद्‌घात किती करी ? हे गौतम ! अतीता अनन्ती, पुरेक्खडा अनन्ती । इसी तरह २३ दण्डक और कह देणा ।

६– एक जीव माहोमाही (परस्पर) आसरी द्वार– एक एक नारकी रो नेरीयो नारकीपणे तीन (क्रोध, मान, माया) समुद्‌घात किती करी ? अतीता अनन्ती, पुरेक्खडा कस्सइ अत्थि कस्सइ नत्थि, जस्स अत्थि एगोत्तरीया । इसी तरह तेईस दण्डकपणे कह देणा । एक एक नारका रो नेरीयो नारकीपणे और १० दण्डक औदारिकपणे लोभ समुद्‌घात किती करी ? अतीता अनन्ती, पुरेक्खडा कस्सइ अत्थि कस्सइ नत्थि, जस्स अत्थि एगोत्तरीया । एक एक नारका रो नेरीयो तेरह दण्डक देवतापणे लोभ समुद्‌घात किती करी ? अतीता अनन्ती, पुरेक्खडा कस्सइ अत्थि कस्सइ नत्थि जस्स अत्थि भवनपति वाणव्यन्तरपणे सिय संख्याती सिय असंख्याती सिय अनन्ती, ज्योतिषी वैमानिकपणे सिय असंख्याती सिय अनन्ती ।

एक एक तेईस दण्डक रा जीव २४ ही दण्डकपणे सठिकाणे परठिकाणे तीन (क्रोध, मान, माया) समुद्‌घात किती करी ? अतीता अनन्ती, पुरेक्खडा कस्सइ अत्थि कस्सइ नत्थि जस्स अत्थि एगोत्तरीया नवरं नारकीपणे क्रोध समुद्‌घात पुरेक्खडा सिय संख्याती सिय असंख्याती सिय अनंती कहणी ।

एक एक तेईस दण्डक रा जीव सठिकाणे परठिकाणे लोभ समुद्‌घात किती करी ? १० दण्डक औदारिकपणे अतीता अनन्ती

पुरेक्खडा कस्सइ अत्थि कस्सइ नत्थि जस्स अत्थि एगोत्तरीया । तेरह दण्डक देवतापणे अतीता अनन्ती, पुरेक्खडा कस्सइ अत्थि कस्सइ नत्थि जस्स अत्थि सठिकाणे एगोत्तरीया परठिकाणे आसरी भवनपति वाणव्यन्तरपणे सिय संख्याती सिय असंख्याती सिय अनन्ती, ज्योतिषी वैमानिकपणे सिय असंख्याती सिय अनन्ती ।

७—घणा जीव माहोमाही (परस्पर) आसरी द्वार — घणा २४ दण्डक रा जीव २४ ही दण्डकपणे ४ समुद्घात किती करी ? अतीता अनन्ती, पुरेक्खडा अनन्ती ।

८ — अल्पाबोध द्वार — समुच्चय जीव में — १ सब सु थोडा अकषाय समुद्घात समोहया, २ ते थकी मान समुद्घात समोहया (समुद्घात करणे वाला) अनन्तगुणा, ३ ते थकी क्रोध समुद्घात समोहया विसेसाहिया, ४ ते थकी माया समुद्घात समोहया विसेसाहिया, ५ ते थकी लोभ समुद्घात समोहया विसेसाहिया, ६ ते थकी असमोहया संख्यात गुणा ।

नारकी रा नेरीयों में—१ सब सु थोडा लोभ समुद्घात समोहया, २ ते थकी माया समुद्घात समोहया संख्यातगुणा, ३ ते थकी मान समुद्घात समोहया संख्यातगुणा, ४ ते थकी क्रोध समुद्घात समोहया संख्यातगुणा, ५ ते थकी असमोहया संख्यातगुणा ।

तेरह दण्डक देवता में — १ सब सु थोडा क्रोध समुद्घात समोहया २ ते थकी मान समुद्घात समोहया संख्यातगुणा, ३

ते थकी माया समुद्घात समोहया संख्यातगुणा, ४ ते थकी लोभ समुद्घात समोहया संख्यातगुणा, ५ ते थकी असमोहया संख्यातगुणा।

पांच स्थावर तीन विकलेन्द्रिय और तिर्यञ्च पञ्चेन्द्रिय, इन ६ दण्डक में – १ सब सु थोड़ा मान समुद्घात समोहया, २ ते थकी क्रोध समुद्घात समोहया विसेसाहिया, ३ ते थकी माया समुद्घात समोहया विसेसाहिया, ४ ते थकी लोभ समुद्घात समोहया विसेसाहिया, ५ ते थकी असमोहया संख्यात गुणा।

मनुष्य में – १ सब सु थोड़ा अकषाय समुद्घात समोहया, २ ते थकी मान समुद्घात समोहया असंख्यातगुणा, ३ ते थकी क्रोध समुद्घात समोहया विसेसाहिया, ४ ते थकी माया समुद्घात समोहया विसेसाहिया, ५ ते थकी लोभ समुद्घात समोहया विसेसाहिया, ६ ते थकी असमोहया संख्यातगुणा।

सेव भंते ! सेवं भंते

सूत्र श्री पन्नवणाजी रे पद ३६ वें में छद्मस्थ समुद्घात रो थोकड़ो चाले सो कहे छै —

१ नाम द्वार, २ प्रावण द्वार, ३ काल द्वार।

१– नाम द्वार – अहो भगवान् ! छद्मस्थ समुद्घात कितना प्रकार री ? हे गौतम ! ६ प्रकार री – १ वेदना समुद्घात, २ कषाय समुद्घात, ३ मारणान्तिक समुद्घात, ४ वैक्रिय समुद्घात, ५ तैजस समुद्घात, ६ आहारक समुद्घात।

२– पावण द्वार– नारकी में समुद्घात पावे ४, तेरह दण्डक देवतां में समुद्घात पावे ५, चार स्थावर, तीन विकलेन्द्रिय में समुद्घात पावे ३, वायुकाय में समुद्घात पावे ४, तिर्यञ्च पञ्चेन्द्रिय में समुद्घात पावे ५, मनुष्य में समुद्घात पावे ६।

३ – काल द्वार – ६ ही समुद्घात रो काल जघन्य उत्कृष्ट अन्तर्मुहूर्त रो।

अहो भगवान्! जीव वेदना समुद्घात करीने जो पुद्गल बाहर निकाले वे पुद्गल कितनो क्षेत्र स्पर्शे? हे गौतम! मोटाई चौड़ाई लम्बाई में शरीर प्रमाणे नियमा ६ दिशि रो क्षेत्र स्पर्शे, शेष क्षेत्र नहीं स्पर्शे। अहो भगवान्! इतनो क्षेत्र कितना समय में स्पर्शे? हे गौतम! * एक समय दो समय तीन समय री विग्रह गति सुं इतनो क्षेत्र स्पर्शे। अहो भगवान्! जीव वेदना समुद्घात करीने जो पुद्गल बाहर निकाले उण में कितनो काल लागे? हे गौतम! जघन्य उत्कृष्ट अन्तर्मुहूर्त रो। अहो भगवान् उण पुद्गलांसूं प्राण भूत जीव सत्व ने बाधा पीड़ा किलामना उपजे? हंता गोयमा! उपजे।

---

* थोकड़ा वाले ऐसा कहते हैं—

वेदना समुद्घात करवे वालां १-२-३ समय में क्षेत्र में स्पर्शे शेष क्षेत्र नहीं स्पर्शे अर्थात् नियम समुद्घात रो काल अन्तर्मुहूर्त रो है परन्तु [illegible] १-२-३ समय रो है। वेदना समुद्घात करवे है, बाद में पुद्गल शरीर में अन्तर्मुहूर्त रहवे, बाद में शरीर से छूटे बाकी [illegible] होवे। (ज्ञ[illegible])

१ अहो भगवान् ! वेदनी समुद्घात करवा वाला जीव ने किती किया लागे ? हे गौतम ! सिय तीन किया, सिय चार किया, सिय ५ किया लागे ।

२— अहो भगवान् ! उण पुरुष ने कोई बिच्छू सर्प आदि काट खायो जिण सुं उण पुरुष ने वेदनी समुद्घात हुई तो उण बिच्छू सर्प आदि ने किती किया लागे ? हे गौतम ! सिय तीन किया, सिय चार किया सिय पांच किया लागे।

३— अहो भगवान् ! परस्पर किती किया लागे ? हे गौतम ! किसी मनुष्य ने सर्प बिच्छू आदि काटये सुं सर्प बिच्छू आदि नें ३-४-५ किया लागे और उण मनुष्य रा शरीर सुं वेदनीय समुद्घात रा पुद्गल बाहर निकलये सुं दूसरा जीवों ने परस्पर वेदनादिक होवे सुं उण मनुष्य नें और जीवों ने भी ३-४-५ किया लागे । (तत्त्व केवली गम्य)

इसी तरह २४ दण्डक कह देवा । जिस तरह वेदना समुद्घात कही उसी तरह कषाय समुद्घात कह देवी ।

कई जोड़ वाला ऐसा कहते हैं—

वेदना समुद्घात करवे वाला जीव ने सिय ३ किया, सिय ४ किया, सिय ५ किया लागे । इसरा ४ भांगा—

१— एक जीव ने एक जीव री सिय ३-४-५ किया लागे ।

२— एक जीव ने घणा जीवों री सिय ३-४-५ किया लागे ।

३— घणा जीवों ने एक जीव री सिय ३-४-५ किया लागे ।

४— घणा जीवां ने घणा जीवां री घणी ३-४-५ किया लागे ।

अहो भगवान् ! जीव मारणान्तिक समुद्‌घात करीने जो पुद्‌गल बाहर निकाले व पुद्‌गल कितनो क्षेत्र स्पर्शे ? हे गौतम ! मोटाई चौड़ाई में शरीर प्रमाणे लम्बाई में जघन्य अंगुल रे असंख्यातवें भाग उत्कृष्ट असंख्याता योजन क्षेत्र स्पर्शे, शेष क्षेत्र नहीं स्पर्शे, नियमा एक दिशि रो क्षेत्र स्पर्शे, शेष क्षेत्र नहीं स्पर्शे। कितनां काल में स्पर्श करे? एक समय, दो समय तीन समय अथवा चार समय री विग्रह गति सु स्पर्श करे। मारणान्तिक समुद्‌घात करता में कितो काल लागे ? जघन्य उत्कृष्ट अन्तर्मुहूर्त रो। अहो भगवान् ! जीव मारणान्तिक समुद्‌घात करीने जो पुद्‌गल बाहर निकाले उण पुद्‌गलों सु प्राण भूत जीव सत्व ने बाधा पीड़ा किलामणा उपजे ? हंता गोयमा ! उपजे। बाकी सारा बोल वेदना समुद्‌घात माफक कह देणा।

नारकी रो नेरियो मारणान्तिक समुद्‌घात करीनें जो पुद्‌गल बाहर निकाले वे पुद्‌गल मोटाई चौड़ाई में शरीर प्रमाणे लम्बाई में जघन्य हजार योजन झाझेरा उत्कृष्ट असंख्याता योजन रो क्षेत्र स्पर्शे, शेष क्षेत्र नहीं स्पर्शे, नियमा एक दिशि रो क्षेत्र स्पर्शे, शेष क्षेत्र नहीं स्पर्शे, एक समय, दो समय, तीन समय री विग्रहगति सु स्पर्शे। बाकी सारा बोल समुच्चय जीव माफक कह देणा। एक एक ११ दण्डकरा देवता, तीन विकलेन्द्रिय, तिर्यञ्च पञ्चेन्द्रिय और मनुष्य समुच्चय जीव माफक कह देणा, नवरं एक समय, दो समय, तीन समय री विग्रहगति सु स्पर्शे कहणो, चार समय नहीं कहणा। पांच स्थावर समुच्चय जीव माफक कह देणा। ~ --

अहो भगवान् ! जीव वैक्रिय समुद्घात करीने जो पुद्गल निकाले ते पुद्गल कितनो क्षेत्र स्पर्शे ? हे गौतम ! मोटाई चौड़ाई में शरीर प्रमाणे लम्बाई में जघन्य अंगुल रे असंख्यातवें भाग, उत्कृष्ट संख्याता योजन रो क्षेत्र स्पर्शे, शेष क्षेत्र नहीं स्पर्शे, एक दिशि अथवा विदिशा (कूण) रो क्षेत्र स्पर्शे, शेष क्षेत्र नहीं स्पर्शे । १ समय, २ समय, ३ समय री विग्रहगति सु स्पर्शे, शेष काल नहीं स्पर्शे । वैक्रिय समुद्घात करने में कितनो काल लागे ? जघन्य उत्कृष्ट अन्तर्मुहूर्त रो । अहो भगवान् ! जीव वैक्रिय समुद्घात करीने जो पुद्गल बाहर निकाले उण पुद्गलों सु प्राण भूत जीव सत्व ने बाधा पीड़ा किलामणा उपजे ? हंता गोयमा ! उपजे । बाकी सारा बोल वेदना समुद्घात माफक कह देणा ।

एक एक नारकी रो नेरीयो और तिर्यञ्च पञ्चेन्द्रिय वैक्रिय समुद्घात करीने जो पुद्गल बाहर निकाले इत्यादि सारा बोल समुच्चय जीव री माफक कह देणा नवरं इतनो विशेष लम्बाई जघन्य अंगुल रे संख्यातवें भाग, नियमा एक दिशि कहणी । देवता रा १३ दण्डक और मनुष्य समुच्चय जीव री माफक कह देणा नवरं इतनो विशेष लम्बाई जघन्य अंगुल रे संख्यातवें भाग कहणी । वायुकाय समुच्चय जीव री माफक कह देणी नवरं नियमा एक दिशि कहणी ।

तैजस समुद्घात में समुच्चय जीव १५ दण्डक वैक्रिय समुद्घात री माफक कह देणा । नवरं लम्बाई में जघन्य अंगुल रे असंख्यातवें भाग कहणा और तिर्यञ्च पंचेन्द्रिय में एक दिशि कहणी।

आहारक समुद्घात समुच्चय जीव और मनुष्य वैक्रिय सहर पातवे री माफक कह देणा नवरं लम्बाई में अपना अंगुल रे असंख्यातवें भाग जघन्य और एक दिशि जघन्य।

सेवं भंते। सेवं भंते।

सूत्र श्री पन्नवणाजी रे पद ३६ वें में केवली समुद्घात रो थोकड़ो चाले सो कहे छै —

अहो भगवान्! भावित आत्मा रा अणगार चरम समय प्रथम पुद्गलों री निर्जरा कर वे पुद्गल सर्व लोक ने व्याप्त कर रह्या? हंता गोयमा! सर्व लोक ने व्याप्त कर रह्या। अहो भगवान्! छद्मस्थ मनुष्य उण पुद्गलों रो किंचित् वर्ण करीने वर्ण, गन्ध करीने गन्ध, रस करीने रस, स्पर्श करीने स्पर्श जाणे देखे? हे गौतम! नो इणट्ठे समट्ठे। अहो भगवान्! काई कारण? हे गौतम! यथा दृष्टान्त—यह जम्बूद्वीप सब द्वीप समुद्रों रे बीच में है, सब सुं छोटो द्वीप है, गोलाकार है, यथा (१) तेल में तल्योड़ा पुड़ला रे आकार, (२) रथ रा पैडा (चक्र) रे आकार, (३) कमल री कर्णिका रे आकार, (४) पूनम रे चन्द्रमा रे आकार है *। यह एक लाख योजन रो लम्बो चौड़ो है इण री परिधि ३१६२२७ योजन ३ गाऊ १२८ धनुष,१३॥ अंगुल झाझेरी है। कोई देव

---

* चोथा बाला पांचवी उपमा भी बोलन है—

(१) सोने रे थाल रे आकार।

शक्ति री। थकी देवता हाथ में सुगन्ध रो डब्बो लेईने, डब्बा रो ढकणो उघाड़ी ने तीन् चिमटी बजावे जितने में इण जम्बूद्वीप रे चौतरफ २१ वॉर परिक्रमा देकर आवे, हे गौतम! वे सुगन्ध रा पुद्गल इण जम्बूद्वीप ने स्पर्श्या ? हाँ भगवान्! स्पर्श्या। हे गौतम! छद्मस्थ मनुष्य उण पुद्गलों रो किञ्चित् वर्ण करीने वर्ण गन्ध करीने गन्ध, रस करीने रस, स्पर्श करीने स्पर्श जाणे देखे ? अहो भगवान्! नो इणट्ठे समट्ठे (नहीं जाणे नहीं देखे)। हे गौतम! जब छद्मस्थ मनुष्य इण बादर अठस्पर्शी पुद्गलों ने भी नहीं जाणे नहीं देखे, तो केवली महाराज केवली समुद्घात करीने जिण सूक्ष्म पुद्गलों री निर्जरा करे उण सूक्ष्म चौस्पर्शी पुद्गलों ने छद्मस्थ किण तरह जाणे देखे अर्थात् नहीं जाणे नहीं देखे।

अहो भगवान्! सारा ही केवली महाराज केवली समुद्घात करीने मोक्ष जावे ? हे गौतम! णो इणट्ठे समट्ठे। अहो भगवान्! कोई कारण ? हे गौतम! अनन्ता ही केवली महाराज केवली समुद्घात कर्या बिना ही मोक्ष गया। अहो भगवान्! किसा केवली महाराज केवली समुद्घात करे ? हे गौतम! कोई कोई भावितात्मा रे अणगार रो आयुष्य * ६ महीना बाकी रहवे जद केवलज्ञान उत्पन्न होवे उण में सूं कोई कोई केवली महाराज रे आयुष्य कर्म री स्थिति थोड़ी हुवे, तीन् (वेदनीय, नाम गोत्र) कर्मों री स्थिति

* ६ महीना आयुष्य बाकी रहवे जद/जद पन्नवणा सूत्र रा मूल पाठ में नहीं है किन्तु हस्तलिखित प्रति रा अर्थ में है।

षयी हुवे, उण विषम स्थिति ने आयुष्य कर्म री स्थिति रे बराबर करवा रे वास्ते केवली महाराज केवली समुद्घात करे।

अहो भगवान्! सारा ही केवली महाराज आवर्जीकरण * करे? हंता गोयमा! सारा ही केवली महाराज आवर्जीकरण करे। आवर्जीकरण करयाँ बिना कोई भी केवली महाराज मोक्ष नहीं जावे।

अहो भगवान्! आवर्जीकरण क्रिया समय रो कयो है? हे गौतम! असंख्याता समय रो अन्तर्मुहूर्त प्रमाण आवर्जीकरण कयो है। अहो भगवान्! केवली समुद्घात करतां किता समय लागे? हे गौतम! आठ समय लागे। पहले समय में दण्ड करे, दूजे समय कपाट करे, तीजे समय मन्थान करे, चौथे समय आन्तरा पूरे, पाँचवें समय आन्तरा साहरे, छठे समय मन्थान साहरे, सातवें समय कपाट साहरे, आठवें समय दण्ड साहरी ने शरीरस्थ हो जावे।

अहो भगवान्! केवली महाराज रे किता कर्मों री किती प्रकृतियाँ सत्ता में रहवे? हे गौतम! वेदनीय, नाम, गोत्र, आयुष्य इण चार कर्मों री ८४ प्रकृतियाँ सत्ता में रहवे— नाम कर्म री ८०

---

* आवर्जीकरण किणने कहीजे? अपणी आत्मा ने मोक्ष रे सम्मुख करवो इणने आवर्जीकरण कहीजे। कितनाक आचार्य इणने आवर्जित करण आयोजिकाकरण अथवा आवश्यककरण कहवे है। जैसे कोई कोई केवली महाराज केवली समुद्घात करे और कोई कोई नहीं करे परन्तु आवर्जीकरण तो अवश्य करणो पड़े, आवर्जीकरण करयां बिना मोक्ष गमन हुवे नहीं इण कारण सूं इण रो नाम आवश्यक करण' है। (टीकानुसार)।

-(शुभ नाम कर्म री ४१ और अशुभ नाम कर्म री ३९), वेदनीय कर्म री २— सातावेदनीय और असाता वेदनीय, गोत्र कर्म री २— उच्च गोत्र और नीच गोत्र, आयुष्य कर्म री १, ये ८५ प्रकृतियाँ सत्ता में रहवे।

अहो भगवान्! पहले समय काँई रचना हुवे? हे गौतम! अशुभ नाम कर्म री ३९ प्रकृतियाँ, असातावेदनीय १ और नीचगोत्र १ इण ४१ प्रकृतियाँ री स्थिति रा असंख्याता खण्ड करे, अनुभाग रा अनन्त खण्ड करे, एक खण्ड स्थिति रो और एक खण्ड अनुभाग रो बाकी राखे शेष सब पहले समय खपावे। अहो भगवान्! दूजे समय काँई रचना हुवे? हे गौतम! शुभ नाम कर्म री ४१ प्रकृतियाँ, सातावेदनीय १ और उच्चगोत्र १, इण ४३ प्रकृतियों री स्थिति रा असंख्याता खण्ड करे, अनुभाग रा अनन्त खण्ड करे स्थिति रो खण्ड स्थिति में मिलावे, अनुभाग रो खण्ड अनुभाग में मिलावे, फिर एक खण्ड स्थिति रो, एक खण्ड अनुभाग रो बाकी राखे, शेष सब दूसरे समय में खपावे। अहो भगवान्! तीजे समय काँई रचना हुवे? हे गौतम! स्थिति रे एक खण्ड रा असंख्याता खण्ड करे, अनुभाग रे एक खण्ड रा अनन्त खण्ड करे, एक खण्ड स्थिति रो और एक खण्ड अनुभाग रो बाकी राखे, शेष सब तीजे समय खपावे। इसी तरह चौथो समय और पाँचवो समय कह देणो। अहो भगवान्! छठे समय काँई रचना हुवे? हे गौतम! स्थिति रे एक खण्ड रा असंख्याता खण्ड करे, अनुभाग रे एक खण्ड रा

कि व्यवहारमन जोग प्रवर्तावे ? हे गौतम ! सत्यमन जोग प्रवर्तावे और व्यवहारमन जोग प्रवर्तावे किन्तु असत्यमन जोग और मिश्रमन जोग नहीं प्रवर्तावे । अहो भगवान् ! वचन जोग प्रवर्तावे तो क्या सत्य वचन जोग प्रवर्तावे कि असत्य वचन जोग प्रवर्तावे कि मिश्र वचन जोग प्रवर्तावे कि व्यवहार वचन जोग प्रवर्तावे ? हे गौतम ! सत्य वचन जोग और व्यवहार वचन जोग प्रवर्तावे किन्तु असत्य वचन जोग और मिश्र वचन जोग नहीं प्रवर्तावे । काया रो जोग प्रवर्तावता थका आवे जावे उठे बैठे, पडिहारा पाट पाटला होवे तो पीछा दे आवे ।

अहो भगवान् ! केवली महाराज सजोगी मोक्ष जावे ? हे गौतम ! नो इणट्ठे समट्ठे । अहो भगवान् ! केवली महाराज रे मन रो जोग है, वचन रो जोग है, काय रो जोग है, तो मन रो जोग किसो है ? हे गौतम ! मन रो जोग सन्नी पञ्चेन्द्रिय रे पर्यापते रे जघन्य जोग सु असंख्यात गुणो पतलो है । वचन रो जोग किसो है ? बेइन्द्रिय रे पर्यापते रे जघन्य जोग सु असंख्यात गुणो पतलो है । काय रो जोग किसो है ? सूक्ष्म निगोद रे अपर्यापते रे जघन्य जोग सु असंख्यातगुणो पतलो है । पहले मन रो जोग रोके, फिर वचन रो जोग रोके, पीछे काय रो जोग रोके, श्वासोश्वास रोकीने चौदवे गुणस्थान आवे, अजोगी अवस्था प्राप्त करे, पांच ह्रस्व अक्षर उच्चारण करे जिता असंख्यात समय रा अन्तर्मुहूर्त प्रमाण शैलेशी अवस्था मे प्राप्त होवे । शैलेशी अवस्था मे असंख्याती

गुणश्रेणी द्वारा असंख्यात कर्म स्कन्धों रो क्षय कर, क्षय करीने वेदनीय, आयुष्य, नाम और गोत्र, इण चार कर्मों ने एक साथ खपावे, औदारिक, तैजस, कार्मण शरीर रो त्याग करे, फिर एक समय री अविग्रह गति द्वारा ऊंचा जाकर साकार उपयोग सहित सिद्ध पद ने प्राप्त करे, सिद्धगति में जायने विराजमान हो जावे, जठे जन्म नहीं, जरा नहीं, मरण नहीं, रोग नहीं, शोक नहीं, भय नहीं। अनन्त ज्ञान, अनन्त दर्शन, अनन्त बलवीर्य और अनन्त सुख है।

सेवं भंते ! सेवं भंते !!

पुस्तक मिलने का पता :-
अगरचन्द भैरोदान सेठिया जैन पारमार्थिक संस्था
मरोटी सेठियों का मोहल्ला बीकानेर (राजस्थान)

• राखेचा मुद्रणालय, बीकानेर। •